राहे निजात

शेख अली हसन गुलूम
मुतर्जिम
सै. रज़ा क़दर आबिदी

राहे निजात

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नाम किताब	:	राहे निजात
मुअल्लिफ़	:	शैख़ अली हसन गुलूम
सरपरस्त	:	मौलाना सैय्यद असद रज़ा हुसैनी मुदीर हौज़ा-ए-इल्मिया इमाम हुसैन अ.स.मुज़फ्फरनगर
मुतरजिम	:	मौलाना सै. रज़ा क़दर आबिदी संभली मुदर्रिस हौज़ा-ए-इल्मिया इमाम हुसैन अ.स.मुज़फ्फरनगर
नज़रे सानी	:	हुज्जतुलइस्लाम सै.क़मर गा़जी जै़दी
मुआव्विन	:	हुज्जतुलइस्लाम सै. शादाब हुसैन काज़मी
सन	:	2015
तादाद	:	1000
नाशिर	:	हौज़ा-ए-इल्मिया इमाम हुसैन अ.स.मुज़फ्फरनगर
कम्पोज़िंग	:	सै. रसूल आग़ाज़ जै़दी
कलर डिज़ाइनिंग	:	जै़नबया ग्रुप
मुद्रक	:	इम्प्रेशन्स, मेरठ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिरहीम

मैने अरबी की इस किताब को पढ़ा देखा के एहकामे नमाज़ को बहुत अच्छे तरीक़े से समझाया है ख़ासतौर पर जो इसमें रिवायतों के ज़रिये और जो आयात के अल्फ़ाज़ की बारीकयों को बड़ी खुश उसलूबी से बयान किया है और इसकी तस्वीरों ने तो बात को समझाना और भी आसान बना दिया है लिहाज़ा मुझको मेरे शफ़ीक़ व मेहरबान मुरब्बी हुज्जतुलइस्लाम सैय्यद असद रज़ा हुसैनी साहब ने हुक्म दिया के इसका तरजुमा करें ताकि नौ जवान इससे फ़ायदा उठा सकें।

वस्सलाम.....

सैय्यद रज़ा क़दर आबिदी संभली

फ़ेहरिस्त

★ किताब का मुक़दमा और कलामाते मोअल्लिफ़ 9

1 नमाज़ का फ़लसफ़ा 19

2 अहकामे तहारत 27

3 नमाज़ की कैफ़ियत 37

4 वाजिबात और मुस्तहब्बात 59

5 नमाज़ में ख़लल 69

6 मुसाफ़िर की नमाज़ 85

7 नमाज़े जमाअत 93

8 क़ज़ा नमाज़ 105

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

परवरदिगार मुझे और मेरी जुर्रियत

को नमाज़ क़ायम करने वाला क़रार दे,

ऐ मेरे रब मेरी दुआओं को क़बूल फ़रमा।



नमाज़
मोमिन
की मेराज है।



मेरे वालिदे मरहूम सैय्यद ख़ल्फ़ बेहबहानी रहमतुल्लाह अलैह की वसीयतों मे से एक अहम वसीयत ये थी के उनकी जानिब से एक किताब नमाज़ के उन्वान पर छपवायी जाये और हमारी कौशिश भी यही है कि ये किताब मौज़ू के एतबार से मुमताज़ हो इसलिए हमने आली जनाब शेख़ अली हसन हफ़्ज़ाहुअल्लाह से गुज़ारिश की वो इस काम में हमारी मदद फ़रमायें और खुदा का शुक्र है वो इस काम के लिए तैयार हो गये और बहुत मेहनत के साथ इस काम को बाखूबी अन्जाम दिया हम खुदा से दुआ करते है कि परवर दिगार उन्हे इस ख़िदमत की जज़ा इनायत फ़रमाए और हम तहेदिल से उनके शुक्र गुज़ार है।

फ़रज़न्दाने सैय्यद ख़ल्फ़ बेहबहानी।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

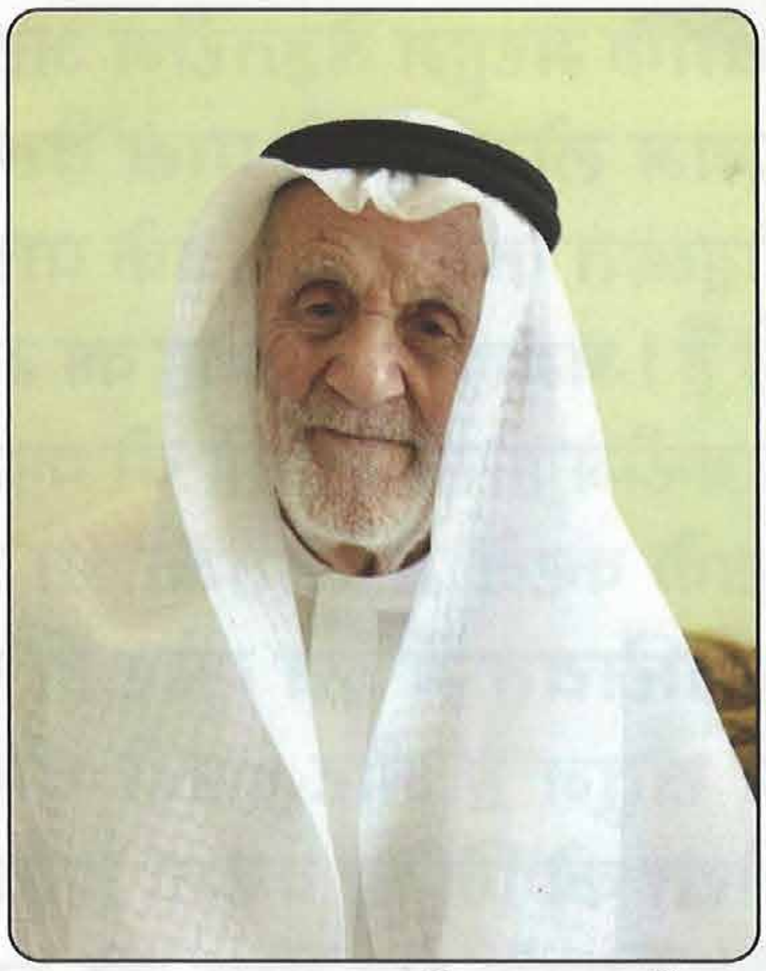

खुदा वन्दे आलम कुरआन-ए-मजीद में इरशाद फ़रमाता है जो लोग ईमान लायें और उन्होंने अमल-ए-सालेह अन्जाम दिये अल्लाह लोगो के दिलो में उनकी मौहब्बत पैदा कर देता है।

तकरीबन 80 आयतें कुरआन-ए-मजीद में ऐसी हैं जिनमें ईमान और अमल-ए-सालेह का ज़िक्र किया गया है। ये ताकीद इसलिए है, क्योंकि अमल-ए-सालेह के बिना ईमान की कोई क़ीमत नही है। ऊपर पेश की गयी आयत में भी यही बयान किया गया है, कि ईमान के साथ अमल-ए-सालेह का होना ज़रूरी है। आयतुल्लाह मक़ारिम शिराज़ी ने फ़रमाया ईमान और अमल-ए-सालेह में एक ख़ास क़िस्म की जाज़बियत है। उन्होनें अपनी किताब तफ़सीरे नमूना में फ़रमाया है कि हमने अकसर देखा है कि जब अल्लाह के नेक बंदे इस दुनिया से चले जाते है तो लोग उन पर गिरिया करते हैं। जबकि वो लोग दुनिया के ऐतबार से किसी मनसब पर फ़ायज़ नही थे। यही बात हमने अपने मरहूम वालिद सैय्यद ख़ल्फ़ बेहबहानी के लिए लोगों के दिलों में पाई। उनका शजरा यह है (सैय्यद ख़ल्फ़ बिन सैय्यद बिन अबदुल्लहा बिन सैय्यद आक़ा बिन सैय्यद अहमद बिन सैय्यद अबदुर रज़ा बिन सैय्यद हाशिम बिन सैय्यद अब्दुल्लाह अल बिलादी अल बेहबहानी बिन सैय्यद अतीकुल हुसैन बिन आयतुल्लाह सैय्यद हुसैन गुरैफ़ी)" इसको हम खुद उनकी हयाते तैय्यबा में महसूस करते थे। उनके बहुत से सिफ़ात थे, जो उनके मिलने वालों पर आशक़ार थे उनके चाहने वालो में से किसी ने बताया जब हम मरहूम से मुलाक़ात करते थे। तो हमको सुकून हासिल होता था और उनके अख़लाक़ और सिफ़ाते तैय्यबा से सिर्फ उनके अहलो अयाल ही नही बल्कि अवामुन्नास भी फ़ैज़याब होते थे खुदा मरहूम पर रहमत नाज़िल करे और बाक़ी रहने वालो की हिफ़ाज़त फ़रमाये बस मरहूम तकरीबन 100 साल तक इस दुनिया में ज़िन्दा रहे और उनकी तमाम उम्र अल्लाह की इताअत और फ़रमाबरदारी में गुज़री।

उनसे मिलने वाले ज़्यादातर लोग उनके बेटों और पौतों की उम्र के होते थे। क्योंकि मरहूम बेहतरीन अख़लाक़ और पाकीज़ा सीरत के मालिक थे इसलिए तमाम लोग उनके पास बैठना पसंद करते थे। वो अपने पास बैठने वालो से मौहब्बत करते थे। उनके पास बैठने वालो ने उनकी बहुत सी खुबियाँ बयान की हैं। अमल-ए-सालेह का मतलब हर वो काम जिसके ज़रिये इन्सान अल्लाह से करीब होता है चाहे वो काम वाजिबात में से हो या मुस्तहब्बात मे से इंसान उसके करने में जितनी भी मुश्किल बर्दाश्त करेगा खुदा वन्दे आलम उसकी शख़सियत में इस क़दर ही जाज़बियत अता फरमायेगा। बेशाक नमाज़ दीन का सतून है और दूसरी चीज़ जो अमल-ए-सालेह में से है वो अहलेबैत की सीरत को ज़िन्दा करना है। वालिदे मरहूम को इन दोनो कामो में यानी नमाज़ और सिरते अहलेबैत को ज़ाहिर करने में एक ख़ास रग़बत थी। जो बाकी अमल-ए-सालेह के मुक़ाबले बहुत ज़्यादा थी, जबकि मरहूम को इन तमाम कामो को अन्जाम देने के लिए काफ़ी मुश्किलो का सामना करना पड़ता था।

उनकी नमाज़

वालिदे मरहूम सिर्फ वाजिब नमाज़ो के ही पाबन्द नही थे बल्कि मुसतहब नमाज़ो को भी पाबंदी के साथ पढ़ते थे उनकी कोई नमाज़ ऐसी नही थी, जिसमें वो तसबीह और तहलील न करते हो वो नमाज़ के वक़्त का इंतज़ार बहुत शौक से करते थे और इत्मीनान से नमाज़ पढ़ते थे वो नमाज़ को कभी भी हल्का नही समझते थे, बल्कि हमेशा उसको सीखने और सिखाने में मशगुल रहते थे। और नमाज़ को अदा करने पर ज़ोर देते थे और बाज़ मुस्तहब्बात को इस तरह पाबंदी के साथ अंजाम देते थे जैसे वो उन पर वाजिब है। वो सफ़र में हो या हजर में मुस्तहब्बात को तर्क नही करते थे अगर मरज़ या नींद की वजह से कोई अमल छूट जाता था, तो वो उस पर अफ़सोस करते थे। वालिदा इबादते इलाहिया में हमारे वालिदे मरहूम की सिफ़ात में शरीक थी मसलन जुमे का दिन उन दोनो के लिए ईद की तरह होता था। गुस्ले जुमा करते और नमाज़े जाफ़रे तय्यार बजालाते फिर दुआएं नुदबा पढ़ते उसके बाद वालिद नमाज़े जुमा के लिये मस्जिद चले जाते और वालिदा नमाज़े ज़ौहर तक मुसल्ले पर बैठी रहती थी।

बहुत सी दुआऐं जो किताब मफ़ातीह उल जिनान में वारिद हुई जैसे के दुआएं कुमैल, ज़ियारते जुमा और जोशन कबीर व सग़ीर, दुआए नुदबा इतनी कसरत से पढ़ते थे कि उन्हें उनके सफ़हात तक हिफ्ज़ थे। उनको कभी भी फ़हरिस्त देखने की ज़रूरत नही पड़ती थी। कभी कभी हममे से किसी एक को ज़ियारते जुमा पढ़ने का हुक़्म देते और अगर हम फ़हरिस्त के तलाश करने में ताख़ीर करते तो हमसे किताब ले लेते और बिना फ़ेहरिस्त देखे ज़ियारत निकाल देते। और अगर पढ़ने में ग़लती करते तो उसकी फ़ौरन इस्लाह करते। वालिद और वालिदा दोनो एक दूसरे को मुस्तहब अमल याद दिलाते रहते थे। और इसी तरह किसी मुस्तहब अमल के तर्क होने पर इस्तिग़फ़ार करते खुसूसन नमाज़े शब के छूट जाने पर। वालिद मरहूम की जानमाज़ में हमेशा ख़ाकेशिफ़ा की सजदगाह और तसबीह, कुरआने करीम, मफ़ातीह उल जिनान, और नमाज़ के वक़्त का नक़्शा मौजूद रहता था वो कागज़ो पर क़ौले मासूम अलैहिस्सलाम तहरीर होते थे उनको ड़ायरी से फ़ाड़कर जानमाज़ मे रख लेते थे ।

इमामे मौहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया–''

हमारे शियों को नमाज़ के वक़्त की पाबंदी से पहचानो। हमारे वालिद इस हदीस के एक मिसदाक़ थे, वो नमाज़ को वक़्त पर पढ़ने के उतने पाबंद थे कि लोग नमाज़ का वक़्त मालूम करने के लिए उनके पास आते थे। जब तक वो जनतरी में नमाज़े सुबह का वक़्त नही देख लेते थे, नही सोते थे। क्योंकि नमाज़े सुबह से एक या डेढ़ घन्टा पहले बेदार होते थे। नमाज़े शब अदा करके दिगर मुस्तहब्बात को अन्जाम देते, यहाँ तक कि नमाज़े सुबह का वक़्त हो जाता। इसलिए वो अक्सर शब में 10 बजे से पहले ही सो जाते और कभी–कभी निस्फ–ए–शब से ही बेदार हो जाते थे। नमाज़े शब में जो 40 मोमिनों के लिए इस्तिग़फ़ार किया जाता है उसके लिए उन्होने दो फ़ेहरिस्त बना रखी थी। हर रोज़ उनमें से एक फ़ेहरिस्त पढ़ते थे इस फ़ेहरिस्त मे उलमा मरहूमीन, दोस्त–ओ–अहबाब और आशना अफ़राद के नाम थे वो नमाज़े शब से फ़ारिग होकर नाफल–ए–सुबह में मशगुल हो जाते और उसे पूरा करने के बाद आज़ाने सुबह कहते और इक़ामत के साथ नमाज़े सुबह पढ़ते थे उसके फ़ौरन बाद तस्बीह हज़रते ज़हरा स.अ. व दूसरी दुआएं पढते

जो अहलेबैत अलैहिस्सलाम से मरवी दुसरी दुआएं पढ़ते थे। उनके बहुत सी दुआए हिफ़्ज़ थी। इसके बाद वो बा आवज़े बुलन्द तिलावते कुरआन-ए-करीम करते थे उनका एक ख़ास लहजा था। उनकी ये आवाज़ हमारे दिलो दिमाग़ को पाको पाकीजा़ बना देती थी। वो इस अमल को इस तरह अन्जाम देते थे जैसे वो हमें अमली तौर पर सिखाना चाहते हों। हमारी वालिदा भी हमको इस आवाज़ की तरफ मुतवज्जेह करती थी यहाँ तक कि हम सब इसके आदी हो गए थे। और इस आवाज़ को सुनने के मुश्ताक़ रहते थे। बाकी वाजिब नमाज़े जमाअत के साथ मस्जिद में अदा करते थे। वो वहाँ पर मोमिनो से मिलकर खुश होते थे। वो मस्जिदे मज़ीदीमे अक्सर जाते थे। वहां पर उलमा के साथ वक़्त गुज़ारते थे मसलन सैय्यद जव्वाद कज़वीनी, सैय्यद ज़ैनुल आबेदीन, सैय्यद अली शुब्बर, सैय्यद सबा। वालिदे मरहूम की (बाज़ार बिन दाइज)में एक दुकान थी जिसमें वो सब्जियाँ बेचा करते थे। सन् 1963 में बिजली और पानी के महकमे में मुलाज़िम होने से पहले वो अमानतदारी में मशहूर थे, इसलिए लोगो के नज़दीक मोतबर थे।

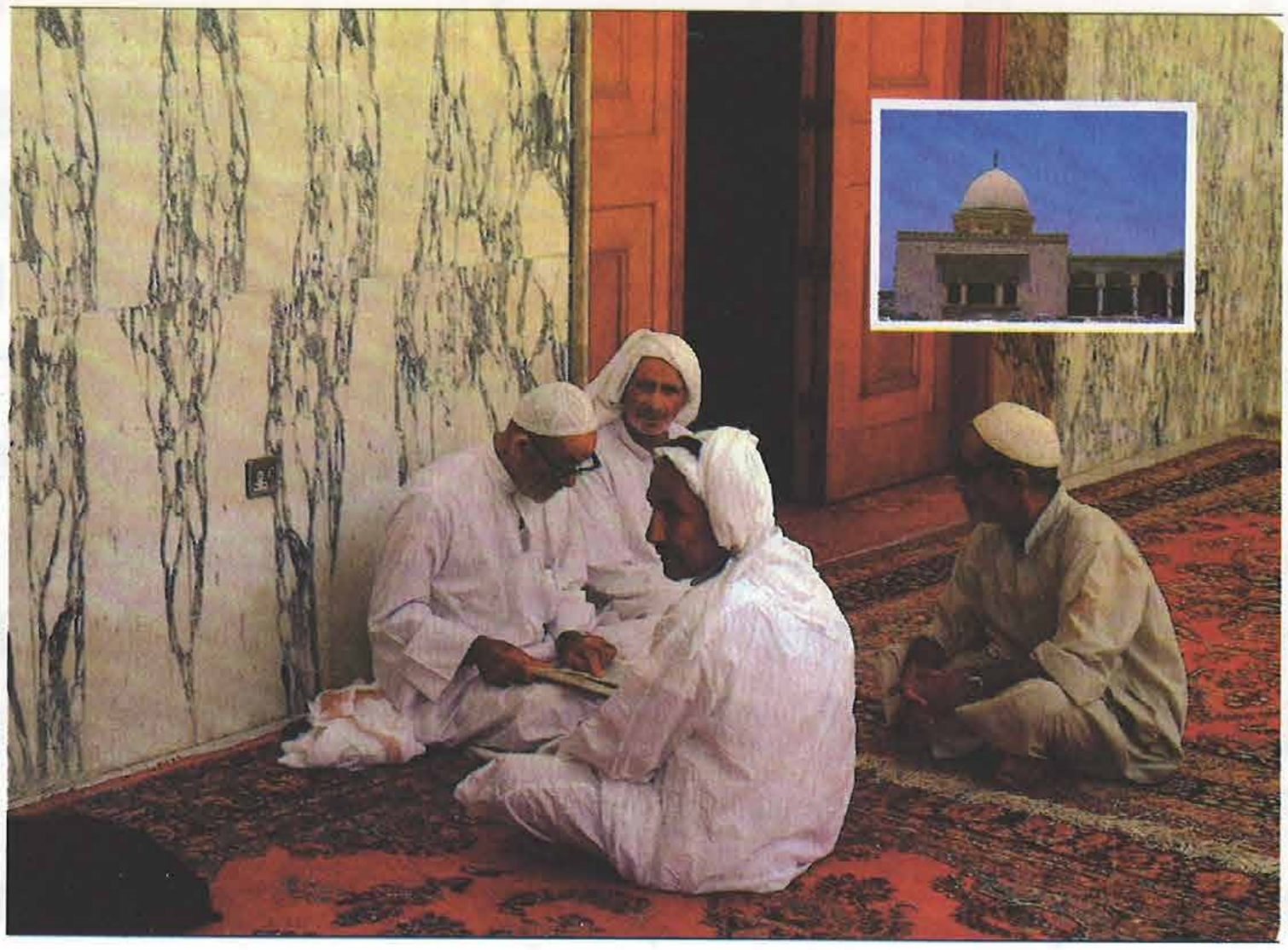

वालिद के बाज़ साथियों ने हमसे बताया कि हम अपने बच्चो को जब सब्जी के लिए बाज़ार भेजते तो ताक़ीद करते कि सैय्यद ख़ल्फ़ से ख़रीदकर लाना और हमारे वालिदे मरहूम जब नमाज़ का वक़्त हो जाता था तो हममें से किसी एक

को दुकान पर छोड़ कर या फिर शटर ड़ालकर नमाज़े जमाअत के लिए मस्जिदे मज़ीदी में तशरीफ़ ले जाते थे। यह बाज़ार बिन दाइज के करीब थी। बल्कि वहां अहकामे फ़िक़्ही और उलूमे अहलेबैत अलैहिस्सलाम की तालीम भी देते थे। उन्होने ज़्यादातर अहक़ाम अपनी ज़ाती मेहनत किताबो को पढ़कर और मुकर्रिरों की तकरीरें सुनकर सीखे थे। जब वो मस्जिद में दाख़िल होते तो अहकामे शरीया और फज़ायले अैहलेबैत पर गुफ्तगु करते थे। उनका ये अमल लोगों को उनकी तरफ मुतवज्जेह करता था वो जहां भी जाते लोग उनके चारों तरफ जमा हो जाते थे।

मरासिमे अहलैबैत अलैहिमुस्सलाम

इमामे अली रिज़ा अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया:

हमारी निशानियों को ज़िन्दा करो। अल्लाह उस पर रहम करे जो हमारी निशानियो को ज़िन्दा करता है जब आपसे सवाल हुआ कि किस तरह आपकी निशानियों को ज़िन्दा करें फ़रमाया हमारे इल्म को सीखो और लोगो को उसकी तालीम दो। इसलिए कि जब वो हमारे बेहतरीन कलाम को सुनेगें तो उसकी पैरवी करेगे। वालिदे मरहूम नबी वा औलादे नबी से शिद्दत से मौहब्बत करते थे। हमें नसीहत करते कि जब आज़ान में शहदाते सालेसा सुनो तो कहो क़द अफ़लाहल मोमेनूना बे विलायतेका या अली ऐ अली लोग आपकी विलायत से कामयाब हो गये। जब हममे से कोई किसी मुल्क के सफ़र से वापस आता तो वो उस मुल्क और वहां के रहने वाले अहलेबैत अ.स. के शियो के बारे मे पूछते और अगर जवाब हा में मिलता तो खुश होते। अपनी दादी जनाबे फ़ातेमा ज़हरा अलैहस्सलाम से उन्हें ख़ास मौहब्बत थी इसलिए उन्होनें अपनी बड़ी बेटी का नाम फ़ातेमा रखा और उस नाम की बार-बार तकरार करते (यानि फ़ातेमा फ़ातेमा)



वफ़ात से तीन साल पहले हाथो में इन्फ़ैक्शन होने की वजह से वो तकरीबन एक महीने चारपाई से ना उठ सके। जब खुदा ने उन्हे शिफ़ा अता कीऔर वह अस्पताल से वापस आए तो उनकी कुव्वते गोयाई ख़त्म हो गई थीं। हम उनकी गुफ्तगु करने में मदद करते और उनके सामने उन चीज़ो को दोहराते जो उनके हिफ्ज़ थी। खुसूसन उन अशआर को जो नबी व अहलैबैत की मौहब्बत में पढ़ा करते थे। वो उनको बड़ी दिक्क़त से सुनते खुसूसन याकूबे नसरानी के अशआर.....

तर्जुमाः- अजीब दरख़्त है, जो जन्नत में उगा और उसके जैसा जन्नत में कोई दरख़्त नही है। जिसकी अस्ल मुस्तफ़ा है और शाख़ फ़ातेमा और उन्ही से मुलहक सैय्यदुल बशर अली अलैहिस्सलाम है और इमामे हसन और हुसैन दोनो उसका फ़ल है और शिया इस दरख़्त के पत्ते है।

तर्जुमाः- ऐ परवर दिगार नबी अलैहिस्सलाम के सदक़े से क़ियामत के दिन मुझे बख़्शाना और मेरे तमाम गुनाहों और ख़ताओं को माफ़ करना। ऐ अज़ीम मैं तुझसे ही तौबा करता हूँ बेहक्के मौलाए काएनात जो नजफ़ के सरदार है। जो उस मुकददस वादी के सैय्यदो सरदार है। मेरी तमाम उम्र गुनाहों में गुज़र गयीं उनके सदके में मेरी तौबा क़बूल फ़रमा। वो और मौहब्बते अहैलेबैत का तमाम मुकामात पर इज़हार करते चाहे घर में हो

या दफ्तर मे मस्जिद मे या हज पर या ज़ियारत। यानि जहां पर वो जाते उलूमे अहलैबैत को नशर करते, उलमा के पास बैठने में अपनी बड़ी सअदत समझते, और सवालो के ज़रिए उनसे फ़ायदा उठाते। वो फ़रमाते के आलिमेदीन को फ़क़ीह होना चाहिए और कभी-कभी सवालो के ज़रिए उनका इख़्तेबार भी लेते। जैसा कि वो एक मरतबा आयतुल्लाह सैय्यद फ़ज़लुल्लाह के पास बैठे हुए थे उन्होनें सैय्यद फ़ज़लुल्लाह से सवाल पूछा और उनसे कहा अगर जानते हो तो सिर्फ हां कहना। सैय्यद ने जवाब दिया। उसके बाद वालिद ने सैय्यद से कहा कि ये सवाल इख़्तेबारी था तो सैय्यद फ़ज़लुल्लाह मुसकुराये। इस तरह मराजेअ और उलमा के साथ उन्होने एक तवील ज़माना गुज़ारा। जिस क़िस्से को वो तकरार के साथ सुनाते वो एक आलिमेदीन और नानबाई का क़िस्सा था। एक अमिलेदीन थे जो रात में नानबाई की दुकान पर जाकर बैठत थे जब तक उसका तंदूर चलता रहता वहां बैठे रहते। एक रोज़ नानबाई ने कहा आप रोज़ यहाँ आते हैं और कभी रोटी भी नही ख़रीदते। आलिमेदीन ने जवाब दिया मैं इसलिए आता हूँ ताकि आपको तंदूर की रोशनी में मुतालआ कर सकूं। इस क़िस्से को वो इल्म के बारे में बाते करते तो बयान करते। जैसे के हमने ऊपर बयान किया कि मरहूम ने अपनी ज़ाती मेहनत से यानी किताबो के पढ़कर और मजालिसे इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम में शिरकत करके अहकामेदीन को सीखा था। वो अक्सर उन किताबों को पढ़ा करते जिनमें फ़ज़ाइले अहलैबैत अ.स. होते। खुसूसन उन किताबों का जिनमें अमीरूल मोअमेनीन अलैहिस्सलाम की शुजाअत को बयान किया गया हो। जिन क़सीदों में इमामे अली अलैहिस्सलाम की शुजाअत का ज़िक्र हो उनको गुनगुनाते रहते। उनकी यही मौहब्बत सबब बनी कि उन्होंनें एक किताब इमामे अली अलैहिस्सलाम की शुजाअत पर तहरीर की और इसका नाम (ला फता इल्ला अली) रखा। यह दो मरतबा कुवैत में और तीसरी बार बैरूत में छपी। मजालिसे इमामे हुसैन अलैहिस्सलाम के बहुत शौकीन थे। मोहर्रम के दिनो में बहुत सी मजालिस में शिरकत फ़रमाते और इमाम बरगाह अलखज़ अलिया जहां पर शेख अहमद वायली रहमतुल्लाह खिताब फ़रमाते थे में ज़रूर शिरकत करते थे।

और दीगर इमाम बरगाहे जैसे अल अब्बासिया और इमाम बारगाहे अल अमीर में भी शिरकत फ़रमाते थे वफ़ात से तीन साल पहले तक उनका यही सिलसिला जारी रहा, लेकिन जब ज्यादा कमज़ोर हो गए तो सिर्फ एक मजालिस मे ही शिरकत करते, और हमेशा दीनी अहकाम और फज़ाइले अहैलबैत पर बहस करते। हमे भी इसकी तरफ रग़बत दिलाते। यहां तक कि हम इसके आदी हो गए। शबेजुमा में जब हमारा पूरा खानदान जमा होता तो अहलैबैत अलैहिस्सलाम के ज़िक्र की इबतेदा करते और कहते कि उलमा से बात करते वक़्त ग़ज़बनाक नही होना चाहिए। जब वो बिजली के महकमें में मुलाज़िम थे तो एक शब खिलाफ़े आदत वक़्त से पहले घर वापस आये। और फ़ौरन वुज़ू की और कुरआन खोल कर कूछ तलाश करने लगे जब हमने इसका सबब पूछा तो फ़रमाया कि आज एक दोस्त से बहस हो गई। वो कह रहा था कि कुरआन में लफ़्ज़े हिमार (गधा) नही आया। मैने दावा किया कि लफ़्ज़े हिमार कुरआन में मौजूद है। लेकिन किस सूरे में है ये ज़हन में मौजूद नही था,ताकि उसके लिए दलील पेश कर सके। खुसूसन फ़जाइले अहलैबैत के मुतल्लिक़ वो हर बात पर दलील पेश करते और मुख़ातब से भी दलील तलब करते। इसलिए उनका अपने दोस्तो में एक ख़ास मुक़ाम था।

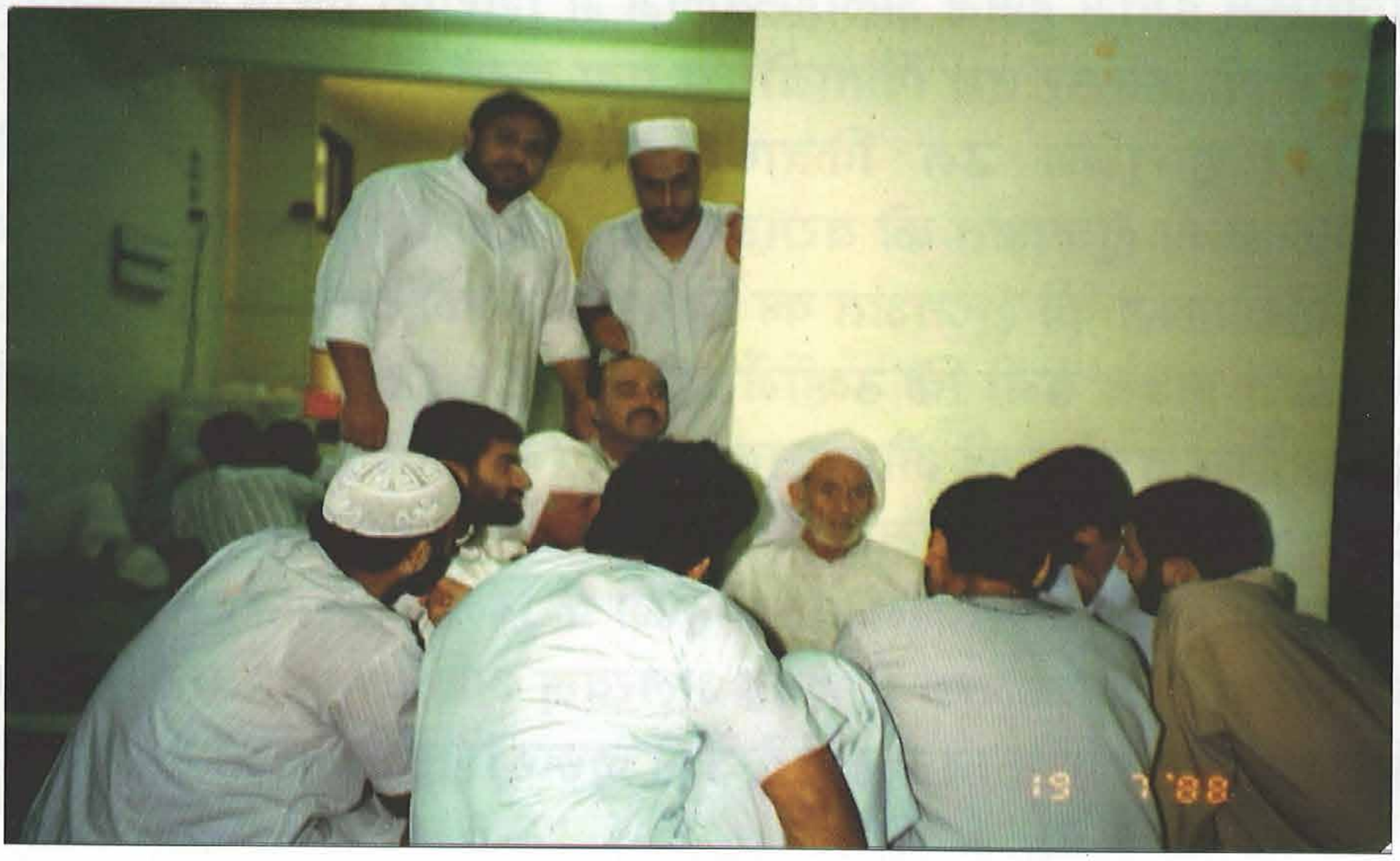

खुसूसन ऐसी बहसें मस्जिदे मज़ीदी और हज के काफ़िलो में काफ़िल-ए-तौहीद (अलहाज काज़िम अब्दुल हुसैन) और काफ़िले ईमान (अलहाज असअद खरीबत) में होती जिसमें वो अहकामें दीनिया और फ़जाइले अहलैबैत बयान फ़रमाते थे।

उनका सब्र

वालिदे मरहूम अपनी जिदंगी में कई बार मुसीबतो में मुबतला हुए। लेकिन उन्होंने हर हाल में अल्लाह का शुक्र अदा किया और सब्रो ताहम्मुल का मुज़ाहेरा किया। सन् 1962 में वो मरीज़ हो गए और तक़रीबन 6 माह तक बिस्तर पर पड़े रहे। इलाज के लिए तेहरान पहुंचे जहां पर उनके मेदे का आपरेशन हुआ। उनका एक तिहाई मेदा काट दिया गया। इस इलाज में उनकी सब्ज़ी की दुकान, जो उनके रिज़्क का तन्हा ज़रिया थी वो भी बिक गई। लेकिन जब अल्लाह के करम से मरज़ दूर हो गया तो बिजली और पानी के महक़मे में मुलाज़िम हो गए। सन् 1968 में उनके बड़े बेटे सैय्यद ईसा का इन्तेक़ाल हो गया। जिसकी उम्र 20 साल से ज़्यादा नही थी इस हादसे को अभी 40 दिन भी नही गुज़रे थे कि आपका दाहिना हाथ नजफे अशरफ़ के रास्ते में टूट गया। 3 माह तक हड्ड़ी के अस्पताल में रहे सन् 1999 में वालिदा का इन्तेक़ाल हो गया। सन् 2011 में आपकी बड़ी बेटी इस दुनिया से रूख़सत हो गई। अपनी ज़िन्दगी के आख़री दिनों में उन्होने ईरान और शाम की ज़ियारतो के लिए बहुत से सफ़र किये। लेकिन कुछ सियासी वजहों से इराक़ ना जा सके ।एक तवील मुद्दत के बाद जब उन्हे नजफ़े अशरफ़ की ज़ियारत नसीब हुई, तो उन्होंने वादियुस्सलाम में अपनी क़ब्र की जगह जवारे अमीरूल मोमेनीन अ.स. मे अपने फ़रज़न्द सैय्यद ईसा के नज़दीक मौय्यन की। खुदा वन्दे आलम उन पर अपनी रहमत नाज़िल करे और उन्हे जवारे आइम्मा में जगह इनायत फ़रमाये। और हमे भी मुहब्बते अहलैबैत पर बाक़ी रहने की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाये ।

फ़रज़न्दाने सैय्यद ख़ल्फ़ बेहबानी

मौअल्लिफ़ की बात

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तमाम तरीफ़े उस खुदा के लिए हैं जिसकी मदाह तक कोई मदाह करने वाला नही पहुॅच सकता और न कोई शुमार करने वाला उसकी नेमतो को शुमार कर सकता है। न ही कोई मेहनत करने वाला उसके हक़ को अदा कर सकता है। और हमारा दरूद व सलाम हो सैय्यदुल अमबिया व खातेमुन नबुव्वह हज़रते मुहम्मद मुस्तफा सलल्लाहु अलैहे वा आलेही वसल्लम पर और उनकी पाको पाकीज़ा आल पर। इसमें कोई शक नही की दीने इस्लाम में नमाज़ के मौजू पर बहुत सी किताबे लीखी गई है। चाहे वाहे अहकामें शारिया से मुताल्लिक हो चाहे वुजू और तय्यम्मुम वा ताहरतो इस्तिक़बाल किबला पर या उन आदाब पर जिनसे नमाज़े को ज़ीनत दी जाती है। लेकिन ये किताब उन तमाम किताबो से जुदा है। इसका तरीक़ा-ए-बयान अलफ़ाज़ और अंदाज़ सब कुछ अलग है। इसलिए इस किताब को तफ़सीर व प्रोग्रामिंग के साथ तैयार किया गया है। ताकि छोटों और बडों को इसका फ़ायदा हो। खुसूसन इस किताब में वुजू गुस्ल, तय्यम्मुम और नमाज़ के अहकाम को बयान किया गया है। इस किताब से हमारा मक़सद उन तमाम अहकाम को बयान करना नही है जो मराज-ए-कराम की तौज़िहुल मसाईल में माजूद है। बल्कि उन मुख़्तसर और अहम मसाइल को बयान करना है जिन पर अक्सर उलमा मुतफ़िक़ हैं। और उन मसाइल से परहेज़ किया गया है जिनमें उलमा में इख़्तेलाफ़ पाया जाता है। लेकिन सिर्फ फ़िक़्ही अहकामे पर ही इकतेफ़ा नही किया गया है। बल्कि इबादत के फ़लसफ़े और आदाब को भी इशारों में बयान किया गया है। इनसे मुत्तालिक हदीस और रिवायात को भी बयान किया गया है।

हम परवर दिग़ार से दुआ करते है कि ये किताब मरहूम सैय्यद ख़ल्फ़ बेहबहानी की नजात का ज़रिया क़रार पाए। जिसकी उन्होनें अपनी वफ़ात से पहले वसीयत की थी। हम परवर दिगार से ये भी दुआ करते है कि वो हम सबकी हिदायत फ़रमाये और हमे नमाज़ का पाबन्द बनाये। वो नमाज़ जो दीन का सूतुन है। जो मुस्लमानो के कुलूब में नूर की तरह है। जो नेमतों के नाज़िल होने का सबब बनती है। दुनिया और आख़ेरत में कामयाबी का वसीला है। इसलिए हमने इस किताब का नाम मेरी खुश क़िस्मती का रास्ता रखा है। और आख़िर में हम शुक्र गुज़ार है, अपने अज़ीज भाई सैय्यद मोहसिन, सैय्यद शुब्बर और सैय्यद हसन मुसवी के जिन्होनें तसावीर बनाने में हमारी मदद की। खुदा वन्दे आलम मरहूम सैय्यद ख़ल्फ़ बेहबहानी पर रहमते वासेआ नाज़िल फ़रमाये और उनके बेटों को इस अमले खैर की जजा़ इनायत फ़रमाये।

(शेख अली हसन गुलूम अली-कुवैत)
17 रबीउल अव्वल 1435 हिजरी
व अल हमदोलिल्लाहि रब्बिल आलामीन



नमाज़ का फ़लसफ़ा

नमाज़ क्या है ?

1 कुरआन- बेशक नमाज़ तमाम बुराईयों से दूर रखती है, क्योंकि अल्लाह का ज़िक्र सबसे बड़ा है, और अल्लाह जानता है जो तुम करते हो।

2 हज़रत नबी-ए-अकरम स.अ.- नमाज़ की मिसाल उस नहर जैसी है जो इंसान के दरवाज़े पर हो और पाक़ीज़गी के लिए पांच मरतबा गोता लगाता हो और गौता ना लगाये तो हालते कसाफ़त पर बाक़ी रहेगा।

3 हज़रत इमामे अली अ.स.- अल्लाह ने ईमान को वाजिब क़रार दिया ताकि ईमान लोगो को शिर्क से दूर रखे और नमाज़ को वाजिब क़रार दिया ताकि नमाज़ लोगो को तकब्बुर से दूर रखे।

4 हज़रत इमामे सादीक़ अ.स.- रोजे क़ियामत सबसे पहले लोगो से नमाज़ का सवाल होगा अगर नमाज़ क़बूल है तो बाक़ी तमाम अमाल कूबुल होंगे और अगर नमाज़ रद्द हो गयी तो तमाम अमाल रद्द हो जायेंगे।

नमाज़ के सही होने की कुछ शर्ते हैं और वो शर्ते कुबूलियते नमाज़ के लिए क़रार दी गई हैं और उनको अंजाम देना बहुत से गुनाहो से दुरी का सबब बनता है।

हज़रत नबी-ए-अकरम स.अ.: जिसने शराब पी उसकी नमाज़ चालीस रोज़ तक कुबूल नही होगी और अगर वह मर गया तो जहन्नम में जायेगा।

हज़रत नबी-ए-अकरम स.अ.: जो लुक़माये हराम खाते है उनकी नमाज़ चालीस शब तक कुबूल नही होगी।

हज़रत इमामे बाक़िर अ.स.: खुदा वन्दे आलम ने ज़कात को नमाज़ के साथ रखा और फ़रमायां नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो। जो ज़कात न दे तो गोया ऐसा है के उसने नमाज़ ही नही पढ़ी।

नमाज़ क्यों पढ़ते हैं?



हमने कुछ नमाज़ियों को देखा है के वे ऐसे गुनाहों के मुरतक़िब होते है कि बेनमाज़ी भी उन गुनाहो के मुरतक़िब नही होते तो उनको नमाज़ ने गुनाहों से क्यों नही रोका?

जवाबः- इस सवाल की बुनियाद यह है कि नमाज़ ऐसी दवा का घूंट है जो दर्देसर के लिए मुफ़ीद है। बस अगर उस घूंट को पी लिया जाये तो सिर के दर्द से नजात मिल जायेगी। लिहाज़ा नमाज़ इस तरह है कि अगर उसको पढ़ा जाये तो गुनाहो से निजात मिल जायेगी। हालाकि यह तसव्वुर ग़लत है । इसलिए कि दवा इन्सान के जिस्म को और नमाज़ रूह को ठीक करती है। और यह जब होगा के इन्सान गुनाहो से बचने का इरादा और कोशिश करे।

नमाज़ ना इन्सान को मुक़ैय्यद करती है और न ही गुनाहों को छोड़ने पर मजबूर करती है। वरना फिर सवाब का हक़दार कैसा बल्कि नमाज़ इंसान के नफ़्स को इस तरह तैयार कर देती है कि वह गुनाहो को छोड़ने की सलाहियत पैदा कर लेता है। इसलिए कुरआन की आयत में रोकने (तन्हा)का लफ़्ज आया है,(तमना) मना का लफ़्ज नही आया।



पस नमाज़ ऐसी इबादत है कि जो इंसान मे गुनाहो से बचने की सलाहियत पैदा कर देती है।

कौन सी हक़ीक़ी नमाज़ है?

हज़रत नबी-ए-अकरम अ.स.-ऐ अबुज़र दो रकअत नमाज़ गौरो फ़िक्र के साथ, उस तमाम रात की इबादत से बेहतर है जो बे तवज्जोही से अदा की जाये।

हज़रत नबी-ए-अकरम स.अ.- शैतान उस मोमिन से ख़ौफ ज़दा रहता है, जो पाचों वक़्त की नमाज़ को अव्वले वक़्त पढ़ता है। पस, अगर वह अव्वले वक़्त मे नमाज़ न पढ़ें तो शैतान उस पर मुसल्लत हो जाता है।

हज़रत इमामे सादीक अ.स.- नमाज़ को अव्वले वक़्त यह सोचकर पढ़ो कि गोया यह आख़िरी नमाज़ है। और नमाज़ में सजदगाह की तरफ देखो क्योंकि तुम जब यह जान लोगे कि तुम्हारे दोनो तरफ़ कौन तो तुम नमाज़ को अच्छी तरह पढ़ोगे और यह जान लो कि तुम उसके सामने हो, कि तुम उसको नही देख, रहे मगर वो तुमको देख रहा है।

नमाज़ को छोड़ना

इंसान को पैदा किया गया ताकि अपनी आख़रत की ज़िन्दगी में कमाल और खुदा की रिज़ा हासिल कर ले। और यह अल्लाह से राबता के किये बग़ैर मुमकिन नही है और अल्लाह से राबते का बेहतरीन ज़रिया नमाज़ है। नमाज़ उस वक़्त सही साबित होगी जब गौर व फ़िक्र के साथ अदा की जाये ताके मक़सदे नमाज़ हासिल हो सके। नमाज़ को छोड़ने के ख़तरनाक आसार इंसान की ज़िन्दगी में ज़ाहिर होते है जो अल्लाह से दूरी और आज़ाबे आख़ेरत का सबब बन जाते है।



हज़रत नबी-ए-अकरम स.अ.: नमाज़े फ़रीज़ा को अमदन तर्क करने वाले मुस्लिम और क़ाफ़िर में कोई फ़र्क नही है।

हज़रत नबी-ए-अकरम स.अ. : हर चीज़ की एक शक्लो सूरत होती है और तुम्हारे दीन की शक्लो सूरत नमाज़ है बस अपने दीन की शक्ल ख़राब न करो।

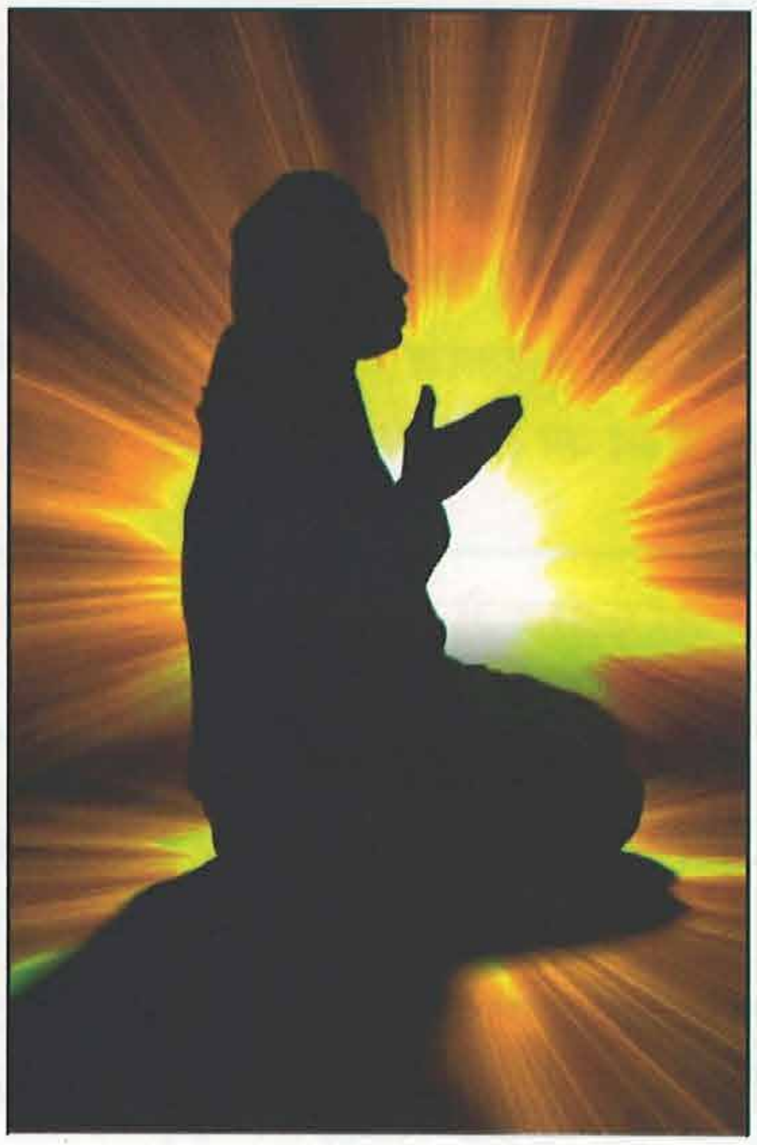

हज़रत इमामे बाक़िर अ.स.: हरगिज़ अपनी नमाज़ को कज़ा मत करो, क्योंकि वक़्ते रेहलत नबी अकरम स.अ. ने फ़रमाया कि जो नमाज़ को हल्का समझे वो मुझसे नही है।

हज़रत इमामे काज़ीम अ.स.: मेरे वालिदे माजिद ने वक़्ते शाहदत यह फ़रमाया कि नमाज़ को हल्का समझने वाले को हमारी शफ़ाअत नसीब नही होगी।

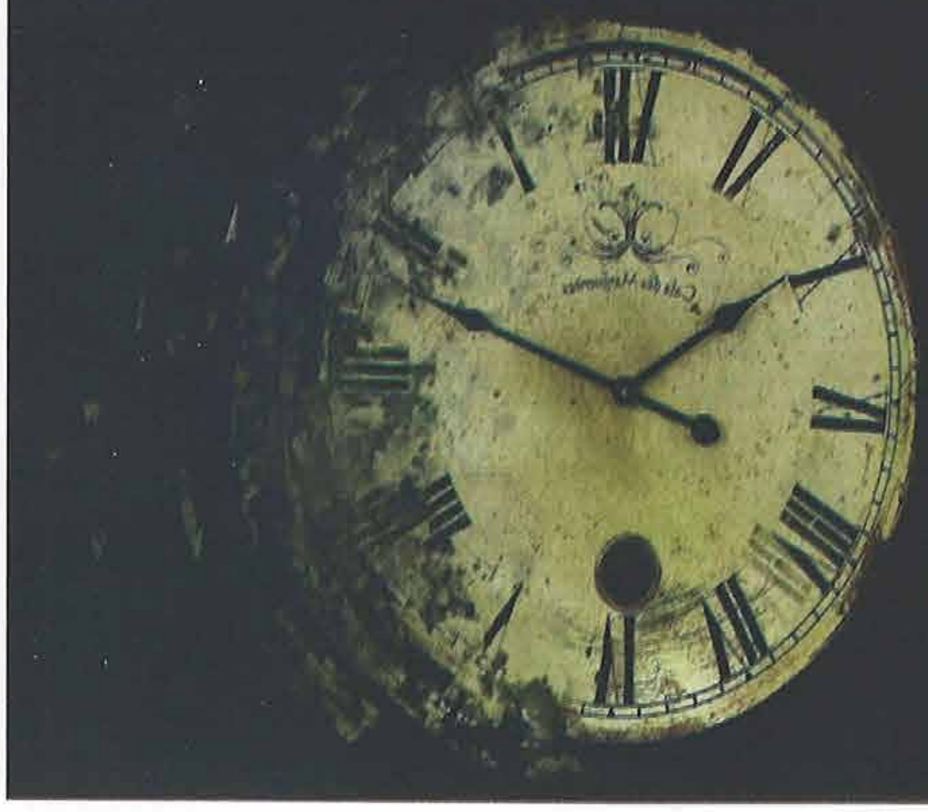

हज़रत इमामे सादिक़ अ.स.: जब बन्दा नमाज़ को उसके वक़्त पर अदा करता है और उसकी हिफ़ाज़त करता है तो एक नूर बुलंद होता है और कहता है कि तुने मुझे महफ़ूज़ रखा है, अल्लाह तुझे महफ़ूज़ रखे। और जब नमाज़ को उसके वक़्त पर अदा नही करता और उसको भूल जाता है तो एक सियाही बुलन्द होती है और कहती है तुने मुझें बर्बाद किया, खुदा तुझे बर्बाद करे।

हज़रत इमामे अली अ.स.: जब बंदा नमाज़ को अदा करने के लिये खड़ा होता है तो शैतान आता है और नमाज़ी पर अल्लाह की रहमतों और करामतो का नुज़ूल देखता है तो वह उससे हसद करता है और ड़रता है।

नमाज़ में सुस्ती

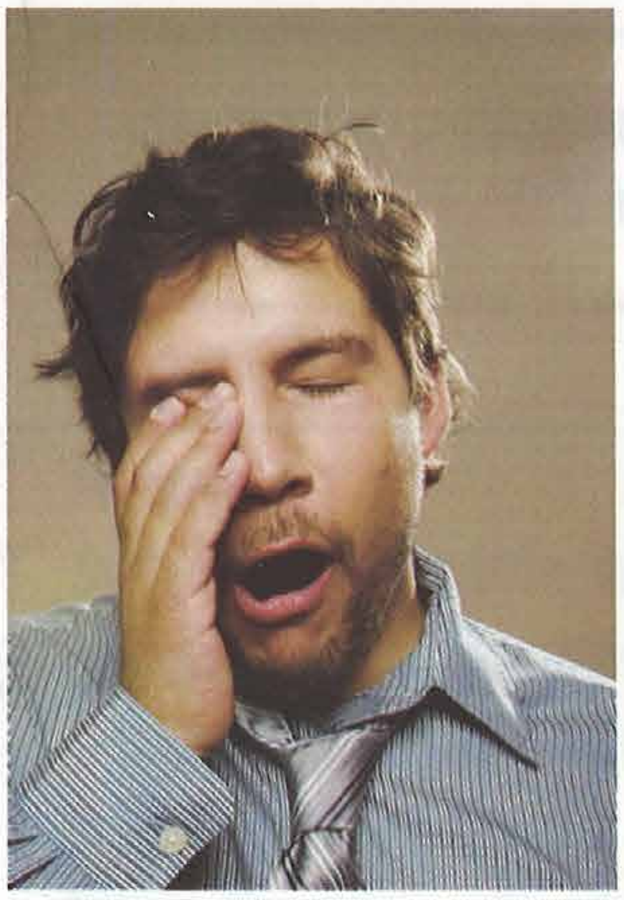

सुस्ती की नमाज़ वह होती है जिसमें यादे इलाही और गरम जोशी शामिल न हो। यह सुस्ती कभी तो नफ़्सानी होती है और कभी नफ़्स और जिस्म के हमाहग न होने की वजह से होती है। मगर हमेशा की सुस्ती ख़तरनाक होती है।

इंसान की सुस्ती जौहरे नमाज़ को ख़त्म कर देती है। और नाम की नमाज़ रह जाती है। ऐसा सुस्त नमाज़ी इस आयत का मिसदाक़ बन जाता है वह सुस्ती के साथ नमाज़ के लिए खडे होते है तो लोगो को देखते है और ज़िक्रे इलाही कम करते है।

सुस्ती से पुर निशात नमाज़ की तरफ़

हक़ीकते नमाज़ और उसकी दायमी ज़रूरत और ज़िम्मेदारी को समझे के नमाज़ मेरी मसलेहत के लिए है न की अल्लाह की मसलेहत के लिए ऐसी हालत में आप अल्लाह को नमाज़ में मददगार पायेगें।

नमाज़ पढ़ने का तरीका बदलें के हालाते नमाज़ में यादे इलाही के सिवा कोई और ज़िक्र ना हो और यह ख़्याल रहे कि अल्लाह देख रहा है और मलायका आपकी दुआ पर आमीन कह रहे हैं और आपके लिये तलबे मग़फ़रत कर रहे हैं।



हज़रत इमामे बाक़िर अ.स.: एक मरतबा रसूले अकरम स.अ. मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमायें के एक शख़्स आया और नमाज़ पढ़ने लगा मगर उसने रूकू और सजदों को सही अंजाम नहीं दिया। रसूले इस्लाम ने फ़रमाया के यह तो कव्वे की तरह ठोंगे मार रहा है अगर ये ऐसी ही नमाज़ पढ़ते हुए मरा तो मेरे दीन पर नहीं मरेगा।

हज़रत इमामे सादिक़ अ.स.-खुदा की क़सम कोई पचास साल उम्र पाये और उसकी एक भी नमाज़ कुबूल न हो तो इससे बदतर और क्या हो सकता है ? खुदा की क़सम तुम अपने आस-पास वालों को पहचानो के जो किसी को दिखाने के लिए या हल्का समझकर नमाज़ पढ़ते हैं, उसकी नमाज़ कुबूल नही होगी। बेशक अल्लाह जब बेहतरीन नमाज़ को पसंद करता है तो हल्की नमाज़ को कैसे पसंद कर सकता है ?

हज़रत नबी-ए-अकरम स.अः जब कोई नमाज़ पढता है तो उसका दरजा-ए-नमाज़ नही लिखा जाता बल्कि वह लिखा जाता है जो उसकी अक़्ल के मुताबिक हो।

एहतमामे नमाज़ का तरीकाः जब इन्साने नमाज़ को अपनी अनानियत से अल्लाह की तरफ़ और दुनिया को आख़ेरत की तरफ तब्दील नही कर लेता, उस वक़्त तक अदायगी-ए-नमाज़ में खुशू हासिल नही हो सकता।



नमाज़ में खुशू किस तरह हासिल होता है?

तमरकुज़े ज़ेहनः अमाले नमाज़ और उसके आज़कार की तरफ़ ज़हन को मरकूज़ करे उसमें गौर व फ़िक्र करें तो अल्लाह उसके लिए मारेफ़त के दरवाज़े खोल देता है।

हुज़ूरे कलबीः जब इंसान का ज़ेहन दुनियावी कामों में उलझा हुआ होता है तो वह ज़िक्रे इलाही के मायने की तरफ़ मुतवज्जेह नही होता लिहाज़ा हालते नमाज़ में कल्ब को दुनियावी उमूर से ख़ाली रखना बारगाहे खुदा में हुज़ूरे कलबी का सुबूत है।

खुदा को हाज़िर व नाज़िर समझेः इंसान नमाज़ में यह ख़्याल रखे के वह अल्लाह से हम कलाम है और अल्लाह उसके सामने मौजूद है और उसे देख रहा है ओर उसके कलाम को सुन रहा है इस तरह नमाज़ को एक ख़ास सिफ़त व अज़मत हासिल हो जायेगी।

नमाज़ सही होने के असबाबः

- नमाज़ से पहले आऊज़ो बिल्लाह पढ़ना।
- नमाज़ के लिए मुनासिब जगह चुनना।
- नमाज़ से पहले गौर करे कि किसकी बारगाह में जा रहा है।

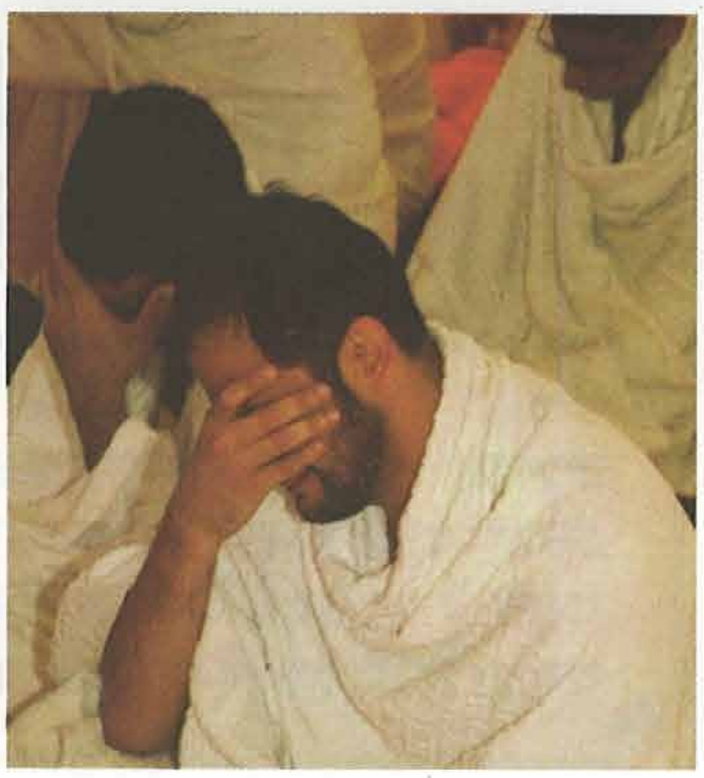

नमाज़ और इंसानी तवाजुन

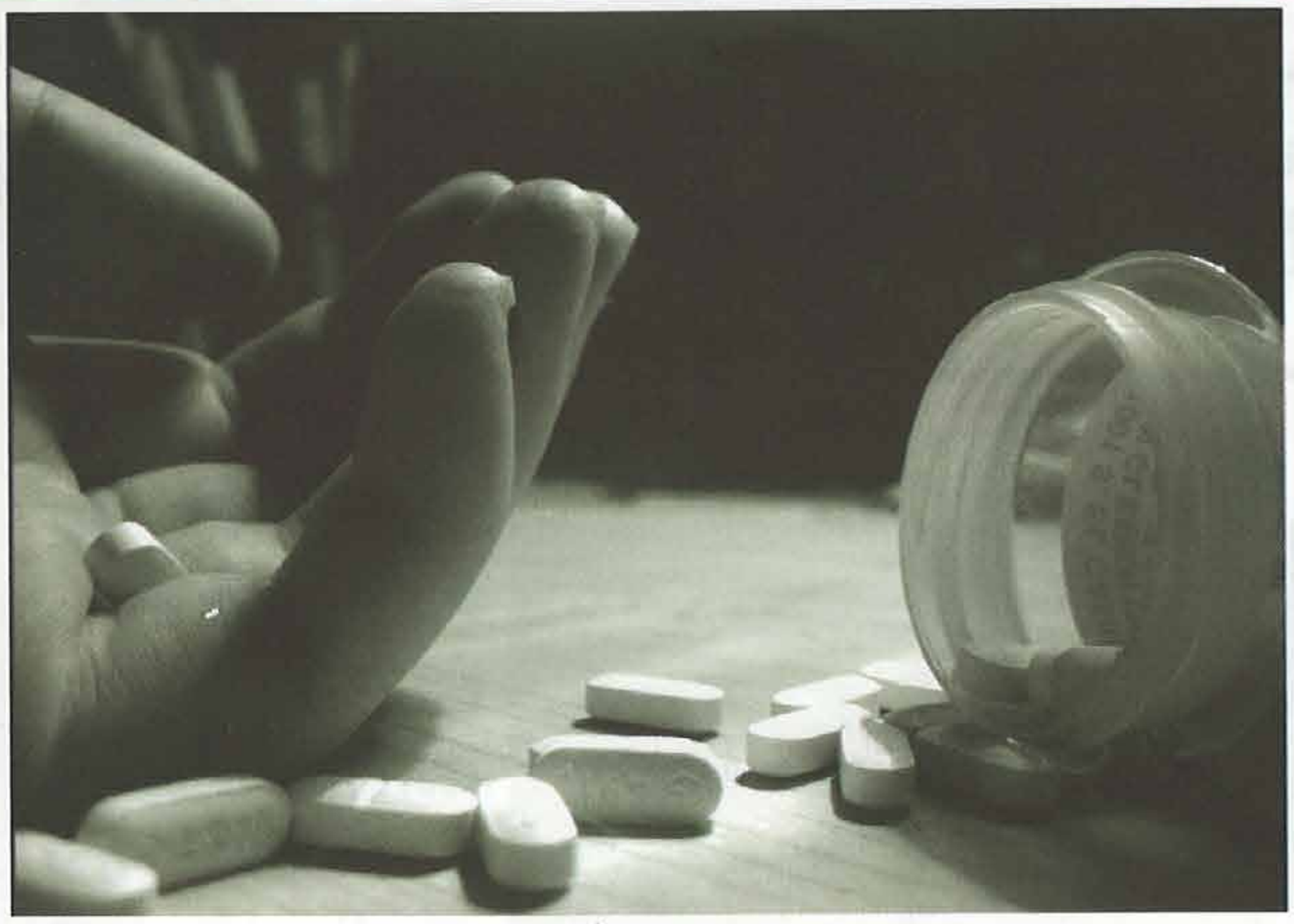

बेशक! इंसान ज़ईफ़ पैदा किया गया है। जब कोई मुश्किल पेश आती है तो इज़हार करता है और जब उसको नेमत मिलती है तो नाशुक्र हो जाता है। उन नमाज़ियो के जो हमेशा नमाज़ अदा करते है और वे लोग जो अपने माल से फ़क़ीर और मिसकीन के हक़ को अदा करते है।

तगैय्युरे इन्सानी- इन्सान साबित क़दम ना रहे और अपनी तब्दीली से बदल जाये इससे यह मुराद नहीं है के खुशी से नाराज़गी, गम से खुशी, खामौशी से कलाम की तरफ़ बदल जाये क्योंकि यह तो फ़ितरत-ए-इन्सानी है, बल्कि हमारी मुराद यह है के दुनियावी हालात के बदलने के बाद दीन-ए-इस्लाम पर बाक़ी रहे जैसेः

अमानत की अहमियत को जानते हुए खयानत इख्तेयार करना

इंसान का मर्ज सेहत, फ़क्रो और सर्वतमन्दी की वजह से तब्दील होना

इंसान का बुगज़ व मौहब्बत की वजह से तब्दील होना।

हमारी ज़िंदगी में जो हादसे पेश आते हैं। उनका असर हमारे नफ़्स पर पड़ता है। कभी कभी उनका असर इतना बढ़ जाता है के हम अपना तवाजुन खो देते है। बराईया हमें घेर लेती है और हम इन बराइयों की तरफ तवज्जोह भी नही दे पाते और हमारी ज़िदगी की खुशिया ख़त्म हो जाती है। लेकिन नमाज़ एक ऐसी चीज़ है। जो हमारे दिल से बुराइयों को ख़त्म कर देती है। और हमे सीधे रास्ते पर लगा देती है। और हमारी ज़िदगी की खुशियो को पलटा देती है।

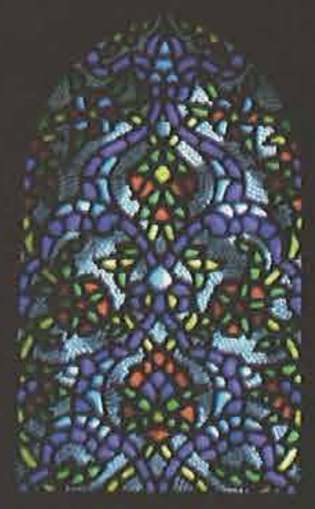



इजतेमाई सिफ़ात-ए-नमाज़

यक़ीनन वह मोमेनीन कामयाब होगे जो नमाज़ में खुशू रखते है, बुराईयों से परहेज़ करते है और ज़कात देते है।

कुरआन ने मोमेनीन को खाशे नमाज़ गुज़ारो से मुत्तसफ़ किया है, और लगवियात से परहेज़ करने और ज़कात अदा करने वाला शुमार किया है।



ऐसी नमाज़ उस वक़्त हासिल हो सकती है के जब नमाज़ में सुस्ती ना हो और ज़िक्रे इलाही से पुरे निशांत हो।

कुरआन में नमाज़ के लिए सल्लू या अद्दू का लफ्ज़ इस्तेमाल नहीं किया बल्कि अक़ीमुस्सलात का लफ्ज़ इस्तेमाल किया है और इसी लफ्ज़ को बार-बार दोहराया है।

और यह इसलिए है के इस लफ्ज़ में ज़्यादा गहराई है, सल्ले सिर्फ वुजूब को बताता है। मगर अक़िम या अक़ीमो अदायगीए नमाज़ के वुजूदे हक़ीक़ी को बताता है।

यानि इंसान नमाज़ को अपने मुकम्मल वुजूद से बजा लाये। जैसे दीन का क़ायम होना और हुदूदे "ारिया का जारी करना इसी तरह नमाज़ को क़ायम करना है।

नमाज़ की तकरार इसलिए है के इंसान बार-बार अल्लाह की बारगाह में जाये और रूकू व सुजूद को खुशू और खुजू से अंजाम दे, ताकि सच्चा नमाज़ी होने का मिस्दाक़ बन सकें और कुरान ने ऐसी ही नमाज़ बजा लाने का हुक्म दिया है।

2

अहकामे तहारत

ऐ साहिबाने ईमान जब तुम नमाज़ के लिए खड़े हो तो अपने मुंह को धो लो और अपने हाथो को कोहनियों समेत धो लो और अपने सर व पैरो का टख़नो तक मसह कर लिया करो और अगर हालाते जनाबत में हो तो गुस्ल कर लो और अगर बीमार हो या सफ़र में हो या पख़ाना आ जाये या औरतो से हमबिस्तरी की हो और तुमको पानी न मिल सके तो पाक ख़ाक पर तयम्मुम कर लो इससे अपने मुंह और हाथो का मसह कर लो देखो खुदा ने कैसी आसानी कर दी खुदा तो यह चाहता ही नही कि तुम पर किसी क़िस्म की तंगी करे बल्कि वह चाहता है कि तुमको पाको-पाकीज़ा कर दे ताकि तुम शुक्र गुज़ार बन जाओ।

वजू और गुस्ल का मतलब एक तो जिस्म की ज़ाहिरी सफ़ाई, दूसरे अपने आज़ा को अल्लाह की बारगांह में अच्छी हालत में पेश करने के लिए अमादा करना और इबादत में रूह को उरूज पर पहुंचाना है।

बल्कि ताहरत का मतलब बा अलफ़ाज़े दीगर इससे भी ज़्यादा अज़ीम है और वह यह कि ताहरत, रूह और आज़ाए इंसानी में गहरा राबता पैदा कर देती है।

वुजू में चेहरा (कि जिसमें आंखें, मुँह शामिल हो) और हाथ पैरो का धोना या मसह करना इस वजह से है के इंसान इन्ही अज़ा के ज़रिये इबादत अंजाम देता है।

आयत में जो आया है के अल्लाह का इरादा यह है कि वो तुमको पाक करे इसमें फ़क़त ज़ाहिरी सफ़ाई मुराद नही है। अगर यही मुराद होती तो ख़ाक़ से तयम्मुम का हुक्म न देता, बल्कि ताहरत से मुराद इस अमल के ज़रिये इंसान के नफ़्स की तहारत होती है के जो किब्र व निफ़ाक़ से पाक करती है।

हज़रत इमामे रिज़ा अ.स.: वुज़ू से इबादत की शुरूआत का हुक्म इसलिए है के बन्दा जब अपने रब की बारगाह में इबादतो, रियाज़त के लिए खड़ा हो तो उसके हुक्म का फ़रमाबरदार बने और निजासात व गन्दगी से पाक होकर सुस्ती को छोड़कर और शैतानी वसवसो को तर्क कर दें।

हदस व मूज़ेबात-ए-वुज़ू

हदस व मूज़ेबात -ए- वुज़ू

- पेशाब का ख़ारिज होना
- पाखाने का ख़ारिज होना
- रीह का पखाने के मुक़ाम से ख़ारिज होना
- इस्तेहाज़ा-ए-कलीला व मुत्वस्सेता

हर वो चीज़ जो अक़्ल पर ग़ालिब आ जाये जैसेः

नींद, बेहोशी, नशा, वगैरह। मज़कुरा बाला में से जो चीज़ भी सरज़द हो जाये तो वाजिब है कि उससे पाकीज़गी के लिए वुज़ू करे, इन असबाब को हदस असगर कहते है।

हालात ए हदस

- जिससे हदसे असगर सादिर हो उसके लिए अलफ़ाज़े कुरआन को छूना हराम है।
- बगैर वुज़ु के नमाज़ पढना सही नही है, चाहे नमाज़ वाजिब हो या सुन्नत
- बगैर वुज़ु के तवाफे हज व उमरा सही नही है।
- तहारत पर बाक़ी रहने और नमाज़े मय्यित के लिये वुज़ू करना मुस्तहब है।
- दाख़ला-ए-मस्जिद और तिलावते कुरआन के लिए वुज़ु करना मुस्तहब है।

हज़रत इमामे बाक़िर अ.सः

फ़रमाते है के बग़ैर तहारत के नमाज़ नही हो सकती।

वुज़ु में इन चीज़ों का लिहाज़ रखना ज़रूरी है:

1. पानी पाक हो।
2. पानी मुतलक हो मुज़ाफ़ ना हो।
3. पानी मुबाह हो गसबी ना हो।
4. आज़ा-ए-वुज़ू पाक हो।
5. पानी तक रसाई मुमकिन हो।
6. वुज़ु के अफआल को खुद अंजाम दे।
7. तरतीब
8. मवालात यानी अफ़आले वुज़ु को पैयदर पैय अंजाम देना।
9. वुज़ु में कोई चीज़ रूकावट न हो।



अगर अफ़आले वुज़ूके दरमियान मे इतना फासला हो जाये या अफ़आल में खलल हो जाए तो वुज़ू बातिल है। और इसकी मिकदार यह है जिस हिस्से को घो रहें है उससे पहले घोया हुआ हिस्सा खु"क न होने

ऐसी हालत के अगर वुज़ू करने वाला आजिज़ हो:

मुकम्मल आजिज़ हो: अगर वुज़ू करने वाला मुकम्मल आजिज़ हो तो वुज़ू करने वाला नियत करेगा और कोई दूसरा उसके आजा़ए वुज़ू पर पानी ड़ालेगा और मसह करेगा।

अज़ा को हरकत दे सकता हो: अगर वुज़ू करने वाला आज़ा को धोने के काबिल न हो मगर हाथो को हिला सकता है तो हुकमे साबिक के अलावा वुज़ू करने वाले के हाथो से ही सर और पैरों का मसह कराया जाएगा।

बाज़ उमुर मे आजिज़ हो: अगर वुज़ू करने वाला बाज़ आमाल अंज़ाम ना दे सकता हो तो जिन कामोंमें आजिज़ है उनमें मदद हासिल

वुज़ू में नियत ज़रूरी है और नियत यह है के किसी काम को कुरबतन इलल्लाह के क़सद अज़ांम दिया जाए।

1 चेहरे का धोना:

सर के बाल उगने की जगह से थोड़ी तक लम्बाई में और चौडाई में अंगूठे और दरमियानी उंगली के बीच जितना चेहरा आ जाये।

2 हाथो का धोना:

पहले दाहिना हाथ कोहनियो से उंगलियों के सिरे तक, फिर इसी तरह बायें हाथ को धोयें लाज़मी है कि पानी ऊपर से नीचे की तरफ़ जारी हो।

3 सर का मसह:

मुक़ामें मसह सर का अगला हिस्सा है मसह इतना काफ़ी है के मसेह का नाम दिया जा सके मगर अफ़ज़ल यह है कि तीन उंगलियों की लम्बाई चौडाई में मसह करें।

4 पैरो का मसह:

पैरो के ऊपरी हिस्से का मसह करना वाजिब है पहले दाहने पैर का फिर बायें पैर का लम्बाई में पैरो की उंगलियों से पैरो के ऊपरी जोड़ तक और चौडाई में जो मिक़दार मसह पर सादिक़ आये।

चेहरा और कोहनियों को मिक़दार से कुछ ज़्यादा मिक़दार में धोये ताके मिक़दारे मतलुब का यकीन हो जाए।

सर का मसह मिक़दारे मज़कूरा के अलावा दुरूस्त नही है और अगर बाल ज़्यादा है तो उनको हटाकर मसह करना चाहिए।



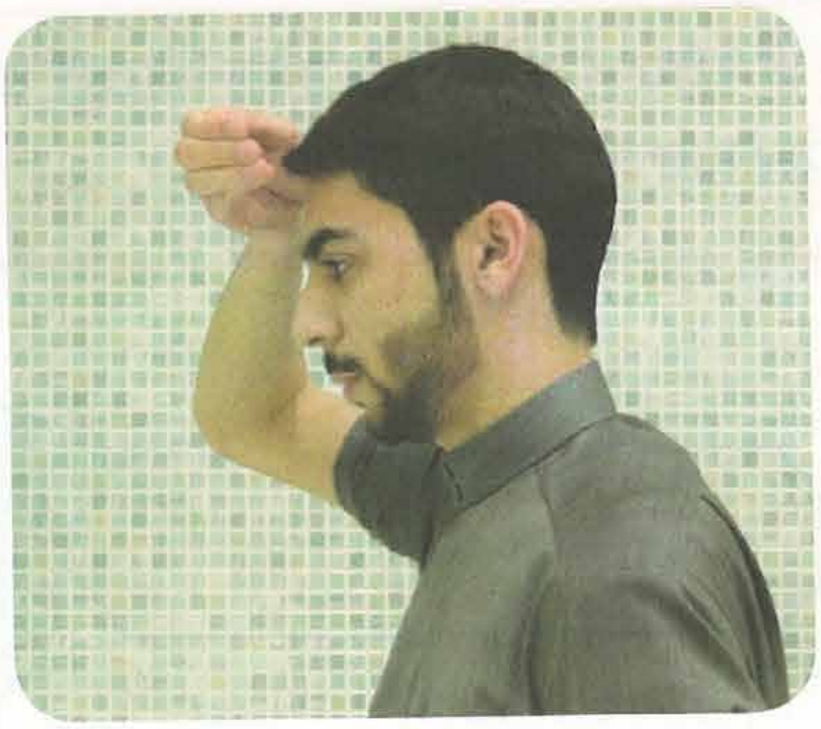



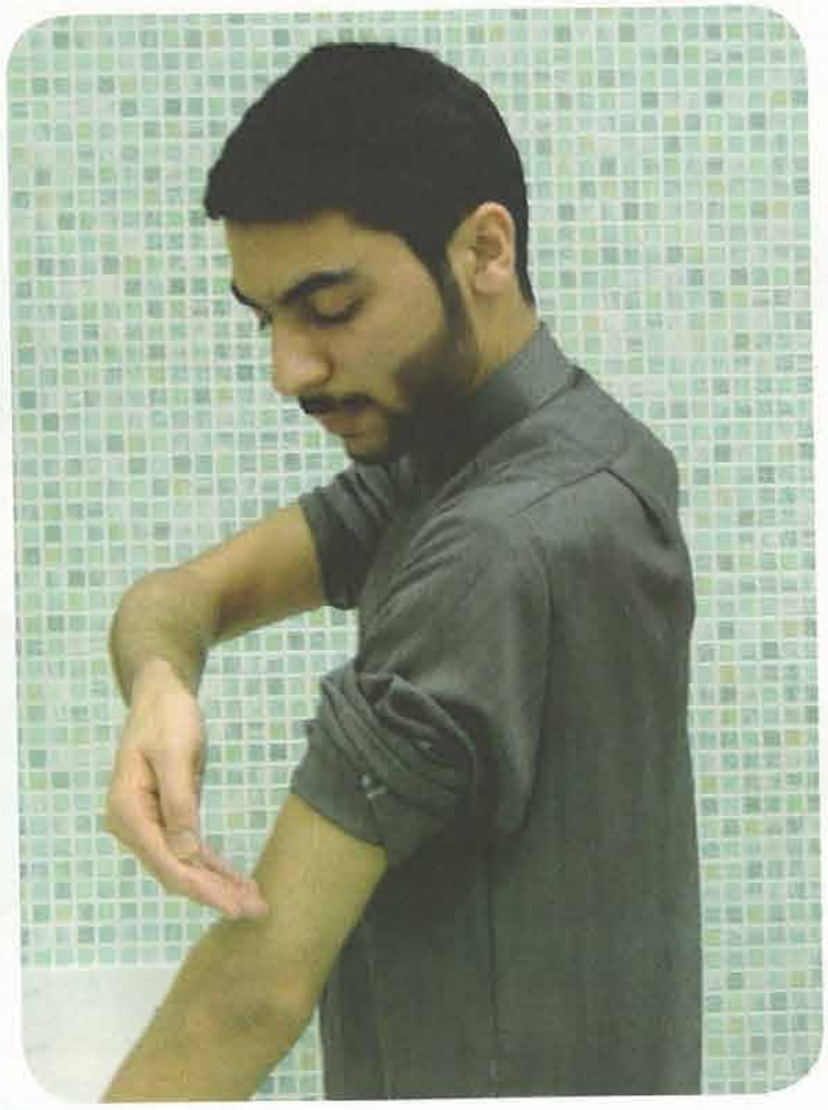

वाजिब है के सर और पैरो का मसह हाथो की तरी से किया जाए हाथो को दूसरे पानी से तर ना करें।

वाजिब है के सर का मसह हाथो के अन्दरूनी हिस्से से किया जाए।

वाजिब है के दाहने पैर का मसह दाहने हाथ के अन्दरूनी और बांये पैर का मसह बांये हाथ के अन्दरूनी हिस्से से किया जाये।

वाजिब है के मसह की जगह खुश्क हो।

मूज़ेबात -ए- गुस्ल

- जनाबत, मनी का खुरूज या हमबिस्तरी
- हैज़
- निफ़ास
- इस्तेहाज़ा-ए-मुतावस्सेता या कसीरा

मसे मय्यित-जिस्म ठंडा होने के बाद और गुस्ल से पहले।

अगर मज़कूरा असबाब में से एक भी सरज़द हो जाए, तो उसको हदसे अकबर की हालत कहते है। लिहाज़ा लाज़िम है के इसको दूर करने के लिए गुस्ल करें।

उलमा का इत्तिफ़ाक है के गुस्ले जनाबत के बाद वुज़ू की ज़रूरत नही है।

हालात ए हदस

- जिस पर गुस्ल वाजिब हो उसके लिए अलफ़ाज़े कुरआन का छूना हराम है।
- मस्जिद में ठहरना हराम है ,चाहे कम वक़्त के लिए ही क्यों न हो।
- उन सूरो की तिलावत से इजतेनाब करे जिन मे सजदा वाजिब है और ये चार सुरे है।(फुस्सेलत,सजदा,नजम,अलक़)
- नमाज़े वाजिब या सुन्नत के लिए गुस्ल वाजिब है।
- तवाफ़े हज व उमरे के लिए गुस्ल वाजिब है।
- रोज़ा रखने के लिए गुस्ल करना वाजिब है।

शराइते वा कैफ़ियते गुस्ल

गुस्ल और वुज़ू की शराइत़ में मवालात के अलावा कोई फर्क नही है गुस्ल में मवालात शर्त नही है मगर वुज़ूमें मवालात शर्त है।

कैफ़ियते गुस्ल

नियते कुरबत के साथ तमाम बदन के ज़ाहेरी हिस्से को धोना वाजिब है।

गुस्ले तरतीबी

सर और गर्दन को धोयें।	जिस्म का आधा दहना हिस्सा धोयें।	फिर बायॉ हिस्सा धोयें।

गुस्ल में किसी ख़ास तरीके से धोना वाजिब नही है। बल्कि इतना ही काफ़ी है के पानी बदन के हर हिस्से पर पहुंच जाये।

गुस्ले इरतेमासी

नियत करने के बाद पानी में एक साथ ग़ोता लगायें के पूरा बदन पानी में डूब जाए।

बेहतर है के मुजनिब गुस्ल से पहले पेशाब कर ले, ताके मनी की नाली से उसका असर ख़त्म हो जाए अगर बादे गुस्ल कोई रूतूबत खारिज हो तो उस पर मनी का हुक्म ना जारी हो। अगर पेशाब किये बग़ैर गुस्ल कर ले और फिर शक करे कि ख़ारिज़ होने वाली रतूबत मनी है या नही तो उस पर मनी का हुक्म जारी होगा और गुस्ल दोबारा करना होगा।

मुस्तहब गुस्लः- मुस्तहब गुस्ल यह है-गुस्ले जुमा, गुस्ले ईदैन, गुस्ले अहराम, मक्का-मदीना में दाख़िल होने के लिए गुस्ल, रमज़ान मुबारक की, 1, 17, 19, 21, 23 का गुस्ले तौबा, गुस्ले ज़ियारते इमाम हुसैन अ. स.।

हालात वा शराइते तयम्मुम

तयम्मुम-एक ख़ास कैफ़ियत की तहारत को तयम्मुम कहते हैं, और तयम्मुम उस वक़्त किया जाता है के जब मुकल्लफ़ वुज़ु या गुस्ल करने पर क़ादिर न हो।

इन हालात में तयम्मुम जायज़ है

- मुकल्लफ़ को पानी न मिल सके।
- बीमारी वग़ैरह की बिना पर पानी का इस्तेमाल मुमकिन न हो।
- पानी नजिस या ग़स्बी हो।
- पानी तक रसाई मुमकिन न हो।
- पानी के हुसूल में ख़ौफ़ हो।
- वक़्त कम हो और पानी वुज़ू से ज़्यादा अहम ज़रूरत के लिए हो।
- वक़्त कम हो और नमाज़ कज़ा होने का ख़ौफ़ हो।

शराइते तयम्मुमः

क़सदे कुर्बत	जिस चीज़ पर तयम्मुम कर रहा हो मुबाहा हो।	जिस चीज़ पर तयम्मुम कर रहा हो वह पाक हो।
जिस ज़गह तयम्मुम कर रहा है वह मुबाह हो।	तरतीब के साथ खुद अंजाम दें	आज़ाये तयम्मुम में कोई चीज़ रूकावट न हो।

कैफियते तयम्मुम

तयम्मुम हर उस चीज़ पर किया जायेगा जिस पर ज़मीन का इतलाक हो और वह यह है।

असली ज़मीन जैसे ख़ाक, रेत, खुश्क मिटटी, पत्थर वग़ैरह।

ग़ैर असली ज़मीन जैसे सिंमट, मुज़ाइक वग़ैरह इस शर्त के साथ के उसमें कोई ऐसी चीज़ ना मिली हो के जो उसको ज़मीन का हिस्सा होने से ख़ारिज कर दे।

खान से निकलने वाली चीज़ो पर तयम्मुम दुरूस्त नही है जैसे लोहा, फ़िरोज़ा, हीरा, नायलान वग़ैरह या वह चीज़ के जो ज़मीन का हिस्सा होने से ख़ारिज़ हो जाए जैसे शीशा, तारकोल, वग़ैरह लकड़ी या घास पर तयम्मुम सही है।

कैफ़ियते तयम्मुमः

दोनो हथेलियों को एक साथ ज़मीन पर मारना ज़मीन पर रखना काफ़ी नही है। पहले एक फिर दूसरी हथेली मारना सही नही है।

फिर दोनो हथेलियों को पूरी पेशानी पर बाल उगने की जगह से नाक की बुलन्दी तक मसह करे बेहतर यह है कि पेशानी में दोनो आबरूओं को भी शामिल करें।

उसके बाद दाहिन हाथ की पुश्त पर बांये हाथ की हथेली से फ़िर बांये हाथ की पुश्त पर दांये हाथ की हथेली से मसह करें हाथ गटटो के ऊपर से उंगलियों के सिरे तक फ़ैरा जायेगा।

हम्माद बिन उस्मान से रिवायत है के मैनें हज़रत इमाम सादिक़ अ.स. से उस इन्सान के बारे मे सवाल किया जिसके पास पानी मौजूद न हो कि क्या वह नमाज़ वुज़ू से पढ़ेगा फ़रमाया नही बल्के पानी न होने पर खाक पानी की मज़िल में है।

3

नमाज़ की कैफ़ियत

नमाज़ कभी वाजिब कभी मुस्तहब होती है।

वाजिब नमाज़े

- नमाज़े यौमिया
  - पांच नमाज़े और जुमा
- नमाज़े आयात
- नमाज़े तवाफ़
- नमाज़े मय्यित
- जो नमाज़ किसी वजह से वाजिब हो
  - जैसेः नज़्र या इजारे की नमाज़



क्या आप जानते हैं?

नमाज़े ईदैन ज़मान-ए-नबी या अइम्मा मे वाजिब है और गैबत में मुस्तहब है।

मुस्तहब नमाज़े

- नमाज़े यौमिया की नावाफ़िल
- नमाज़े शब
- नमाज़े वहशत
- नमाज़े जाफ़रे तय्यार

औक़ाते नमाज़ यौमिया व नवाफ़िल

नमाज़ के औकात और रकअतो की तदाद मुखतलिफ़ हैः

नमाज़े सुबह	नमाज़े जौहर	नमाज़े अस्र
तादादे रकअत	तादादे रकअत	तादादे रकअत
दो रकअत	चार रकअत	चार रकअत
वक़्त	वक़्त	वक़्त
तुलुअ सुबह सादिक़ से सुरज निकलनें तक	जवाले अफ़्ताब से गुरूबे आफ़्ताब से तकरीबन 5 मिनट पहले तक	जवाले अफ़्ताब से तकरीबन 5 मिनट बाद शुरू होता है और गुरूबे आफ़्ताब तक बाकी रहता है
नाफेला	नाफेला	नाफेला
दो रकअत नमाज़ है नमाज़े सुबह से पहले वक़्त सुबह सादिक़ से सुबह काज़िब तक	आठ रकअत नमाज़ है नमाज़े जौहर से पहले इसका वक़्त गुरूब अफ़्ताब तक है यह दो दो रकत करके पढी जाती है।	आठ रकअत नमाज़ है इसका वक़्त नमाज़े अस्र से पहले है नमाज़े ज़ौहर के बाद से गुरूबे आफ़्ताब तक बाक़ी रहता है।

सुबहे सादिक वह रोशनी है जो जानिबे मशरिक से ज़ाहिर होती है और उफ़क़ पर फेल जाती है

सुबहे काज़िबः- जानिबे मशरिक से एक रोशनी फ़ैलनी शुरू होती है और खत्म हो जाती है।

ज़वालः- निस्फ फुन्नहार से जानिबे मगरिब सूरज के ढलने को कहा जाता है

अव्वल वक़्त नमाज़ की फ़ज़ीलत



जनाबे जुरारह से रिवायत है के हज़रत इमाम बाक़िर अ.स. ने फ़रमाया के महबूब तरीन अमल वह है के जिसमें दवाम हो चाहे वह कम ही क्यों न हो।

हज़रत इमामे सादिक़ अ.स.: ने अपने अजदाद के हवाले से नक़्ल किया कि रसुल अल्लाह ने फ़रमाया कि मेरी शफ़ाअत उसको नसीब नही होगी जो नमाज़ वक़्त गुज़र जाने के बाद पढ़े।

हज़रत इमामे सादिक़ अ.स.- तीन वक़्तो पर हमारे शियो को आज़माओः- नमाज़ के वक़्त पर के उसकी हिफ़ाज़त किस तरह करते है। हमारे दुश्मनो से हमारे राज़ो को छुपाते वक़्त है और उस वक़्त जब वो मालदार हों कि वह अपने भाईयों से अपने माल में कैसे बराबरी करते है।

जायज़ है के नमाज़े ज़ोह्र अस्र और मग़रिब व इशा को चाहे मिलाकर पढ़े या अलग अलग पढ़े।

हज़रत इमामे सादिक़ अ.स. पैग़म्बरे अकरम से रिवायत करते है कि आपने फ़रमाया कि जो शख़्स वक़्त गुज़र जाने के बाद नमाज़ पढ़े तो एक सियाही बुलन्द होती है और कहती के तूने मुझे ज़ाय किया खुदा तुझे ज़ाय करे। जब बन्दा क़ियामत में खुदा के सामने पेश होगा तो सबसे पहले नमाज़ के बारे में सवाल होगा जिसकी नमाज़ पाकीज़ा होगी उसके तमाम आमाल पाकीज़ा होगें।

जनाबे जुरारह हज़रत इमामे सादिक़ अ.स. से रिवायत करते है कि आपने फ़रमाया के रसूल अल्लाह ने जवाले आफ़ताब के बाद नमाज़े ज़ोहर और अस्र बग़ैर किसी उज़्र के मिलाकर पढ़ी और यह इसलिए किया ताके उम्मत को ज़्यादा वक़्त मिल सके।

नमाज़ी का लिबास

नमाज़ी के लिबास में यह चीज़े लाज़मी हैः

1. लिबास शर्म गाह को छिपा सके।
2. मर्द का लिबास सोने चांदी का ना हो।
3. लिबास मुबाह हो गस्बी न हो।
4. मुरदार के अजज़ा का ना हो।
6. हराम गोश्त जानवर के अजज़ा का बना हुआ ना हो।
6. लिबास पाक हो।



क्या आप जानते हैं?

मर्द के आगे पीछे का हिस्सा और औरत का तमाम जिस्म हाथ पैरो और चेहरे के अलावा शर्मगाह कहलाता है।

लिबास ज़ाहेरी निजासत से पाक हो लेकिन नमाज़ में दिल भी पाक हो तो यह नमाज़ मोमिन की मेराज कहलाती है। दिल की पाकीज़गी यह है कि दिल निफ़ाक़ हसद गुरूर और तकब्बुर से पाक हो यह दिल के लिए निजासते मानवी कहलाती है।

नमाज़ की जगह

नमाज़ सही होने के लिए उस जगह का मुबाह होना ज़रूरी है जहां पर नमाज़ी आज़ाये सजदा को रखे।



आज़ाये सजदा यह है:

- पेशानी
- दोनो हाथो की हथेलियाँ
- दोनो घुटने
- दोनो पैर के अंगूठे

अगर औरत मर्द के आगे नमाज़ पढ़ रही है तो ज़रूरी है कि दोनों के दरमियान फ़ासला हो चाहे औरत महरम ही क्यों न हो, अलबत्ता इसमे फ़ुक़हा के दरमियान इख़्तेलाफ़ है के फ़ासला कितना हो।



एक बालिश्त से पांच मीटर तक का फ़ासला बयान किया गया है। सवारी पर नमाज़ नही हो सकती। हॉ अगर सवारी रूकने का इंतेज़ार नमाज़ कज़ा होने का ख़ौफ़ हो तो सवारी पर नमाज़ हो सकती है।

तमाम वाजिब नमाज़ो में क़िबले की तरफ़ रूख़ करना ज़रूरी है

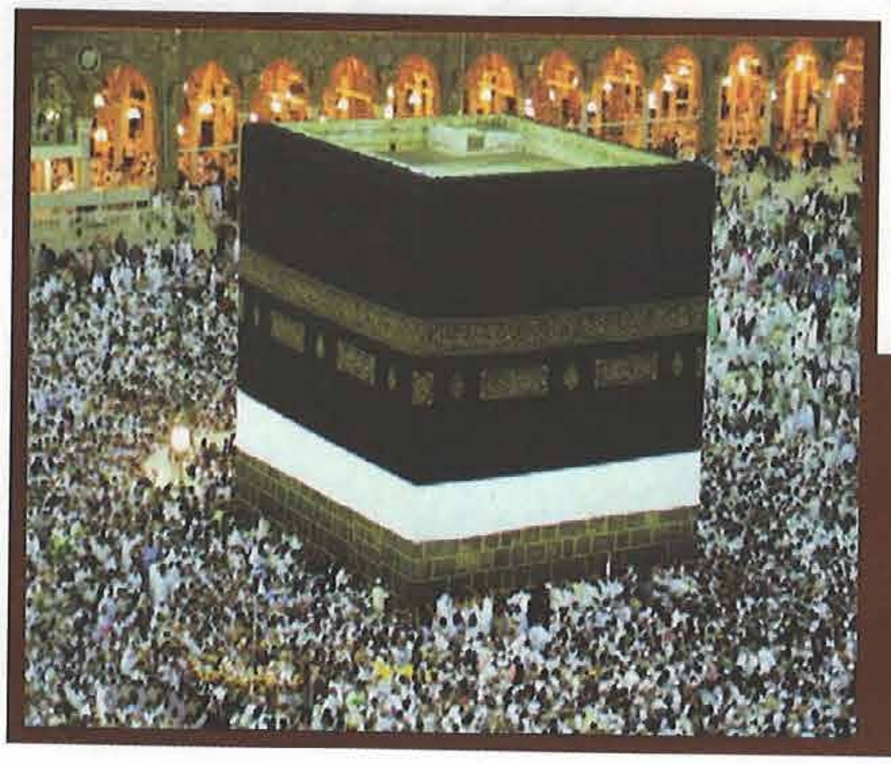

क़िबला वह जगह है जहां काबा है।

क़रीब वालो के लिए काबे की तरफ़ होना वाजिब है और दूर वालो के लिए सिमते काबा की तरफ होना वाजिब है।

सिमते काबा का हुसूल

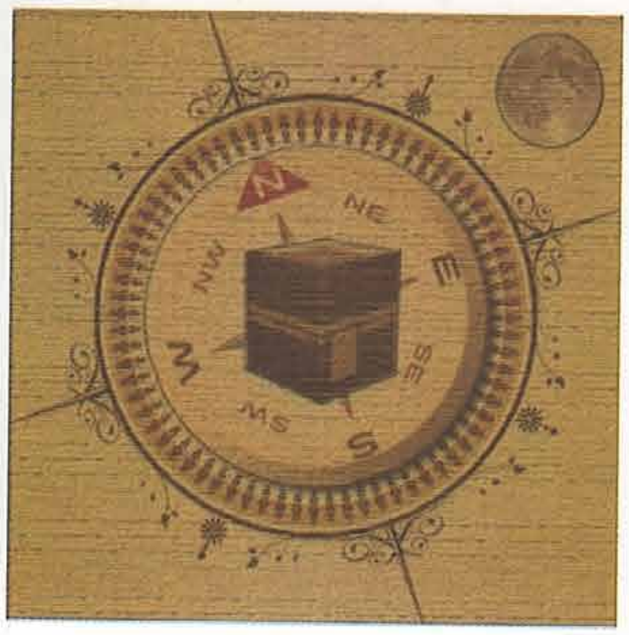

मुसलमानों के क़ब्रिस्तान को देखकर

कोई सच्चा आदमी गवाही दें।

जिस तरह इतमिनाने क़ल्ब हासिल हो

जिस तरफ शहर के लोग नमाज़ पढ़ते हो।

अगर सिमते क़िबला यक़ीनी तौर से मालूम ना हो सके तो जिस तरफ़ भी गुमाने ग़ालिब हासिल हो जाये काफ़ी है।





हवाई जहाज़ या दूसरी सवारी में तमाम नमाज़ के दौरान इस्तक़बाले क़िबला मुमकिन ना हो तो सिर्फ़ तकबीरतुल अहराम के वक़्त इस्तक़बाले क़िबला काफ़ी है दीगर अरकान में इस्तेक़बाल क़िबला ज़रूरी नही है।

नमाज़े यौमिया से पहले आज़ान व इक़ामत मुसतहब है।

यह इस्तेहबाब नमाज़े अदा, कज़ा, सफ़र, हज़र, सफ़र जमाअत और फ़ुरादा मे मर्द और औरत सबके लिए साबित है।

नमाज़े मुस्तहब और नमाज़े ग़ैर यौमिया (मसलन नमाज़े अयात) में अज़ान व इक़ामत ज़रूरी नही हैं

अज़ान

अल्लाहु अकबर	4–मरतबा
अशहदो अन ला इलाहा इलल्लाह	2– मरतबा
अशहदो अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह	2– मरतबा
अशहदो अन्ना अलीयुन वली युल–लाह	2 – मरतबा
हय्या अलस–सलाह	2– मरतबा
हय्या अलल फ़लाह	2–मरतबा
हय्या अला ख़ैरिल अमल	2 – मरतबा
अल्लाहु अकबर	2 – मरतबा
ला इलाहा इलल्लाहा	2– मरतबा

इक़ामत

अल्लाहु अकबर	2–मरतबा
अशहदो अन ला इलाहा इलल्लाह	2– मरतबा
अशहदो अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह	2– मरतबा
अशहदो अन्ना अलीयुन वली युल–लाह	2 – मरतबा
हय्या अलस–सलाह	2– मरतबा
हय्या अलल फ़लाह	2–मरतबा
हय्या अला ख़ैरिल अमल	2 – मरतबा
क़द क़ामतिस्सलाह	2– मरतबा
अल्लाहु अकबर	2 – मरतबा
ला इलाहा इलल्लाहा	1– मरतबा

अशहदो अन्ना अलीयन वलीयुल्लाह अज़ान व इक़ामत का हिस्सा नही हैं, बल्के मिन बाबे इस्तेहबाब तकमीले शहदतैन के लिए है।

नियत

इरादा-ए- अमल के वक़्त जो क़सद ज़ेहन मे हो उसको नियत कहते है।

दिल में सोचना ही काफ़ी है, ज़बान से दोहराने की ज़रूरत नही है।

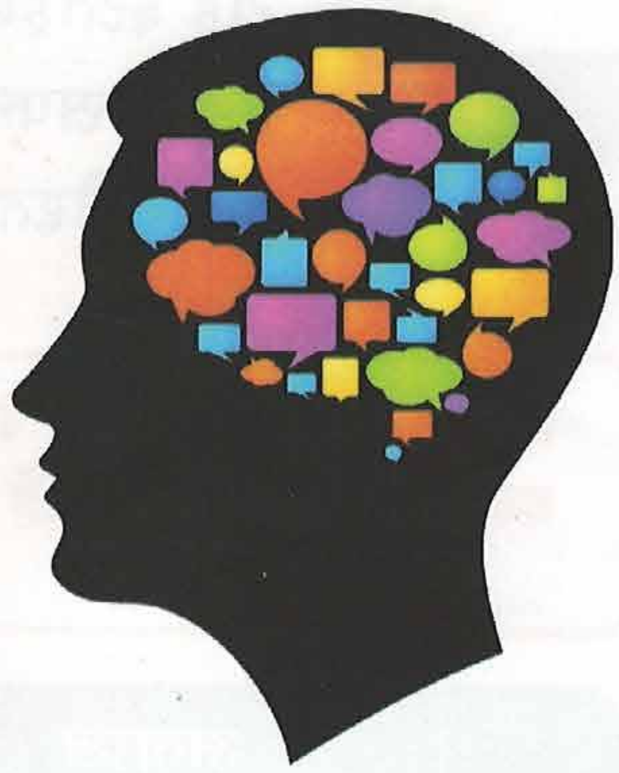

सिर्फ़ इतना इरादा-ए-ज़ेहनी काफ़ी है के अगर कोई सवाल करे के क्या कर रहे हो तो वह जवाब दे सके के मसलन नमाज़े ज़ौहर पढ़ रहा हूँ।

नियत के लिये यह लाज़मी है
कि कुर्बतन इलल्लाहा हो।



नियत मुताबिक़े अमल हो,लिहाज़ा अगर नियत नमाज़ की हो और अमल में वुज़ू अंजाम दे रहा हैं तो ना तो उसकी नमाज़ होगी और न ही वुज़ू होगा।

वाजिब है के नियत नमाज़ के आख़िर तक बाक़ी रहे लिहाज़ा अगर नियत शुरू करने के बाद करे तो नमाज़ बातिल है।

अगर नमाज़ में मशगूल होने के बाद नियत से फ़िर जाये लेकिन नमाज़ के मनाफ़ी अमल से पहले दोबारा नियत कर ले तो उसकी नमाज़ सही है।

क़ियाम और तकबीरतुल अहराम

तकबीरतुल अहराम:
अल्लाहु अकबर



तकबीरतुल अहराम से नमाज़ शुरू हो जाती है।

तकबीरतुल अहराम कहने के बाद नमाज़ी पर मुबतलाते नमाज़ को अंजाम देना हराम हो जाता है।

तकबीरतुल अहराम रूकने नमाज़ है, लिहाज़ा इसकी कमी या ज़्यादती से नमाज़ बातिल हो जाती है, चाहे भूले से या जान बूझ कर ।

अगर कोई तकबीरतुल अहराम को अमदन दोबारा कह दे तो नमाज़ बातिल हो जो जाएगी इस हालत मे उसे चाहिए कि तीसरी तकबीर तकबीरतुल अहराम की नियत से कहे और इसके बाद भी अगर वह चौथीं तकबीर कह देता है तो फ़िर पॉचवी तकबीर तकबीरतुल अहराम की नियत से कहे ।

तकबीरतुल अहराम पहले या बाद से नही मिला सकते।

तकबीरतुल अहराम हालते क़ियाम में कही जाएगी।

तकबीरतुल अहराम यानी अल्लाह की अज़मत व किबरियाई का ऐलान और यह इज़हार कि उसके सामने बड़े-बड़े भी कुछ नही है।

हज़रत इमाम सादिक़ अ.सः नमाज़ शुरू करते वक़्त एक बार, तीन बार, पांच बार, या सात बार तकबीर कहना मुस्तहब है। अलबत्ता अगर नमाज़ी इमामे जमाअत है तो एक बार बुलन्द आवाज़ से तकबीर कहे।

1 हर वाजिब और मुसतहब नमाज़ में सूरए हमद का पढ़ना वाजिब है।

2 हर वाजिब नमाज़ में दूसरा सूरा पढना वाजिब है।

हज़रत इमाम बाक़िर अ.सं.: अगर कोई अमदन क़िरअत को तर्क कर दे तो नमाज़ को दोबारा पढ़ें लेकिन अगर सहवन छोड़ दे तो नमाज़ सही है।

3 मुस्तहब नमाज़ में दूसरा सूरा पढना वाजिब नही है।

4 बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम हमद व सूरे का जुज़ है इसका पढना वाजिब है।



क्या आप जानते हैं

तीसरी और चौथीं रकअत में नमाज़ी को इख़्तियार है के चाहे सूर-ए-हमद पढ़े या एक बार तस्बीहाते अरबा पढ़े। लेकिन तीन मरतबा पढ़ना अफ़ज़ल है और वह यह है, सुबहान अल्लाहे वलहमदो लिल्लाहे वला इलाहा इल्ललाहु वल्लाहु अकबर



नमाज़े सुबह मग़रिब व इशा की पहली दो रकअते बुलन्द आवाज़ से पढ़ें।

नमाज़े सुबह नमाज़े मग़रिब व इशा की पहली दो रकअतो में इख़्तियार है के बुलन्द आवाज़ से पढ़े या

मर्द और औरत पर वाजिब है के नमाज़े ज़ोहर व अस्र को आहिस्ता आवाज़ से पढ़े।

रूकूः-इतना झुकना के हाथ घुटनों तक पहुंच जाये ।

मुकामें रूकूः

यह क़िरअत व तस्बीहाते अरबा के बाद अंजाम दिया जाता है।

अददः

हर रकअत में एक बार।

किसमः

नमाज़ का रूकन है।

रूकू में दो चीजें वाजिब है।
1- क़ियामः नमाज़ी हालते क़ियाम से रूकू में जाए। और फ़िर रूकू से सर उठाये क़ियाम करे तब सजदे में जायें।
2- अफ़ज़ल सुबहाना रब्बीयल अज़ीमे व-बिहमदेह है। ज़िक्र एक मरतबा सही है। तीन मरतबा सुबहान अल्लाह कहना भी सही है और दोनो ज़िक्र मिलाकर पढ़ना भी सही है। ज़िक्र पढ़ते वक़्त इत्मिनान लाज़मी है। अगर इत्मिनान को अमदन तर्क कर दे तो नमाज़ बातिल है।

रूकू अल्लाह की किब्रयाई के सामने इज्ज़ व इनके-सारी के साथ और इज़हारे बन्दगी का नाम है।

और दाऊद ने समझा के हमने उनका इम्तेहान लिया और वो नाकाम रहे तो अपने परवरदिगार से बख़्शिश की दुआ मांगने लगे और रूकू में झुक गये तो हमने उनको बख़्श दिया (सूर-ए-सादः 24-25)



क्या आप जानते हैं?

मुस्तहब हैः

- रूकू से पहले दोनो हाथ उठाकर तकबीर कहना।
- कमर को सीधा रखना।
- गर्दन को कमर की सीध में रखना।

हज़रत इमाम बाक़िर अ.स.: जब तुम रूकू का इरादा करो तो तकबीर कहो फ़िर रूकू में जाओ और तीन मरतबा कहो (अल्लाहुम्मा लका रकअतो व लका असलमतु व बेका आमन्तु व अलैका तवक्कलतु व अनता रबबी खशेआ लका क़लबी व समई व बसरी व शेरी व बिशरी व लहमी व दमी व असबी व इज़ामी वमा अक़्ल्लतहु हो कदमाई गैरो मुस्तह सेरिन केफ़िन वला मुस्तकबेरिन वला मुसतहसेरिन सुबहाना रब्बीयल अज़ीमे व बिहमदेह) यह ज़िक्र जल्दी में न पढ़ा जाये बल्कि तीन बार इत्मिनान से कहो रूकू में दोनो पैरो के बीच में एक बालिशत का फ़ासला हो हथेली घुटनो पर हो और उगँलियां खुली हुई हो गर्दन सीधी हो और निगाहें पैरो के बीच में रहें।



हज़रत इमाम बाक़िर अ.स. जो रूकू, सजदे और क़ियाम में सलल्लाहो अला मुहम्मदिव व आले मुहम्मद कहे तो अल्लाह उसको अहले रूकू सुजूद और क़ियाम में शुमार करेगा।

हज़रत इमाम रिज़ा अ.स.: बेशक रूकू और सजदे में तस्बीह को क़रार दिया गया है ताके बन्दा खुशु खुज़ू और इनकेसारी के साथ इज़हारे बन्दगी करे और कुर्बे इलाही को हासिल करे और खुदा की तमजीद, तस्बीह और तहलील का लायक समझते हुए अज़ीमो राज़िक की हैसियत से उसका शुक्र करते हुए बन्दे के दिलों दिमाग़ ज़िक्रे इलाही में मशगूल रहें और ग़ैर खुदा का ख़याल ना आये।

बा क़सदे ताज़ीमे रब आज़ाये सजदा को ज़मीन पर रखने का नाम सजदा है

मुक़ामे सजदा	अदद	क़िस्म
रूकू और फिर क़ियाम के बाद	हर रकअत में दो सजदे	दोनो सजदे मिलाकर रूकन है।

वाजिबाते सजदा

- आज़ाये सजदा को ज़मीन पर रखना।
  - पेशानी, दोनो हाथों की हथेलियां, दोनो घुटने, दोनो पैरों के अंगूठें।
- सजदे के बाद सीधा बैठना।
- ज़िक्रे सजदा
  - सुबहाना रब्बीयल आला व बिहमदे कहना अफ़ज़ल है। यह जिक्र एक मरतबा काफी है तीन मरतबा (सुबहान अल्लाह) कहना भी काफी है दोनो जिक्र करना भी जायज़ है।
- आज़ाये सजदा का सजदे मे साकिन होना।
- सजदे और खड़े होने की जगह बराबर हो।
  - जाये क़ियाम और सजदा ऊंचें नीचे ना हो अगर चार बंद उँगलीयों के बराबर क़ियाम और है सजदे की जगह ऊंची नीचे हो तो कोई हरज़ नही है।

सजदे में सर रखने का मतलब यह है के बन्दा इनकेसारी के साथ सरे नियाज़ को बारगाहे रब में खुशूओं खुज़ू से झूका दे ताके वह यह समझ सके के वह रब उसका खालिक है और मैं उसका बन्दा हूँ। ताके अपने आप को तकब्बुर से पाक कर सके।

जिस चीज पर सजदा करना सही है उस पर सजदा करना वाजिब है।

1	ज़मीन	मिट्टी, रेत, पत्थर बगैरह।
2	ज़मीन से उगने वाली चीज़े जो ख़ाने और पहनने मे इस्तेमाल नही होती।	रूई पर सजदा सही नही हैं।
3	कागज़	चाहे रंगीन हो या लिखा हुआ हो।

हज़रत अली अ.स: सजदा-ए-जिस्मानी तो यह है के बन्दा खुलूसे नियत से अपने आज़ाए सजदा का अपने रब के सामने रख दे सजदा-ए-नफ़्सानी यह है कि बन्दे का दिल फ़ानी अशाया से बे नियाज़ हो और बाकी रहने वाली अशाया का इस्तक़बाल करे और अपने आप को तकब्बुर से दूर दूनिया से बेरग़बती मौहब्बत और अख़लाके नबी को इख़्तियार करें।

ज़मीन पर चलने वाले मलाएका और जो कुछ ज़मीनो और आसमानो में हैं वह मुतकब्बिर नही हैं।

नबी-ए-अकरम स.अ.: बन्दा हालते सजदा में अपने रब से सबसे ज़्यादा क़रीब होता है।

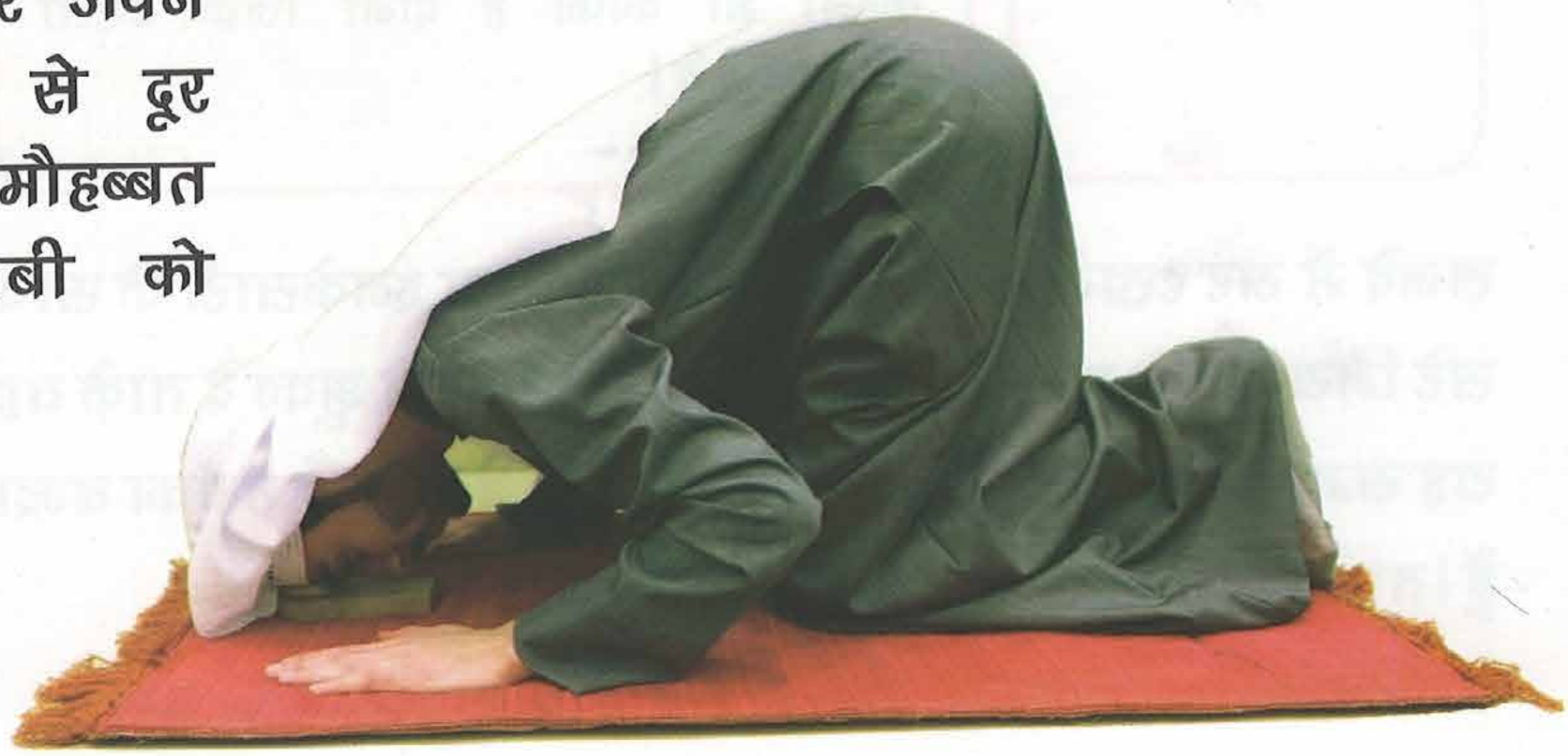

तशह्हुद नमाज़ का वाजिब जुज़ है और वह यह है: (अशहदो अन ला इलाहा इलल्लाहु वहदहु लाशरीक लहू व अशहदो अन्ना मुहम्मदन अबदोहू व रसुलोहू अल्लाह हुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिव व आले मौहम्मद।

अगर नमाज़

2

दूसरी रकअत के अख़िरी सजदे के बाद वाजिब है।

3

तीन रकअती नमाज़ में दूसरी रकअत के दूसरे सजदे के बाद और तीसरी रकअत के आख़िरी सजदे के बाद वाजिब है।

4

चार रकअती नमाज़ में दूसरी रकअत के दूसरे सजदे और चौथी रकअत के आख़िरी सजदे के बाद

हालते तशहुद में इतमिनान से सीधा बैठना वाजिब है।:

हज़रत इमामे सादिक़ अ.स. जब तुम ज़ोहर या गैर ज़ोहर की दूसरी रकअत में तशह्हुद भूल जाओ और तीसरी रकअत के लिये खड़ हो जाओ तो रूकू से पहले याद आ जाये तो फ़ौरन बैठ जाओ और तशह्हुद पढ़कर नमाज़ पूरी करो और अगर रूकू के बाद याद आये तो नमाज़ के बाद तशह्हुद पढ़कर दो सजदा-ए-सहव करें।

हज़रत इमामे सादिक़ अ. स. जब दूसरी रकअत के लिये बैठो तो कहो बिस्मिल्लहे व बिल्लाहे वलहमदो लिल्लाहे व खै़रूलअसमा-ए-लिल्लाह अशहदो अन ला इलाहा इल्लल्लाह वहदहू लाशरीकालहू

हज़रत इमामे सादिक़ अ.स. जब पहली दो रकअतों में बैठे तो खड़े होते वक़्त कहो बिहवलिल्लाहि व कुव्वते-ही अकूमु व अक़ुद।

सलाम हर नमाज़ का आख़िरी जुज़ है और वाजिब है।

सलाम के बाद नमाज़ी नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाता है और जो हालते नमाज़ में ख़िलाफ़े नमाज़ आमाल है वह उसके लिए हलाल हो जाते है जैसे- खाना, पीना, कलाम करना।

सलाम यह है: अस्सलामो अलैना व अला इबादिललाहिस्सालेहीन अस्सलामो अलैकुम वा रहमतुल्लाहे व बराकाताहु:

मुस्तहब है के पैगम्बरे इस्लाम पर सलाम के ज़रिये सलाम की इबतेदा करे और कहे अस्सलामों अलैका अय्योहन नबिय्यो व रहमातुल्लाहि व बराकातुहू।

नबी-ए- अकरम स.अ. नमाज़ की इबतेदा वुज़ू से हुरमत तकबीर से और तमाम सलाम के जरिये होता है।

हज़रत इमाम सादिक़ अ.स. जब तुम सलाम पढ़ लो तो दाहने, बायें जानिब निगाह करो।

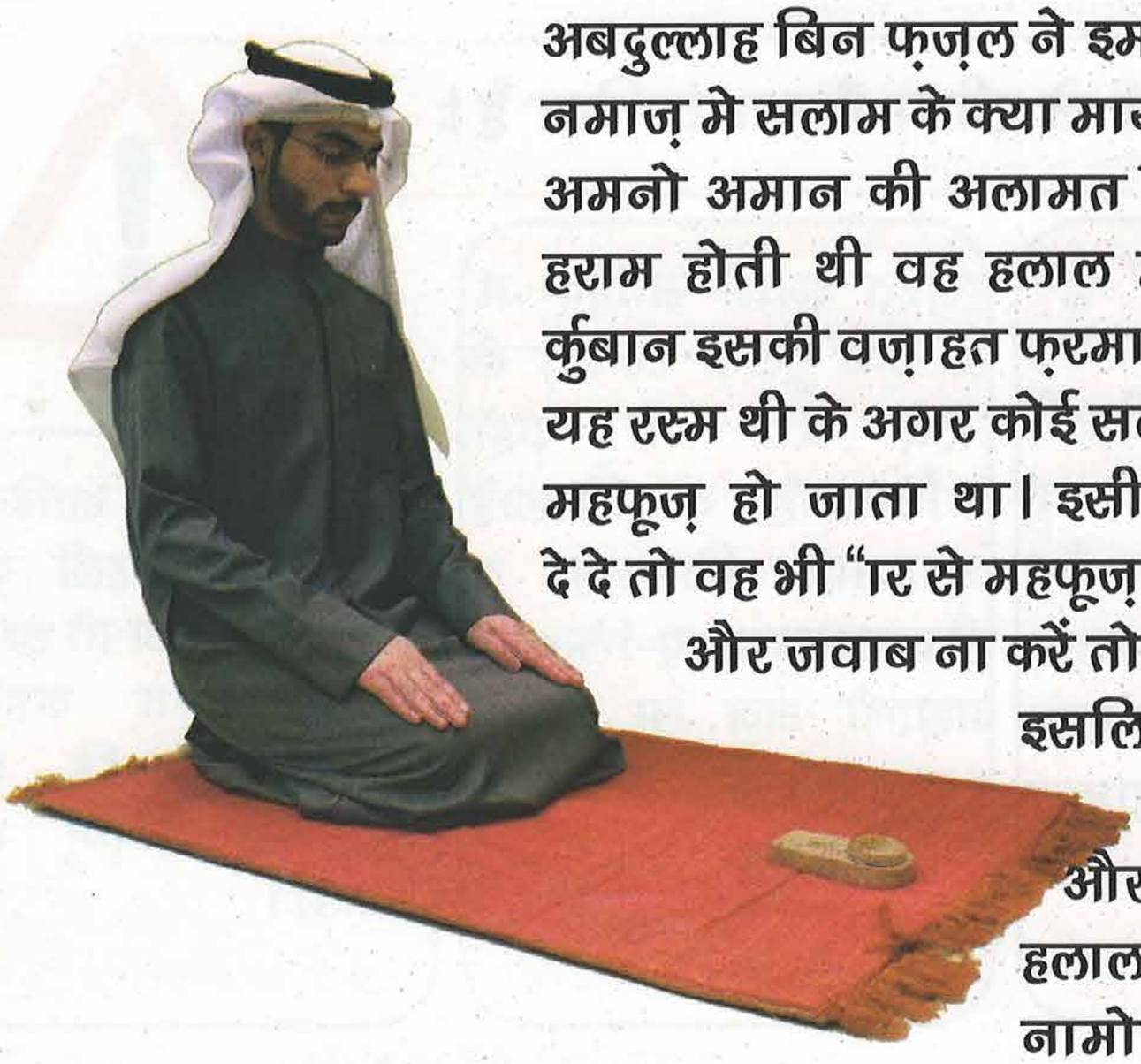

अबदुल्लाह बिन फ़ज़ल ने इमामे सादिक़ अ.स. से मालूम किया नमाज़ मे सलाम के क्या मायने है ?तो आपने फ़रमाया सलाम अमनो अमान की अलामत है और इससे नमाज़ मे जो चीज़ें हराम होती थी वह हलाल हो जाती है। आप पर मेरी जान क़ुबान इसकी वज़ाहत फ़रमा दें तो आपने फ़रमाया के अरबो मे यह रस्म थी के अगर कोई सलाम करता था तो वह उसके "ार से महफ़ूज़ हो जाता था। इसी तरह अगर कोई जवाबे सलाम दे दे तो वह भी "ार से महफ़ूज़ हो जाता था और अगर सलाम और जवाब ना करें तो एक दूसरे के "ार से महफ़ूज़ नही है इसलिये सलाम को नमाज़ की हालत से निकलने का ज़रिया बनाया है और जो चीज़े नमाज़ मे हराम थी वह हलाल हो जाती है और सलाम अल्लाह के नामो मे से है।

तरतीब व मवालात

तरतीब

- अज़ान
- इक़ामत
- नियत
- तकबीरतुल अहराम
- क़िराअत
- रूकू
- सूजूद
- तशह्हुद
- सलाम

काफ़ी नही है अफ़आले नमाज़ को जैसे चाहें अदा करे बल्कि वाजिब है के जो मुकर्रर तरकीब है उसी तरह से अंजाम दे जैसा के मवालात का बजा लाना वाजिब है।

मवालात

अफ़आल में अजज़ा-ए-नमाज़ को मुरत्तब तरीके से एक जुज़ के बाद दूसरे जुज़ को लगातार अंजाम दें।

दो अजज़ा के दरमियान मामूली फ़ासले से मवालात में फ़र्क़ नही पड़ता जैसे रूकू से सर उठाकर लम्हा भर इंतेज़ार करे कि कोई सजदगाह उसके आगे रख दे।

सजदे और रूकू के तूलानी होने से मवालात पर कोई फ़र्क़ नही पड़ता।

कुनूत व ताक़ीबात

कुनूत यानी अपने रब से दुआ व उसकी हमद व जिक्र एक ख़ास कैफ़ियत से करना।

मुक़ामे कुनूत

हर नमाज़ में दूसरी रकअत की क़िअत के बाद रूकू से पहले।

क़िस्म

कुनूत हर नमाज़ में मुस्तहब जुज़ है अलावा नमाज़े शफ़ा के ।

मज़मून

कुनूत में कोई मख़सूस दुआ की शर्त नहीं है।

नमाज़े जुमा नमाज़े आयात व ईदैन में इसका मुक़ाम बातादाद मुख़तलिफ़ है। जिनका ज़िक्र उनके मुक़ाम पर आयेगा।



नमाज़ के बाद ताक़ीबातः- यानी दुआ करना ज़िक्रे इलाही करना उसकी तारीफ़ के साथ और बाज़ आयतो की तिलावत करना।

सलाम के बाद तीन बार तकबीर कहना।

तसबीहे जनाबे फ़ातेमा पढ़ना।

सूरे-ए-हमद और आयतुल कुर्सी पढ़ना।

बाज़ दुआऐं पढ़ना जो दुआओं की किताबों में ज़िक्र है।

हज़रत इमाम सादिक़ अ.स. :
हर रोज़ नमाज़ के बाद तसबीहे हज़रते फ़ातेमा ज़ैहरा पढ़ना, मेरे नज़दीक हर दिन हज़ार रकअत नमाज़ पढ़ने से ज़्यादा महबूब हैं।

दो रकअती नमाज़

अज़ान → इक़ामत → नियत नमाज़ पढ़ता हूँ सुबह की वाजिब कुर्बतन इलल्लाह।

तकबीरतुल अहराम अल्लाहु अकबर → क़ियाम में सूर-ए-हमद व दूसरा सूरा पढना,

रूकू व ज़िक्रे रूकूः सुबहाना रब्बियल अज़ीमे व बिहमदेहि → क़ियामः समेअल्लाहोलेमन हमेदा

सजदा व ज़िक्र : सुबहाना रब्बियल आला व बिहमदेहि → बैठनाः अस्त्गफ़िरूल्लाह

सजदा व ज़िक्र → बैठना → खड़े होना, बिहौलिल्लाहि व कुव्वतेही व अकूमो व अक़ुद।

कुनूत → क़ियाम में हम्द व सूरा पढ़ना। → रूकू व ज़िक्र

क़ियाम समे अल्लाहु लेमन हमेदाह → सजदा व ज़िक्र → बैठना, इस्तिग़फार

सजदा व ज़िक्र। → बैठकर तशह्हुद → सलाम नमाज़ तमाम

तीन और चार रकअती नमाज़

तीन रकअती नमाज़ में दूसरी रकअत तशह्हुद के बाद सलाम नही पढ़ेगें मग
तशह्हूद के बाद ये अमाल करेंगे

ज़िक्र के साथ खड़े हो → क़ियाम में तसबीहाते अरबा पढ़ें → क़ियामः समे अल्लाहु लेमन हमेदाह → रूकू व ज़िक्र → सजदा व ज़िक्र → बैठकर इस्तिग़फ़ार → सजदा व ज़िक्र → बैठकर तशह्हुद → सलाम

चार रकअती नमाज़ में तीसरी रकअत के
सजदे के बाद तशह्हुद, सलाम नही पढ़ेंगे मगर

ज़िक्र के साथ खडे होगें → क़ियाम में तसबीहते अरबा पढ़ेगें → क़ियामः समेअल्लाह → रूकू व ज़िक्र → सजदा व ज़िक्र → बैठकर इस्तिग़फ़ार → सजदा व ज़िक्र → बैठकर तशह्हुद → सलाम



वाजिबात और मुस्तहबात

नमाज़े जुमाः रोज़े जुमा ज़ोहर की जगह पढ़ी जाती है।

ऐ इमानदारों जब जुमे के दिन नमाज़े (जुमा) के लिये आज़ान दी जाऐ तो खुदा की याद (नमाज़) की तरफ़ दौड़ो और ख़रीदो फ़रोख़्त छोड़ दो अगर तुम समझते हो तो यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है।

यह दो रकत नमाज़ है जो जमाअत से पढ़ी जाती है। नमाज़ से पहले दो खुतबे है। इसका वक़्त ज़वाले आफ़ताब के बाद है। हर रकअत में एक-एक कुनूत है। मुस्तहब है एक कुनूत पहले रूकू से पहले दूसरा कुनूत दूसरी रकअत के रूकू के बाद।

शराइते नमाज़े जुमा

कम से कम पाँच अफ़राद हो उनमें एक इमाम जमाअत हो।

नमाज़ से पहले इमामे जमाअत दो खुतबे दे।

दो जुमों के दरमियान पाँच किलो मीटर से कम फ़ासला ना हो।

हज़रत इमाम सादिक़ अ0सं0:- जिस घड़ी दुआ क़बूल होती है वह जुमे के दिन इमामे जुमा के खूतबों से फ़रग़त और सफ़ बरकरार होने के दरमियान और गुरूबे आफ़ताब के वक़्त है।

हज़रत इमाम बाक़िर अ.स.: नमाज़ जुमा फ़र्ज़ है और मोमेनिन हाज़िर होना भी फ़र्ज़ हैं। अगर कोई बगैर सबब के तीन जुमे तर्क कर दे तो उसने तीन फ़र्ज़ तर्क कर दिये और तीन फ़रिज़ो को मुनाफ़िक के अलावा कोई तर्क नही करता।

हज़रत अली अ.स.: ईदे कुर्बान में दस बार लोगो को जमा करने से एक बार जुमे में जमा करना मेरे लिये ज़्यादा अज़ीज है।

हज़रत इमाम क़ाज़िम अ. स.: जब इमामे जमाअत खुतबा दे रहा हो तो नमाज़ पढ़ना सही नही है।

नमाज़े ईदैनः मख़सूस है इदे फ़ितर और कुर्बानि से

इसकी दो सूरते हैंः

- वाजिबः नबी इमामे मासूम या इमाम के नायबे ख़ास के हुजूर में जमाअत से वाजिब है।
- मुसतहबः नबी इमाम और नायबे ख़ास की गैर मौजूदगी में जमाअत से पढ़े या फुरादा।

तरकीबः नियत के बाद तकबीरतुल अहराम, सूर-ए-हम्द, दूसरा सूरा, पांच तकबीरें और हर तकबीर के बाद कुनूत, रूकू, सीधा खड़े होकर समे अल्लाह पढ़कर दो सजदे फिर दूसरी रकअत में सूर-ए-हम्द और दुसरा सुरा पढ़कर चार तकबीरें कहे व हर तकबीर के बाद कुनूत पढ़े फिर रूकू से खड़े होकर बैठे और दो सजदे बजा लाये और तशह्हुद सलाम पढ़कर नमाज़ तमाम करें।

अगर जमाअत से हो तो मुसतहब है के इमामे जमाअत नमाज़ के बाद दो मुख़तसर खुतबे दें।

नमाज़े ईदिन में आज़ान व इक़ामत नहीं है बल्कि मुस्तहब है के मुज्ज़िन तीन मरतबा अस्सलात कहे



क्या आप जानते हैं?

नमाज़े ईदिन में तादादे अफ़राद की शर्त नही है ना ही दो नमाज़ो के बीच मसाफ़त की शर्त है।

मुस्तहब है के पहली रकअत में सुरा-ए-आला और दूसरी रकअत में हम्द के बाद सूरए वश्शमस पढ़े।

हज़रत इमाम सादिक़ अ.स.: जो ईद की नमाज़े जमाअत में शरीक ना हो सके, वह गुस्ल करे, खुशबु लगाये और नमाज़े ईद पढ़े जिस तरह जमाअत से पढ़ते है।

नमाज़े आयात- इन मोक़ों पर वाजिब है:

1. सूरज ग्रहण यह पुरा हो या कम
2. चाँद ग्रहण यह पुरा हो या कम
3. ज़लज़ला
4. हर वह चीज़ जो ज़मीन या आसमान में रोनूमा हो।



जैसे काली आँधी या खौफ़नाक गरज, चमक जो आम लोगो के खौफ़ ज़दा कर दें।

यह दो रकअत नमाज़ है। हर रकअत में पांच रूकू और दो सजदे हैं।

पहला तरीका: नियत के बाद तकबीरतुल अहराम हम्द व सुरा रूकू 1- हमराहे क़ियाम हम्द व सूरा-रूकू 2- हमराहे क़ियाम हम्द व सूरा-रूकू 3- हमराहे क़ियाम हम्द व सूरा-रूकू 4- हमराहे क़ियाम हम्द व सूरा-रूकू फिर सज़दे करे 5- फिर क़ियाम में पहली रकअत की तरह दूसरी रकअत को भी अंजाम दे और तशह्हुद सलाम के साथ नमाज़ तमाम कर दें।

2

नियत तकबीरतुल अहराम: सूरए हमद- किसी सूरे की पूरी आयत-रूकू 1- क़ियाम में एक पूरी आयत-रूकू, 2- क़ियाम में पूरी आयत-रूकू, 3- क़ियाम में एक पूरी आयत-रूकू, 4- क़ियाम में एक पूरी आयत-रूकू, 5-सजदे अंजाम देकर फिर खड़े होकर दूसरी रकअत पहली रकअत की तरह पूरी करके तशह्हुद व सलाम के बाद नमाज़ तमाम करें।

चाँद या सूरज ग्रहण

इनकी नमाज़ का वक़्त ग्रहण शुरू होने से ग्रहण ख़त्म होने तक हैं।

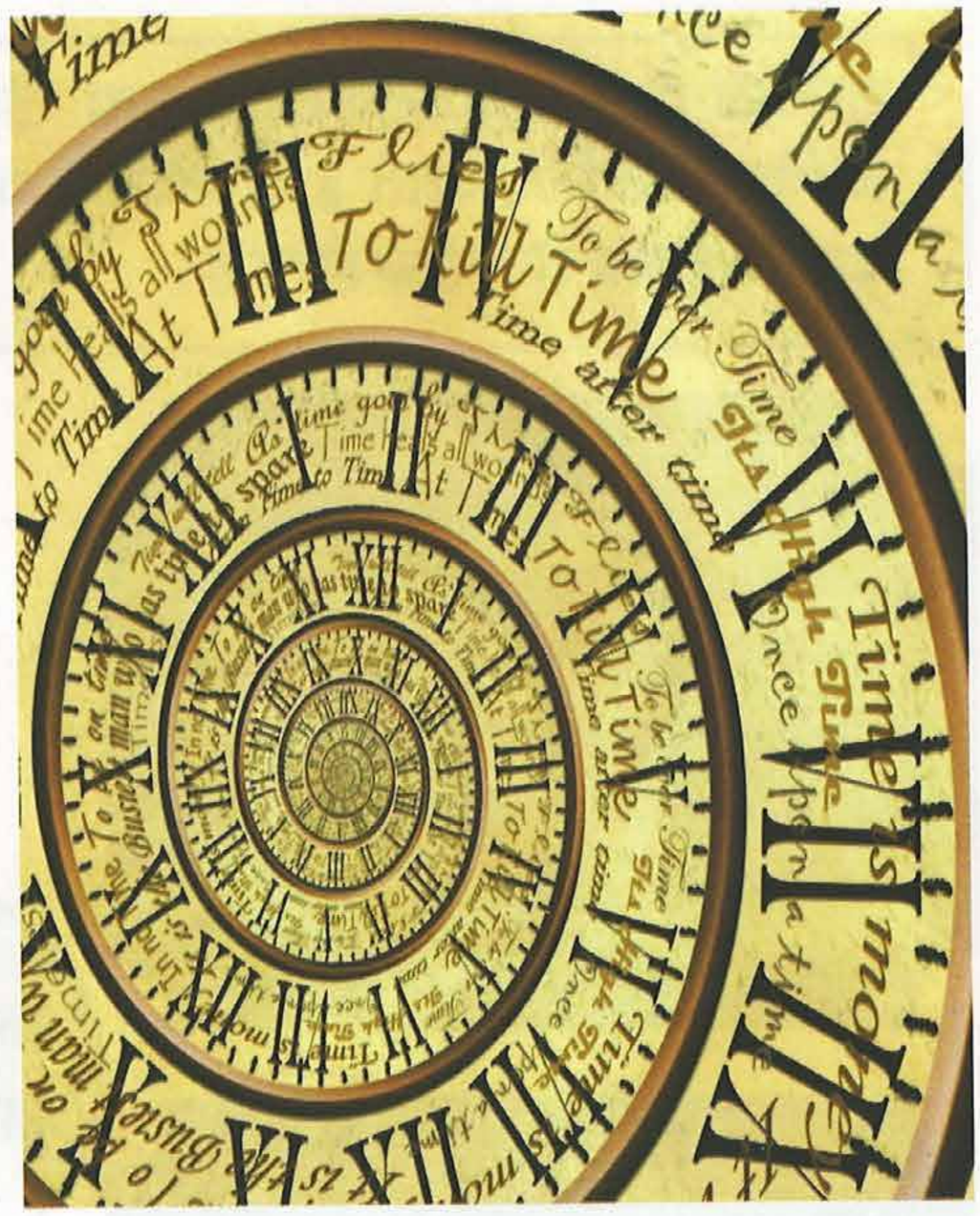

दूसरे अस्बाबे आयात

बाकी असबाबे आयात जब भी पेश आये फ़ौरन नमाज़ पढ़े

अगर किसी को मुकम्मल सूरज या चाँद ग्रहण का पता ना चले तो पता चलने पर कज़ा अंजाम दें।

अगर पूरा ग्रहण न हो और पता ना चले तो उसकी कज़ा वाजिब नही है।

हालते हैज़ व निफ़ास मे औरत पर और ना बालिग दीवाने पर नमाज़े आयात वाजिब नहीं है। ना अदा और न ही कज़ा।



हज़रत इमाम काज़िम अ.स: जब रसूल अल्लाह के फरज़न्द जनाबे इब्राहीम का इनतेक़ाल हुआ तो तीन चीजें ज़ाहिर हुई एक तो वक़्त इनतेक़ाल सूरज को ग्रहण लगा। यह देखकर लोगो ने कहा के रसूल अल्लाह के बेटे की मौत की वजह से सूरज को ग्रहण लगा हैं। पैग़म्बर स.अ. मिम्बर पर तशरीफ़ ले गऐ और अल्लाह की हम्दो सना के बाद फ़रमाया के ऐ लोगों सूरज-चाँद ग्रहण अल्लाह की निशानियों में से है। यह अल्लाह के हुक्म से चलते हैं। उसके फ़रमॉबरदार है। इनको किसी की मौत या हयात पर ग्रहण नहीं लगता। अगर इन्हें ग्रहण लगा तो तुम नमाज़ पढ़ो फिर आप मिम्बर से उतर आये और लोगों के साथ सूरज ग्रहण की नमाज़ पढ़ो।

नमाज़े नाफ़िला की अहमियत

नाफ़िल के मायनेः लुग़त में अता हिबा और ज़्यादा के है। नमाज़े मुस्तहब को नाफ़िला इसलिए कहते है के क्यों के यह नमाज़ फ़रीज़ा से ज़्यादा होती है। इससे बन्दॉ अल्लाह से क़रीब होता है।

फज़ीलते नाफ़िला

हज़रत इमाम सादिक़ अ.स. सुस्ती से परहेज़ करो बेशक तुम्हारा रब रहीम है। इंसान शुक्रे इलाही की ख़ातिर दो रकअत नमाज़ पढ़े तो अल्लाह उसको उन दो रकअतो के हमराह जन्नत में दाख़िल करेगा।

हज़रत इमाम बाक़िर अ.स. बेशक बन्दें की नमाज़ किसी की आधी किसी की तिहाई किसी की चौथाई नमाज़ कुबूल होती है। नमाज़ वही कुबूल होती है के जो दिल से अदा की जाये। लेहाज़ा हमने नाफ़िला का हुक्म दिया ताके जो नमाज़ में नुक़्स रह जाये वह नाफ़िला से पूरा हो जाये।

हज़रत इमाम सादिक़ अ.सः बेशक बन्दा जब नाफ़िला नमाज़ में होता है तो अल्लाह ताज्जुब के साथ फ़रिश्तों से कहता है के ऐ फ़रिश्तों मेरा बन्दा वह अदा कर रहा है जो मैनें उस पर वाजिब नहीं किया।

हज़रत इमाम सादिक़ अ.सः से सवाल हुआ के अल्लाह के नज़दीक महबूब तरीन चीज़ क्या है। जिसके ज़रिये बन्दा उसका क़ुब हासिल करे ? तो आपने जवाब दिया खुदा की मारेफ़त के बाद नमाज़ की मारफ़ेत से अफ़ज़ल कोई चीज़ नही है।

जिस दिन नाफ़िला नमाज़ की तौफ़ीक हो जाए वह दिन दूसरे दिनों से मुमताज़ हो जाता है। नाफ़िला नमाज़ दिल में अल्लाह से खौफ़ का अहसास पैदा कर देती हैं।

हज़रत इमाम सादिक़ अ.स. : जब कोई मुसीबत व ग़म में मुबतला हो तो उसे किसने मना किया है, कि वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ पढ़े और अल्लाह से दुआ करे। क्या तुमने नही सुना के अल्लाह फ़रमाता है कि नमाज़ और सब्र से मदद तलब करो।

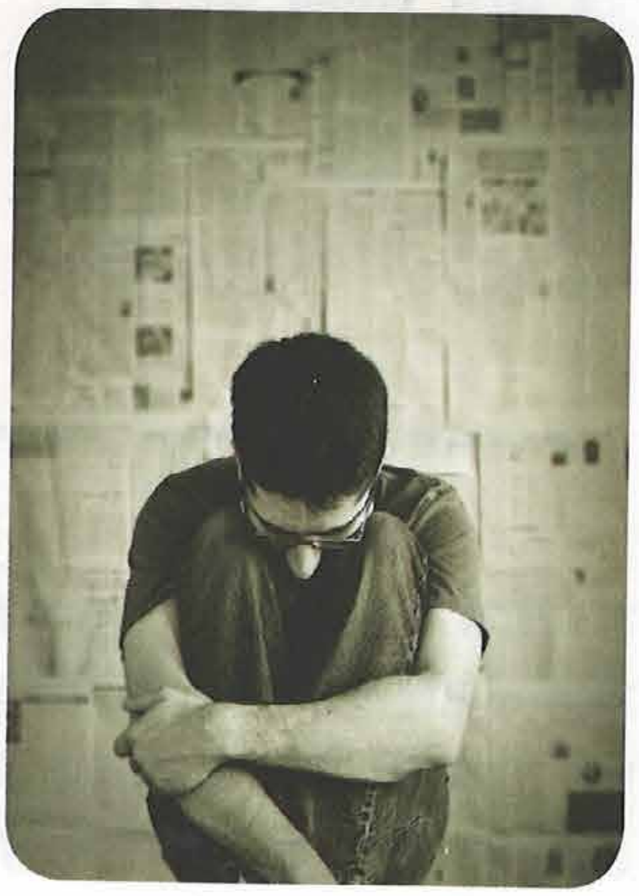

नमाज़े शब

नमाज़े शब ग्यारह रकअत हैं। पहली आठ रकअत नमाज़े शब, दो रकअत नमाज़े शफ़ा और एक रकअत नमाज़े वितर है।

इसकी अहमियत

कुरआन में ज़िक्रः रात में तहज्जुद है। यह आपके लिए नाफ़िला है। उम्मीद है के अल्लाह तुमको मुक़ाम महमूद अता करे।

इसकी ताक़ीदः हज़रत इमाम सादिक़ अ.सः- रात का क़ियाम यानी नमाज़ शब तर्क ना करो। इसका एहतराम ना करना खुदा को धोका देने के मानिन्द है।

इसका सवाबः कोई "ख़्स नही जानता के नमाज़े शब में क्या अज्र पोशीदा है और नमाज़े शब आखों की ठंडक है।

इसके आसार

हज़रत नबी अकरम स.अः नमाज़े शब पढ़ो कि यह सालेहीन की सवारी है, अल्लाह से क़रीब करती है, गुनाहों से बचाती है।

हजरत अली अ.सः नमाज़े शब बदन को सेहत देती है, नबियों के अख़लाक़ से मिलती है, अल्लाह को राज़ी करती है।

हज़रत इमाम सज्जाद अ.सः से पूछा के नमाज़े शब पढ़ने वालो का चेहरा खूबसूरत क्यों होता है? आपने फ़रमाया क्यों कि वह तन्हाई में अल्लाह के हुज़ूर में होते हैं। खुदा उनको अपना नूर अता करता है।

हज़रत इमाम सादिक़ अ.सः अल्लाह फ़रमाता है कि नेकियाँ बुराईयों को ख़त्म कर देती हैं। फिर फ़रमाया के नमाज़े शब मोमिन के उन गुनाहों को ख़त्म कर देती है जो उसने दिन में अंजाम दिए हैं।

नमाज़े शब

नमाज़े शब का वक़्तः

★ इसका वक़्त आधी रात के बाद शुरू होता है। अफ़ज़ल यह है कि वक़्त सहर पढ़ी जाये।
★ अगर मुसाफ़िर को नमाज़े शब कज़ा होने का ख़ौफ़ हो तो आधी रात से पहले भी पढ़ सकता हैं।
★ निस्फ़े शब से पहले वह जवान भी पढ़ सकता है जिसे नींद के गलबे का ख़ौफ़ हो या कोई उज्र हो।
★ अगर निस्फ़े शब से पहले पढ़े तो लाज़मी है के नियते ताजील से पढ़े अदा की नियत से नहीं।

नमाज़े शब का तरीकाः

8 यह 8 आठ रकअत नमाज़ है दो-दो रकअत करके इस तरह पढ़े के पहली रकअत में सूरा-ए-हम्द के बाद सूरा-ए-काफेरून और दूसरी रकअत में हम्द के बाद कोई भी सूरा पढ़े और तशह्हुद सलाम के बाद नमाज़ तमाम करे।

2 दो रकअत नमाज़े शफ़ा जिसकी पहली रकअत में सूरा-ए-हम्द के बाद सूरा-ए-नास और दूसरी रकअत में हम्द के बाद सूरा-ए-फ़लक पढ़े फिर तशह्हुद सलाम के बाद नमाज़ तमाम करें इस नमाज़ मे कुनूत नहीं है।

1 1 एक रकअत नमाज़े वित्र जिसमें सूरा-ए-हम्द के बाद सूरा-ए-तौहीद तीन मर्तबा सूरा-ए-फ़लक एक मरतबा सूरा-ए-नास एक मर्तबा फिर कुनूत में सात मर्तबा अल्ला हुम्मा हज़ा मुक़ामुल आइज़ो बेका मिनन्नार पढ़कर 70 मर्तबा अस्तग़फ़िरूल्लाहा रब्बी व अतुबो इलैह और 300 बार अलअफ़ो पढ़े, फिर 40 मोमिनो के नाम ले तशह्हुद सलाम के बाद नमाज़ तमाम करे।

नमाज़ की कैफ़ियत

नमाज़े वहशत को नमाज़े हदिया-ए-मय्यित या क़ब्र कहते है रिवायत है कि इसको शबे दफ़न में पढ़ा जाये इसका तरीक़ा यह है।

तरकीबः यह दो रक़अत नमाज़ है इसकी पहली रक़अत में सूरा-ए-हमद के बाद एक बार आयतुल कुर्सी पढी जाती है ।जो यह है

अल्लाहो ला इलाहा इल्लाहुवा अल हय्युल क़य्यूम ला ताखुजुहु सिनातुव वला नौम लहु माफ़िस्समावाति वमा फिल अर्ज़ि मन ज़ल्लजी यश फ़ऊ इन्दाहु इल्ला बेइज़्नेहि याअलमु मा बैना ऐदिहिम वमा ख़लफ़ाहुम वला युहीतूना बिशैइन मिन इलमेही इल्ला बिमाशाआ वसेआ कर्सियो हुस्समावाति वल अर्ज़ वला यऊदुहु हिफ़्ज़ोहुमा व होवल अली युल अजी़म ला इकराह फ़िद्दिन क़दताबय्यनर रूशदो मिनल गय्ये फ़मंयकफुर बित्तागूते व यौमिम बिलाहे फ़क़दिस्तमसका बिल ऊरवा तिल वुसका लन फ़िसामा लहा वल्लाहो समी उन अलीम अल्लाहो वली युल लजी़ना आमनू यूख़रेजो हुम मिनज़ जुलुमाते इलन नूर वल्लज़ीना काफ़रू औलियाओ हुमुत्तागूतो युखरे जूना हुम मिनन नूरे इलज़्जुलुमाते उलाइका असहाबुन नारे हुम फ़ीहा खालेदून।



दूसरी रकअत में सूरा-ए-हम्द के बाद दस मरतबा सूरा-ए-क़द्र फिर तशह्हुद सलाम के बाद यह कहें अल्लाहुम्मा सल्लेअला मौहम्मदिन व आले मौहम्मद वबअस सवाबाहा इला क़ब्रे (फ़िर मय्यत का नाम ले)

एक दूसरी तरकीब यह है पहली रकअत में सूर-ए-हम्द के बाद दो बार सुरा-ए-तौहीद दूसरी रकअत में हम्द के बाद 10 बार सूर-ए-तकासुर पढें और नमाज़ के बाद दुआए मज़कूर पढ़े।

रसूले अकरम स.अ.: हर रोज़ यह नमाज़ पढ़ना दुनिया व आख़ेरत की नेआमतो से बेहतर है यह गुनाहो कि बख़शिश का ज़रिया है दूसरी रिवायत में है कि अगर हो सके तो हर रोज़ यह नमाज़ पढ़ो अगर हर रोज़ मुमकिन ना हो तो हफ़्ते में एक दिन और अगर यह भी मुमकिन ना हो तो तमाम उम्र में एक मर्तबा ज़रूर पढ़ो। खुदा बन्दे आलम गुनाहाने कबीरा व सगीरा को ताज़ा हो या पुराने अमदन हो या सहवन बख़्श देगा। अगर कोई हाजत दर पेश हो तो इस नमाज़ के बाद तलब करे हाजत पूरी होगी। यह नमाज़ दो-दो रकअत करके पढ़ी जाती है।

तरकीब

जुमे के दिन सूरज के बलंद होने के बाद पढ़ना अफ़ज़ल है। यह चार रकअत नमाज़ है, पहली रकअत में सूरा-ए-हम्द के बाद सूरा-ए -ज़िलज़ाल पढ़े। दूसरी रकअत में हम्द के बाद सूरा-ए-आदेयात तीसरी रकअत में हम्द के बाद सूरा-ए-नास चौथी रकअत में हम्द के बाद सूरा-ए-तौहीद पढ़कर हर रकअत में क़िरअत के बाद 15 बार रूकू में 10 मरतबा रूकू से खड़े होकर 10 मरतबा सजदे में 10 मरतबा सजदे से उठकर फिर सजदे में 10 मरतबा फ़िर खड़ा होने से पहले 10 मरतबा तस्बीहाते अरबा पढ़ो।

हज़रत इमाम सादिक अ.स: ने अबूसईद मदायनि से फ़रमाया- क्या में तुमको वह चीज़ सिखाऊँ जो तुम नमाज़े जाफरे तैय्यार में पढ़ो ? अबू सईद ने कहा के हां यबना रसूल अल्लाह,हज़रत ने फरमाया- आख़री सजदे की तस्बीहात से फ़ारिग होकर पढ़ो, सुबहाना मन लबेसल इज़्ज़ोवल वक़ार सुबहाना मन तअत्तफ़ा बिल मजदे व तकर्रमाबेहि सुबहाना मन लायंबगी तस्बीहु इल्ला लहू सुबहाना मन आहसा कुल्लो शैइन इलमो-हु सुबहान ज़िल मन्ने वन्नेअम सुबहान ज़िल कुदरते वल करमे अल्ला हुम्मा इन्नी असअलोका बिमआक़िदिल इज़्ज़े मिन अर्शेका वमुन्तर्हरह मते मिन किताबेका व इस्मे कल आज़में व कलेमातेका तम्मतिल लती तम्मत सिदक़न व अदलन सल्ले अला मौहम्मदिन व अहले बैतेही वफ़अलबी फ़िर दुआ माँगे।

5

नमाज़ में ख़लल

मुबतेलाते नमाज़

इसमें हर वह चीज़ शामिल है जो नमाज़ की शक्ल बिगाड़ दे

किसी जुज़ या “ार्त का कम होना

जिस चीज़ से नमाज़ की शक्ल बाक़ी न रहे

जो चीज़े खिलाफे नमाज़ है

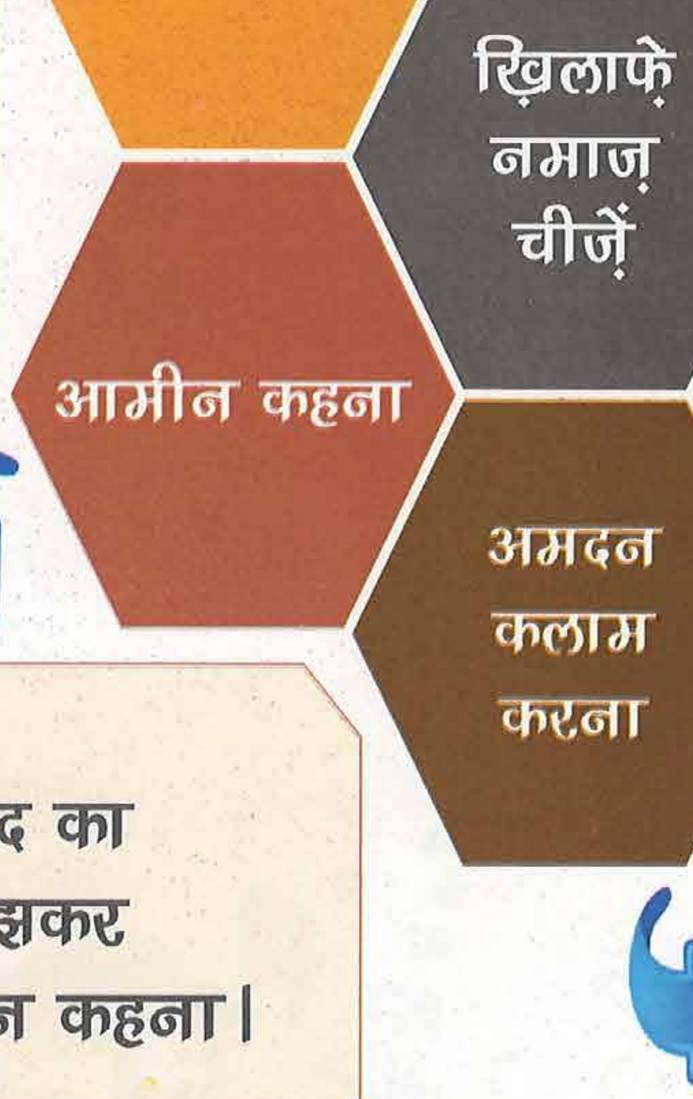

शक व ज़न

क़हक़हा लगाकर हंसना, तबस्सुम में कोई हरज नही है।

दुनिया के कामो के लिए रोना मगर सहवन रोने से नमाज़ बातिल नही होती है।

एक हाथ पर दूसरे हाथ को नमाज़ का जुज़ समझकर रखना।

सूर-ए-हम्द का जुज़ समझकर अमदन आमीन कहना।

जान बूझकार बातचीत करना, चाहे मायनेदार हो या बेमाना दुआ या ज़िक्र-ए-इलाही में कोई हरज नहीं है।

मौहम्मद बिन मुस्लिम कहते है कि मैं इमाम बाक़िर अ.स. के पास गया आप नमाज़ में मशगूल थे। मैनें कहा अस्सालामों अलैका तो आपने भी कहा अस्सालामों अलैका। मैनें आपका हाल दरयाफ़्त किया तो आप ख़ामोश रहे बादे नमाज़ मैनें पूछा के क्या नमाज़ में जवाबे सलाम दिया जा सकता है ? तो आपने फ़रमाया कि वही अलफ़ाज़ कहे जो सलाम करने वाले ने कहे हैं।

जुज़ या शर्त का कम होना

अगर वाजेबाते नमाज़ में कोई ख़लल वाक़े हो जाये, जैसे अमदन क़िरअत या रूकू का तर्क करना या शराइत का तर्क करना, जैसे रू बाक़िबला ना होना या बा तहारत ना होना, नमाज़ बातिल कर देता है। इसी तरह वाजेबाते नमाज़ में किसी एक का भी अमदन इज़ाफा करने से नमाज़ बातिल हो जाती है।

जिन सूरतों में नमाज़ भूले से भी बातिल हो जाती है वह यह है:

1. रूकू छूट जायें यहा तक कि दूसरा सजदा भी कर ले।
2. दोनो सजदे छूट जायें, यहा तक कि रूकू में चला जाये।
3. बग़ैर वुज़ू या गुस्ल के नमाज़ पढ़ ले या दौराने नमाज़ वुज़ू टूट जाये।
4. ऐसा काम जिससे नमाज़ की सूरत बाक़ी ना रहे जैसे, उछलना, कूदना।
5. भूले से नजिस बदन या लिबास में नमाज़ पढ़ना।
6. नमाज़ रू बाकिबला ना पढ़ी हो और वक़्त तमाम होने से पहले इल्म हो जाए।
7. अगर नमाज़ क़बल अज़ वक़्त पढ़ ली जाये।
8. मुकम्मल रकअत का कम या ज़्यादा होना।

वह सूरते जिनमे सहवन नमाज़ बातिल नही है।

बशर्ते तदारूक		
सुरते ख़लल	याद आने का वक़्त	तदारूक
तर्के तकबीरतुल अहराम सहवन या जहलन	रूकु से पहले	तकबीर कहकर फिर से क़िरअत "ुरू करें
अगर क़िरअत में कुछ भुल जाये	रूकु से पहले	जो भुला हो उसेअंजाम दें
अगर रूकू छूट जाये	उसी रकअत के दूसरे सजदे से पहले	खड़े हों फिर रूकू करें और बाकी नमाज़ पढ़ें
अगर एक रकअत के दोनो या एक सजदा छूट जाये	अगली रकअत के रूकू से पहले	बैठ जाये और सजदे अजाम दे और नमाज़ तमाम करें।
तशह्हुद छूट जाये	अगली रकअत के रूकू से पहले	बैठकर तशहहुद पढ़े और नमाज़ तमाम करें
आख़िरी रकअत क दोनो सज़दे या तशह्हुद या सलाम छूट जाये	खिलाफ़े नमाज़े कोई काम करने से पहले	जो भूला हो उसे अंजाम दे और उसके बाद के अमल को अंजाम देकर नमाज़ तमाम करें।

नोटः बाज़ सूरतो में सजदे सहव भी है, जिसको आगे बयान करेगें।

जिन सूरतों में नमाज़ बातिल नही होतीः

जहाँ तदारूक की ज़रूरत नही है।

क़िरअत या बाज़ ज़िक्र को भूल जाए	किसी भी रकअत का दूसरा सजदा भूल जाये।	आख़िरी रकअत का तशह्हुद या सलाम जाये नमाज़ के काफ़ी देर बाद याद आयें।
रूकू से उठकर याद आये	और अगली रकअत के रूकू मे याद आये	या नमाज़ के काफी देर बाद याद आये
ज़िक्रे रूकू भूल जाये	दूसरी रकअत का तशहहुद या बाज़ लफ्ज़ भूल जाये	क़ियाम तर्क हो जाये और क़िराअत बैठ कर करे
रूकू से उठकर याद आये	और अगली रकअत के रूकू से उठकर याद आये	क़िराअत तमाम होने के बाद याद आये
ज़िक्रे सजदा भूल जाये	आख़िरी रकअत का एक सजदा भूल जाये	जेहर व इख़फ़ात भूल जाये
सजदे के बाद याद आये	और नमाज़ तमाम होने या वक़्त गुज़रने के बाद याद आये	क़िराअत के दौरान याद आये

नोटः बाज़ चीज़ों की कज़ा भी है जो आगे ब्यान करेंगें।

शक व ज़न

शकः जब किसी काम को करने या न करने मे मुकल्लफ़ की फ़िक्र बराबर 50–50 हो।

ज़नः जब एहतेमाल का रूजहान किसी एक सिमत हो जाए। 80–20

इत्मिनानः जब एहतेमाल इतना क़वी हो जाए के करीबे यकीन हो।

शक की दो सूरतें मुमकिन है–

- अफ़आल में शक,
- रकत की तदाद में शक

जब एहतेमाल किसी एक तरफ हो जाए तो मुकम्मल उसी पर अमल करे जैसे कोई गुमान करें कि सजदे कर लिए तो उसी पर बिना रखे।

अगर किसी को यह इत्मिनान हो जाये कि जो अमल उसने अंजाम दिया है, वह सही है तो उसी के मुआफ़िक़ अमल करे।

नबी-ए-अकरम स.अः बेशक यह दीने मतीन है, इसमें मेल मौहब्बत से रहो और किसी को इबादत के लिए मजबूर ना करो वरना उस बाग़ी घोड़े की तरह हो जाओगे जो ना सवार होने दे और न मंजिल तक पहुंचा सके।

हज़रत इमाम सादिक़ अ.सः जो हर तीसरी बार शक में मुबतेला हो जाये वह कसीरूश्शक है।

कसीरूश्शाक और वसवासी

कसीरूश्शाकः जिसके शाक में तकरार होती रहती हो, चाहे वह किसी खास अमल में हो या हर अमल में।

वसवासीः जिसको इस हद तक शाक होता हो के वह किसी नतीजे तक नही पहुंच पाये और उसको मरीज़े शाक कह सके।



1- कसीरूश्शाकः अगर शाक करे कि उसने नमाज़ पढ़ी या नही तो वह यह समझे के उसने नमाज़ पढ़ी है।

2- कसीरूश्शाक को अगर रकअत में शाक हो तो ज़्यादा पर बिना रखे, लेकिन अगर ज़्यादा पर बिना रखना नमाज़ के ख़राब होने का सबब हो तो कम पर बिना रखे।

3- अगर कसीरूश्शाक रूकू में शाक करे तो वह रूकू करने पर बिना रखे।

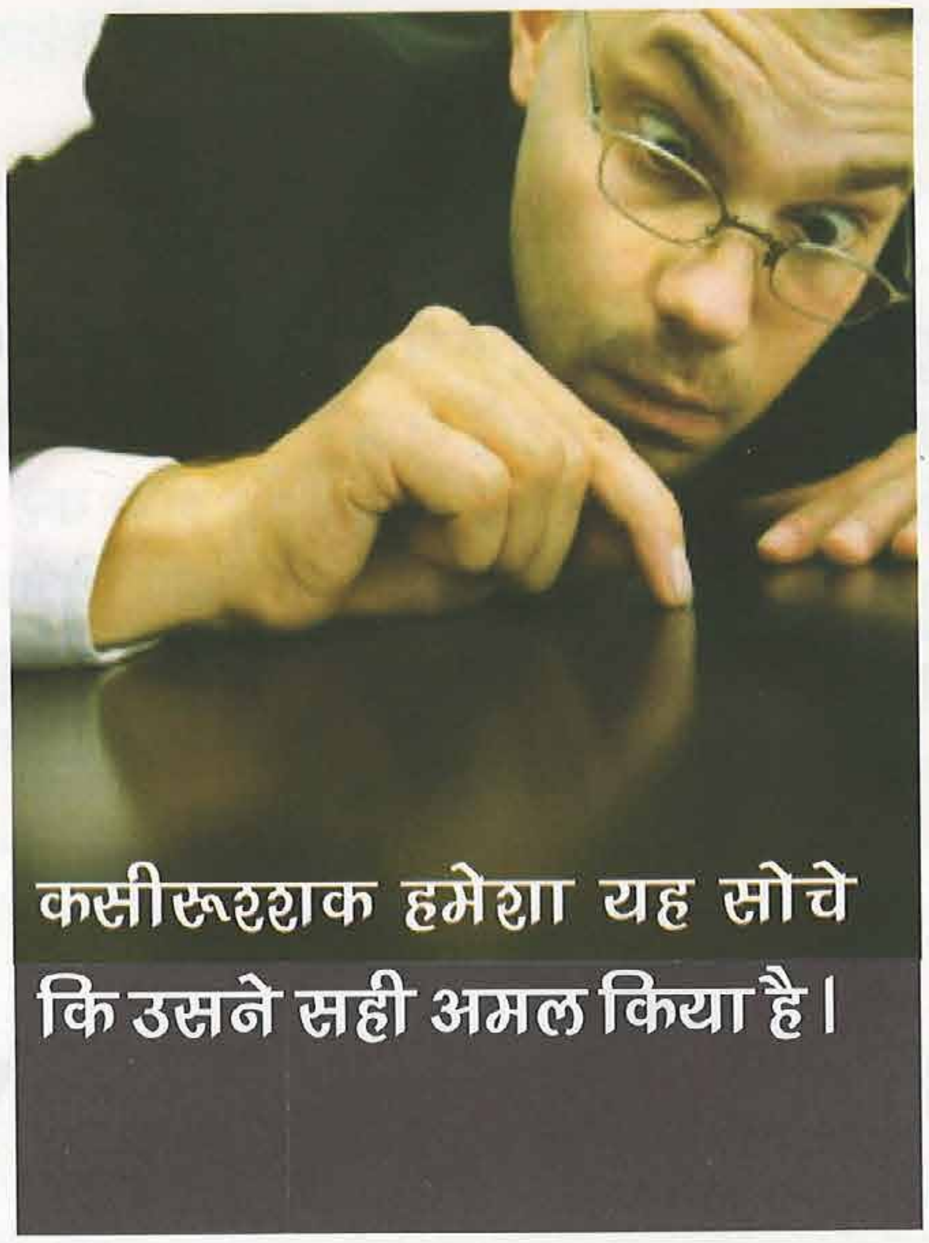

कसीरूश्शाक हमेशा यह सोचे कि उसने सही अमल किया है।

कसीरूश्शाक के लिए जायज़ नही है कि शाक की परवाह करे, लिहाज़ा जिस चीज़ में शाक हो अगर उसको बजा लाये तो उसकी नमाज़ बातिल है।

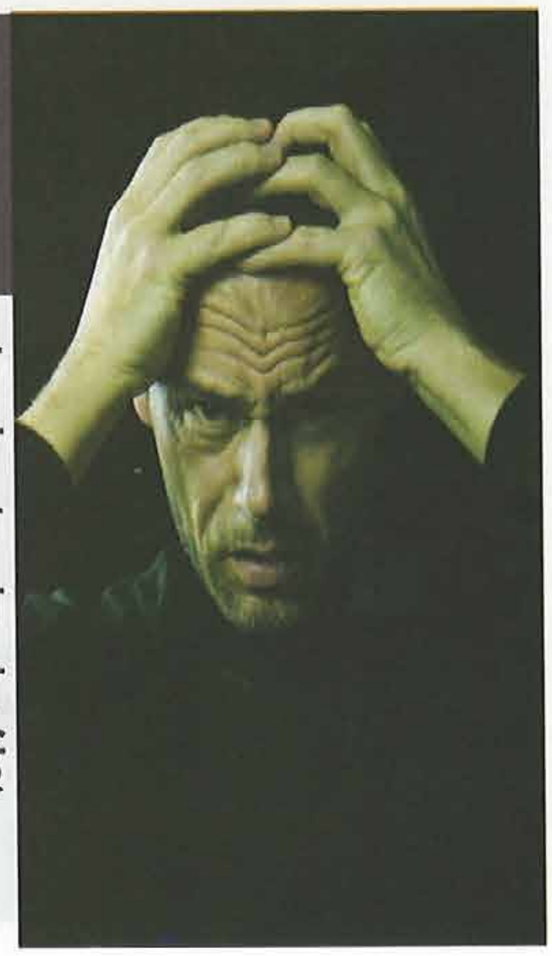

हज़रत इमाम सादिक अ.सः नमाज़ तोडने के ज़रिये अपने नफ्स को शैतान का मुती ना बनाओ। क्योंकि शैतान नमाज़ तोड़ने की आदत ड़ाल देता है और वहम में मुबतला कर देता है। लिहाज़ा ज़्यादा नमाज़ को ना तोडो और अगर कोई अमल की तकरार करता रहता है तो फिर शाक में मुबतला नही होता। ज़ुरारा फ़रमाते है कि फिर आपने फ़रमाया, शैतान गुनाह में अपनी इताअत चाहता है, जब कोई गुनाह कर लेता है तो शैतान उससे दूर चला जाता है।

काएदा

जब नमाज़ी वाजेबाते नमाज़ में से किसी एक वाजिब में शक करे तो बिना रखे कि उसने उसको अंजाम नही दिया और उसको अंजाम दे मगर नीचे लिखी चीज़ेमज़कूरा कायदे से ख़ारिज है।

मुकाम गुज़र जाने के बाद शक करे जब के दूसरे जुज़ में मशगूल हो चाहे वह जुज मुसतहब ही क्यों ना हो।

अगर किसी जुज़वे नमाज़ के सही होने या न होने मे शक करे तो वह सही होने पर बिना रखे, चाहे उसका महल गुज़रा हो या ना गुज़रा हो।

अगर नमाज़ को उसके शराइत के साथ शुरू करे फिर शक करे के वह शराइत बाक़ी है या नही तो उसकी परवाह न करे और नमाज़ जारी रखे।

सुरा पढते वक़्त तकबीर तुल अहराम में "ाक करे या रूकू मे पहुचं कर सूरे मे "ाक करे या कुनूत पढते वक़्त क़िराअत मे "ाक करे या सजदे की हालत मे रूकू के बारे मे "ाक करे तो वह यह समझे कि उसने इन्हें अंजाम दे दिया है और नमाज़

जैसे कोई तकबीरातुल अहराम कहे और सही होने में शक करे तो उसके सही होने पर बिना रखे चाहे उसने क़िराअत शुरू भी न की हो। इसी तरह ज़िक्र रूकू में सजदा और तशह्हुद के सही होने में शक करे तो सही होने पर बिना रखे।

जैसे कोई हालत नमाज़ में शक करे के वक़्ते नियत तो रूबा किबला था मगर अब वह रूबाकिबला है या नही तो उसकी परवाह किये बगैर नमाज़ जारी रखें। इसी तरह अगर औरत वक़्ते नमाज़ हिजाब में थी फिर शक करे के अब वह हिजाब में है या नही तो परवाह किये बग़ैर नमाज़ जारी रखे।

रकअत की तदाद में शक

हालते नमाज़ में रकअतों में शक की तीन क़िस्में है। मुबतिल शक, गैर मुबत्तिल शक के जिनका नमाज़ पर कोई असर नही होता और वह शक कि जिनका तदारूक मुमकिन है

नमाज़ को बातिल करने वाले शकः

उन तमाम शक्कियात के अलावा जिनमें नमाज़ सही है चाहे तदारूक के ज़रिये या बगैर तदारूक के बाक़ी तमाम शुकूक नमाज़ को बातिल कर देते है।

1. नमाज़ी को मालूम ना हो क वह कौन सी रकअत में मशगूल है और ज़हन भी कोई फ़ैसला नही कर पा रहा है तो नमाज़ बातिल है दोबारा पढ़े।

2. चार रकअती नमाज़ के अलावा तादादे रकअत में शक हो जैसे मग़रिब या सुबह की नमाज़ या चार रकअती नमाज़ की पहली दूसरी रकअत में शक हो तो नमाज़ बातिल है।

3. दूसरे सजदे से सर उठाकर चार रकअती नमाज़ की रकअत में नमाज़ी को तरद्दूद हो जैसेः
   1- दूसरे सजदे से सर उठाकर शक करे के यह पहली रकअत है या दूसरी है।
   2- पहले सजदे से सर उठाकर शक करे के यह दूसरी रकअत है या तीसरी तो नमाज़ बातिल है।

रकअत की तदाद में शक

वोह शक जिनकी परवाह ना करें:

वह शक जिनके पेश आने पर नमाज़ पर कोई फर्क नही पड़ता यह है:

1. हालते तशह्हुद में शक करे के यह दूसरी रकअत मुकम्मल हुई है या पहली रकअत है और तशह्हुद सहवन प्ढ़ दिया,तो बिना रखेगा के दूसरी रकअत है और नमाज़ जारी रखे।

2. तशह्हुद मुकम्मल होने के बाद दूसरी रकअत के तमाम होने का तो यकीन हो मगर शक करे कि यह चौथीं रकअत है या तीसरी रकअत और तशह्हुद सहवन पढ़ लिया तो चौथीं रकअत पर बिना रखे और नमाज़ को तमाम करे।

3. तीन रकअती नमाज़ के सलाम में मशगूल हो और शक करे कि यह तीसरी रकअत है या दूसरी और सलाम सहवन पढ़ा गया तो तीसरी रकअत पर बिना रखे और नमाज़ तमाम करे।

रकअत की तदाद में शक

काबिले इस्लाह शक

चार रकअती नमाज़ में वह शुकूक के जिनसे नमाज़ बातिल नही होती खुसूसन शक की आने वाली नौ सूरतो में।

शक	शक की जगह	हुक्म
दूसरी और तीसरी रकअत में शक	दूसरे सजदे के ज़िक्र के बाद	तदारूक तीसरी पर बिना रखे नमाज़ के बाद एक रकअत नमाज़े एहतियात पढ़े।
तीसरी और चौथीं रकअत में शक	किसी भी जगह	चौथीं रकअत पर बिना रखे और नमाज़ तमाम करे और एक रकअत नमाज़े एहतियात पढे
दूसरी और चौथीं रकअत में शक	दूसरे सजदे के ज़िक्र के बाद	चौथीं रकअत पर बिना रखे और नमाज़ के बाद दो रकअत नमाज़े एहतियात पढ़े।
दो, तीन और चार रकअत में शक हो	दूसरे सजदे के ज़िक्र के बाद	चार पर बिना रखे और नमाज़ के बाद दो रकअत नमाज़े एहतियात खडे होकर और दो रकअत बैठकर पढ़ें।
चौथीं और पांचवी रकअत में शक	दूसरे सजदे के ज़िक्र के बाद	चार पर बिना रखे और नमाज़ के बाद दो सजदे सहव करे।

रकअत की तदाद में शक

काबिले इस्लाह शक

शक	शक की जगह	हुक्म
चौथीं और पांचवी रकअत में शक	क़ियाम की हालत में	फौरन बैठ जाये और तीन और चार रकअत भाक के मुआफ़िक़ अमल करें।
तीसरी और पाचवी रकअत में शक	क़ियाम की हालत में	फौरन बैठ जाये और दो और चार रकअत "ाक के मुआफ़िक़ अमल करें।
तीन,चार और पाचं रक़अत में "ाक हो	क़ियाम की हालत में	फौरन बैठ जाये और तीन और चार रकअत "ाक के मुआफ़िक़ अमल करें।
पाचं और छः रकअत में "ाक हो	क़ियाम की हालत में	फ़ौरन बैठ जाये और नमाज़ के बाद दो सजदा-ए-सहव करे।

अगर नमाज़ी नाफ़िला नमाज़ पढ़ रहा है और रकअतों की तादाद में शक हो तो कम पर बिना रखे और नमाज़ तमाम करे या ज़्यादा पर बिना रखे शर्ते के ज़्यादा पर बिना रखना नमाज़ के फ़ासिद होने का सबब ना हो।

मज़कूरा सूरतो में सजदे सहव क़ियामे बेजा की बिना पर है और यह नमाज़ तमाम होने के बाद उसका तदारूक है।

नमाज़े एहतियात

नमाज़े एहतियात वह नमाज़ है जो बाज शुकूक की सूरतो में रकअतो की तादाद की इसलाह के लिए पढ़ी जाती है।

रकअते एहतियात

नियत

तकबीरतुल अहराम

सिर्फ सूरए हम्द

रूकू

कियाम

दो सजदे

तशह्हुद व सलाम

नमाज़े एहतियात में उन तमाम शराइत का लिहाज़ ज़रूरी है जो नमाज़ में वाजिब है जैसे तहारत व रूबा क़िबला होना या हिजाब वग़ैरह।

कभी नमाज़े एहतियात दो रकअत होती है तो उसमें दूसरे सजदे के बाद खड़े होकर पहली रकअत की तरह दूसरी रकअत को अंजाम देकर तशह्हुद सलाम पढ़ा जाता है।

नमाज़े एहतियात में आज़ान व इक़ामत और कुनूत नही है।

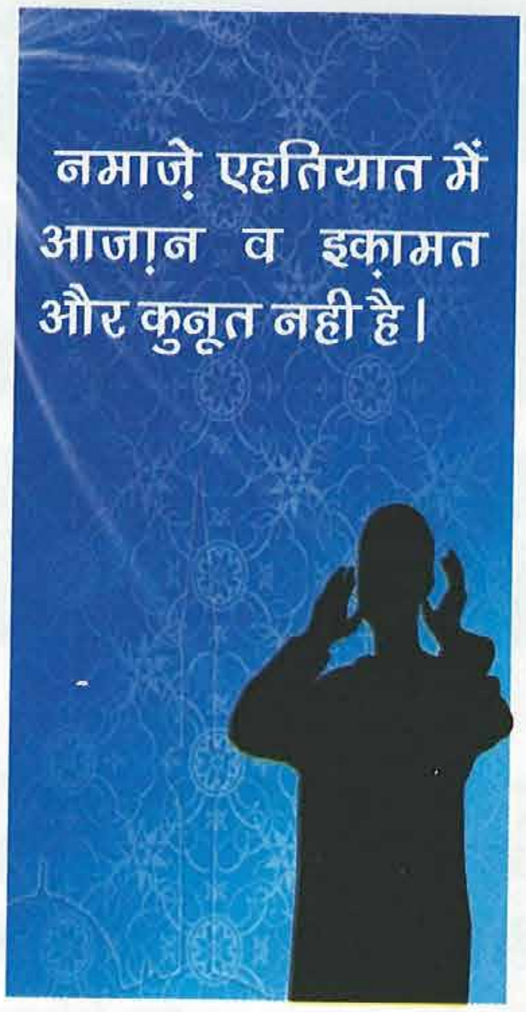

नमाज़े एहतियातः नमाज़ के फौरन बाद और ख़िलाफ़े नमाज़ अमल अंजाम देने से पहले ज़रूरी है।

अगर नमाज़े एहतियात की अदायगी में शक करे तो बिना रखे कि उसने नहीं पढ़ी। अगर वक़्त गुज़रने के बाद शक करे, तो कोई परवाह ना करे या नमाज़े एहतियात पढ़ने के बाद उस चीज़ के बारे मे "क करे जिससे नमाज़ बातिल होती है सहवन अमदन।

सजदा-ए-सहव

सजदा-ए-सहवः ख़ास कैफ़ियत से दो सजदे है जो वाजिब है और बाज़ सूरतो में नमाज़ सही होने के लिए बतौरे तदारूक अंजाम दिये जाते हैं। मुक़ामाते सजदा-ए-सहव यह हैं।

1. नमाज़ में भूले से कलाम करना।
2. आख़री सजदे का ज़िक्र मुकम्मल होने के बाद चौथी, पांचवी रकअत में शक हो।
3. हालाते क़ियाम में पांचवी, छठी रकअत में शक हो।
4. एक सजदा भूल जाये।
5. तशह्हुद का तमाम या कुछ हिस्सा भूल जाये।
6. रूकू के बाद क़ियाम किये बगैर सजदे में चला जाये।
7. बेजा सलाम पढ़ना चाहे उसका एक ही कलमा क्यों न हो।
8. क़ियाम का ज़्यादा होना जैसे खड़े होकर याद आये के तशह्हुद नही पढ़ा।

क्या आप जानते है?



बेहतर यह है के सजदा-ए-सहव को इन्ही जगहो पर मुनहसिर ना समझे बल्कि हर कमी या ज़्यादती के लिए सजदे सहव अंजाम दिया जाता है।

सजदा-ए-सहव का तरीका

नियत करके सजदे में यह पढ़े बिसमिल्लाहे व बिल्लाहे अस्सलामो अलैका अय्यो हन्नबियो वरहमतुल्लाहे व बरकातोहू। फिर बैठे और पहले सजदे की तरह दूसरे सजदे के बाद तशह्हुद व सलाम पढकर नमाज़ तमाम करें।



सजदा-ए-सहव में रूबकिबला या तहारत वग़ैराह की शर्त नही है।

अगर असबाब अलग-अलग हो तो सजदा-ए-सहव भी अलग-अलग होंगे जैसे भूले से कलाम करना ओर क़ियामे बेजा तो अलग-अलग दो बार दो-दो सजदा-ए-सहव करने पड़ेंगे।

नियत के सबब को मोअय्यन करना वजिब है और अगर मुख़तलिफ़ असबाब से सजदे वाजिब हुए हैं तो तरतीब भी वाजिब नहीं है।

अगर किसी पर सजदा-ए-सहव नमाज़े एहतियात और किसी जुज़ की कज़ा तीनो, वाजिब हैं तो पहले नमाज़े एहतियात फिर भूले हुए जुज़ की कज़ा फिर सजदा-ए-सहव को अन्जाम

सजदा-ए-सहव को नमाज़ के फ़ौरन बाद अंजाम देना वाजिब है और अगर भूल जाये तो ज़ब भी याद आये फौरन अंजाम दें।

आदाबे नमाज़

हज़रत इमाम बाक़िर अ.सः जब नमाज़ के लिए खड़े हो तो क़ियाम में पैरो को मिला लो उनके दरमियान कम से कम एक अंगुशत और ज़्यादा से ज़्यादा एक बालिशत का फ़ासला रखो अपनी उंगलियों को बंद न रखो उन्हें खुला रखो तुम्हारे हाथ रानो पर रहें। नज़रें सजदागाह पर रहे और रूकू में पैरो के दरमियान एक बालिशत का फ़ासला रखें। और हथेलियों को घुटनों पर टेक दो और दाहने घुटने पर दाहने हाथ को बांये घुटने पर बांये हाथ को रखो और अपनी उंगलियाँ घुटनो पर खोलकर रखें। बन्द करके ना रखे। रूकू में झुककर गर्दन को लम्बा कर लो मगर निगाहें दोनो पैरो के दरमियान रखे। और जब सजदे में जाओ तो पहले तकबीर कहो फिर सजदा करो और घुटनो से पहले दोनो हाथो को ज़मीन पर एक साथ रखो और हाथो के साथ कोहनियों को ज़मीन पर न रखो और ना रूकू में हाथ के साथ कोहनियों को पहलू से मिलाओ हाथ लम्बाई में सामने की तरफ़ ज़मीन पर रखो अगर हाथो के नीचे कोई कपडा है तो कोई हर्ज नही है मगर सजदे में उंगलियां खुली हुई न रखो बल्कि मिली हुई रखो तशह्हुद में बैठो तो घुटनो को थोडा फ़ासला दो दाहिना पैर बांये पैर पर रखे। और कूल्हो को जमीन पर रखे। और दाहिने पैर का अंगूठा ज़मीन पर रखे। दोनो पैरो पर बैठकर खड़े ना हो बल्कि हाथो को टेक कर खड़े हो तमाम आजा़ से एक साथ खड़े हो।





मुसाफ़िर की नमाज़

सिर्फ चार रकअती नमाज़ क़स्र होती है (ज़ोहर, अस्र और इशा) जिनका ज़िक्र नीचे आयेगा।

लाज़िम है कि हम पहले अक़्सामे वतन को पहंचाने ताकि हुकमें मुसाफ़िर वगैराह पहचान सके। वतन की क़िसमें यह है।

1. **वतने असली** — आबा व अजदाद का वतन चाहे वहां पैदा न हुआ हो और रहता भी ना हो जब तक उसे तर्क न किया जाये

2. **वतने दायमी** — जहां पर मुकल्लफ़ ने सुकूनत इख़्तियार कर ली हो जैसे नजफ़ी करबला को वतन बना ले।

3. **वतने मुअक़्क़त** — वह शहर जहां कारोबार या पढ़ाई की खातिर सुकूनत इख़्तियार कर ले।

4. **खनाबदोश का वतन** — ख़ाना बदोश जहां भी ठहर जाये वही उसका वतन है।

क्या आप जानते है?

एक शख़्स के एक से ज़्यादा वतन भी हो सकते है। जैसे वतनें असली और वतने मुअ़ककत।

सफ़र में मुस्तहब नमाज़े साकित हो जाती है। मगर बा रिज़ा-ए- मक़बूलियत पढ़ी जा सकती है।

वतन का हुक्म उस वक़्त तक बाकी रहेगा जब तक हमेशा के लिए तर्के वतन करके दूसरी जगह सुकूनत इख़्तियार न कर ली जाये।

जब तुम सफ़र करो तो कोई हरज नही कि नमाज़ क़स्र पढ़ो।

सफ़र उस वक़्त तक नही होगा जब तक आठ फ़रसख़ का क़सद ना हो और यह तकरीबन 43.5 कि.मी. होता है।



अगर नमाज़ी यह समझे के उसने मसाफ़त पूरी कर ली तो नमाज़ क़स्र पढ़े, लेकिन बाद में पता चले कि मसाफ़त पूरी नही की तो अगर वक़्त है तो दोबारा पढ़े वरना कज़ा पढ़ें।

अगर नमाज़ी यह समझे के मसाफ़त पूरी नही हुई और नमाज़ पूरी पढ़ ले फिर पता चले के मसाफ़त पूरी कर ली तो अगर वक़्त बाकी है तो दोबारा पढ़े वरना कज़ा नहीं है।

अव्वले सफ़र से मसाफ़त शरईया की नियत हो पस अगर कोई तफ़रीहन कही चला जाये फिर वहा जाकर कही और जाने का इरादा बन जाऐ तो वह पहले तय की हुई मसाफ़त का हिसाब नही करेगा।

मसाफ़त की इबतेदा शहर के आख़री मकान से और जहां पर जा रहा है। उस शहर के पहले मकान तक होगी।

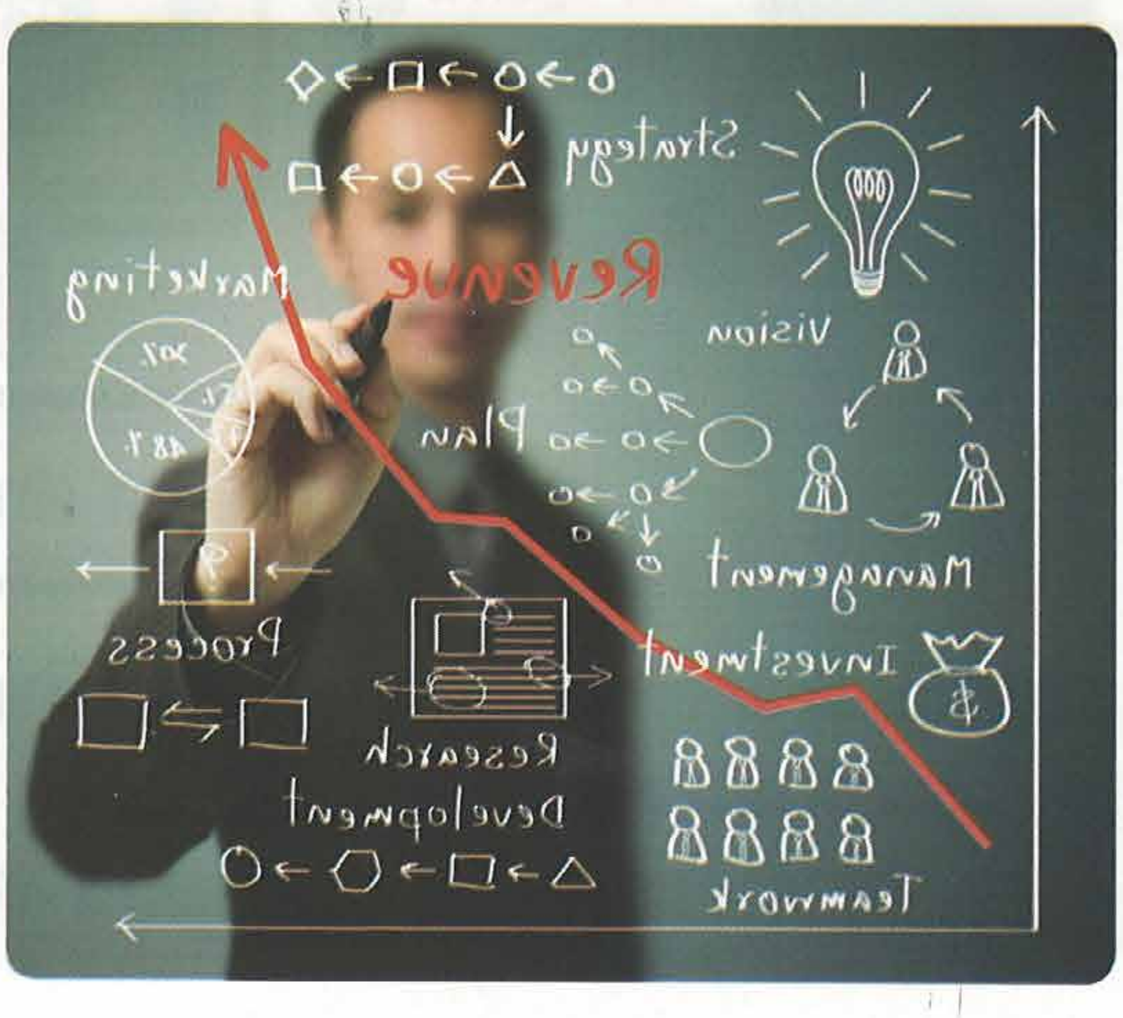

सफ़र में अगर हसबे ज़ैल चीज़ें पेश आ जायें तो हुक्मे सफ़र तब्दील हो जाता है।

वतन से गुज़रना

जब मुसाफ़िर वतन से गुज़रे तो चाहे वतन असली हो, मुअक़्क़त तो वहां हुक्में सफ़र ख़त्म हो जाता है।

दस दिन क़ियाम

मुसाफ़िर जहां दस दिन रहने की नियत रखता हो वहां हुक्में सफ़र ख़त्म हो जायेगा।

रूकने में तरद्दूद हो

मुसाफ़िर को दस तरद्दूद हो आज कल आज की सूरत में इकत्तिसवे दिन हुक्में सफ़र ख़त्म हो जायेगा।



दस दिन का हिसाब कैसे करें

अगर नियते क़ियाम फ़ज्र के बाद की तो

11 दिन और 10 रातें

अगर नियते क़ियाम तुलए फ़ज्र से पहले की तो।

10 दिन 9 रातें

जैसे किसी ने ज़ोहर के वक़्त पीर के दिन क़ियाम का इरादा किया तो अगली जुमेरात के ज़ोहर तक दस दिन होगें।

नोट – क़ियाम मख़सूस शहर या गांव के लिए होगा ना के पूरे मुल्क का।

दस दिन क़ियाम

अगर मुसाफ़िर किसी शहर में जाये और दस दिन कियाम़ की नियत ना हो तो नमाज़ क़स्र होगी।

अगर शहर जाकर बाद में दस दिन के क़ियाम का इरादा करे तो इरादे के वक़्त से दस दिन का हिसाब करे।

जैसे पांच दिन गुज़रने के बाद दस दिन क़ियाम का इरादा करे तो उसी दिन से दिन का हिसाब करेगा पहले 5 दिन का हिसाब नही होगा।

जिस शहर में दस दिन क़ियाम का इरादा हो तो नियत क़ियाम भी उसी शहर की होगी ना कि एक दिन एक शहर में और दूसरे दिन किसी और शहर में गुज़ारे।

जिस शहर में दस दिन क़ियाम का इरादा है, उस शहर से 22 कि.मी. आना 22 कि.मी. जाने का सफ़र ना करें।

दस दिन क़ियाम में मुकल्लफ़ बा नमाज़ होने की शर्त नही है। जैसे हायज़ा किसी शहर में दस दिन क़ियाम का इरादा रखती है तो जिस दिन पाक हो जायेगी उसी दिन से नमाज़ पूरी पढ़ेगी।

मुसाफ़िर के रूकने की जगह के अतराफ़ो जवानिब जाने में कोई हरज़ नहीं है और हुकमें सफ़र जारी नहीं होगा बशर्ते के वहां रात ना गुज़ारे।



अगर मुसाफ़िर दस दिन के क़ियाम का इरादा रखता है और फिर ज़्यादा रूकने का इरादा हो तो दूसरे 10 दिन की नियत की शर्त नही है।

अगर दस दिन क़ियाम की नियत से नमाज़ पूरी पढ़ रहा है और फिर क़ियाम का इरादा बदल जाये तो इरादा बदलने के बाद जब तक रहेगा नमाज़ पूरी पढ़ेगा।

इन मुक़ामात पर हुक्मे सफ़र नही होगा, मुकल्लफ़ पूरी नमाज़ पढ़ेगा रोज़ा भी रखेगा चाहे मसाफ़ते शरई भी तै कर ली हो।



अगर सफ़रे मासियत हो

तर्के वाजिब के लिए	सफ़र गुनाह के इरादे से हो	हराम सफ़र के लिए
जैसे क़र्ज अदा करने पर क़ादिर हो और कर्ज़ अदा ना करने की ग़रज़ से सफ़र करे।	जैसे ज़िना और ना हक़ क़त्ल के इरादे से या चोरी करने के लिए सफ़र करे।	जैसे मुकल्लफ़ नज़र कर ले फलां दिन सफ़र नही करेगा और उस दिन सफ़र कर लो।



सफ़रे मासियत में हर वह सफ़र शामिल है जो आक़ली ऐतबार से सही ना हो जैसे बिला ज़रूरत शिकार करने के लिए सफ़र करे चाहे शिकार जायज़ ही क्यों ना हो।

कसीरूस्सफ़र

जो लोग ज़्यादातर सफ़र में रहते है वह यह लोग हैं

जिसका पेशा सफ़र हो	जो अमादा-ए-सफ़र रहे	अपने मशग़ले तक आना जाना
जैसे ड्राईवर या पायलेट या मल्लाह वग़ैराह	जिसके काम की जगह मोअय्यन ना हो जैसे कम्पनी का इन्जीनियर	जो एक "ाहर में रहता हो और काम कहीं दूसरी जगह करता हो और आता जाता हों।

कसीरूस्सफ़र के मसअले में इख़्तेलाफ़ है। हम इसी पर इक्तेफ़ा करते है।

हद्दे तरख़्ख़ुस

मसाफ़त आख़िरी मकान से शुरू हो जाती है मगर हुक्मे क़स्र शुरू नहीं होता जैसा के वतन वापसी में आख़िरी मकान पर क़स्र बाक़ी नहीं रहता। लिहाज़ा हर जगह के लिए एक हद है जिसको हद्दे तरख़्ख़ुस कहते है और वहीं से हुक्मे क़स्र शुरू होता है और वहीं ख़त्म होता है।

हददे तरख़्ख़ुस वतन के आख़िरी मकानों से इतनी दूर हो जाये के आख़िरी मकान दिखाई ना दें उसी जगह को हद्दे तरख़्ख़ुस कहते है।



मुसाफ़िर हद्दे तरख़्ख़ुस से अहकामें कस्र पर अमल करेगा। इसी तरह वतन वापसी पर हद्दे तरख़्ख़ुस तक अमल करेगा। हद्दे तरख़्ख़ुस से वतन की तरफ़ चलते ही हुक्में सफ़र ख़त्म हो जाएगा।

अगर हद्दे तरख़्ख़ुस से बाज़ शहर मिल जाये तो हद्दे तरख़्ख़ुस पर कोई फ़र्क़ नही पड़ता वह हद्दे तरख़्ख़ुस वैसे ही बाक़ी रहेगी जैसे पहले थी और वही से अहकामे सफ़र जारी होगें।

अगर किसी जगह के मकान दूर-दूर हों या पहाड़ों में ऊंची नींची जगह पर हो तो आख़िरी मकान ही मेआर क़रार दिया जायेगा और घरो का दूर होना एक शहर होने से ख़ारिज नही करता।

अगर मुसाफ़िर यह समझे के हद्दे तरख़्ख़ुस गुज़र चुकी है और नमाज़े क़स्र पढ़ ले फिर मालूम हो के हद्दे तरख़्ख़ुस से नहीं गुज़रा तो दोबारा पढ़े। और अगर हद्दे तरख़्ख़ुस के अन्दर है तो पूरी पढ़ेगा और अगर निकल चुका तो क़स्र पढ़ेगा अगर वक़्त गुज़र जाये तो कज़ा पढ़ेगा।

जिसको नमाज़ क़स्र पढ़नी थीं मगर पूरी पढ़ ली।

या तो हुक्मे शरई का इल्म नही था या मसअला समझने में ग़लती हुई तो उसकी नमाज़ सही है।या भूल गया के वह मुसाफ़िर है या मसअला भूल गया। या इल्म नहीं के क़स्र की मसाफ़त तय कर ली,अगर वक़्त रहते हुए याद आ जाये तो दोबारा नमाज़ पढ़ेगा वरना इसकी कज़ा नहीं है।



नमाज़ पूरी पढ़नी थीं मगर क़स्र पढ़ ली तो क़बूल नहीं है मगर यह कि-

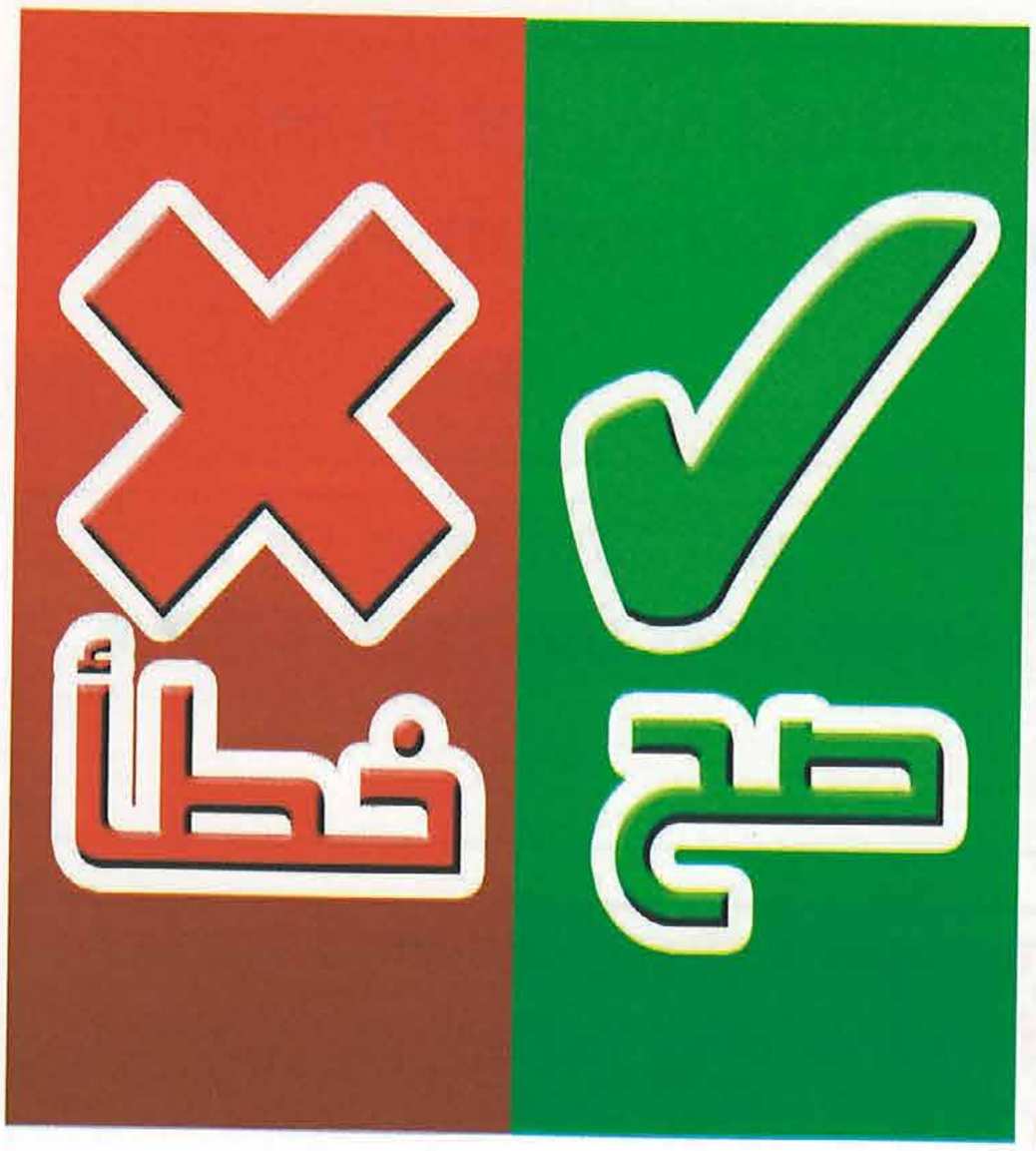

10 दिन क़ियाम करना था मगर ला इल्मी की बिना पर क़स्र पढ़ ली।

वह मवारिद के जिनमें नमाज़ क़स्र नही हैं। जैसे सफ़रे मासियत व तफ़रीह वग़ैराह में ला इल्मी की बिना पर क़स्र पढ़ ली।

सफ़र में कज़ा होने वाली नमाज़ वतन में भी कस्र ही पढ़ी जायेगी।

वतन में कज़ा होने वाली नमाज़ सफ़र में भी पूरी पढ़ी जायेगी।



नमाज़े जमाअत

अहमियते नमाज़े जमाअत

नमाज़े ज़माअत इस्लाम के अहम और अज़ीम मुसतहब्बात में से एक है। नमाज़े जमाअत फुरादा से अफ़जल है। और यह इस्लामी अलामतों में से है। नमाज़ जमाअत से पढ़ना मुसतहब्बे मुअक्कद है।

नबी-ए-अकरम स.अः नमाज़े जमाअत फुरादा से 25 दरजा अफ़ज़ल है।

हज़रत इमाम सादिक़ अ.स.: जब बन्दा नमाज़े जमाअत पढ़कर अल्लाह से दुआ करता है तो अल्लाह को उसकी हाजत रदद करते हुए शर्म आती है।

हज़रत इमाम रिज़ा अ.सः-नमाज़े जमाअत इस लिए क़रार दी गयी है ताकि इख़लास व तौहीद व इस्लाम और अल्लाह की इबादत की शोहरत व इज़हार हो ताके मशरिक़ो मग़रिब पर यह बात नुमायां हो जाये।

फुक़हा ने कहा है कि नमाज़े ज़माअत फुरादा से अफ़जल है। इमाम व मामूम दोनो के लिए नमाज़े ज़माअत का इसतेहबाब इस्लाम और मुसलेमीन के नज़दीक ज़रूरियाते दीन मे से है। यह रिवायत से साबित है। खुदा की तरफ़ से इसका अज्र व सवाब बहुत ज़्यादा है। जमाअत का सवाब कभी-कभी बाज़ वाजिबात से भी ज़्यादा हो जाता है और जमाअत में जितना इज़ाफा होता जायेगा मुसलमानो और नमाज़ियों की शान में इज़ाफ़ा होता जायेगा।

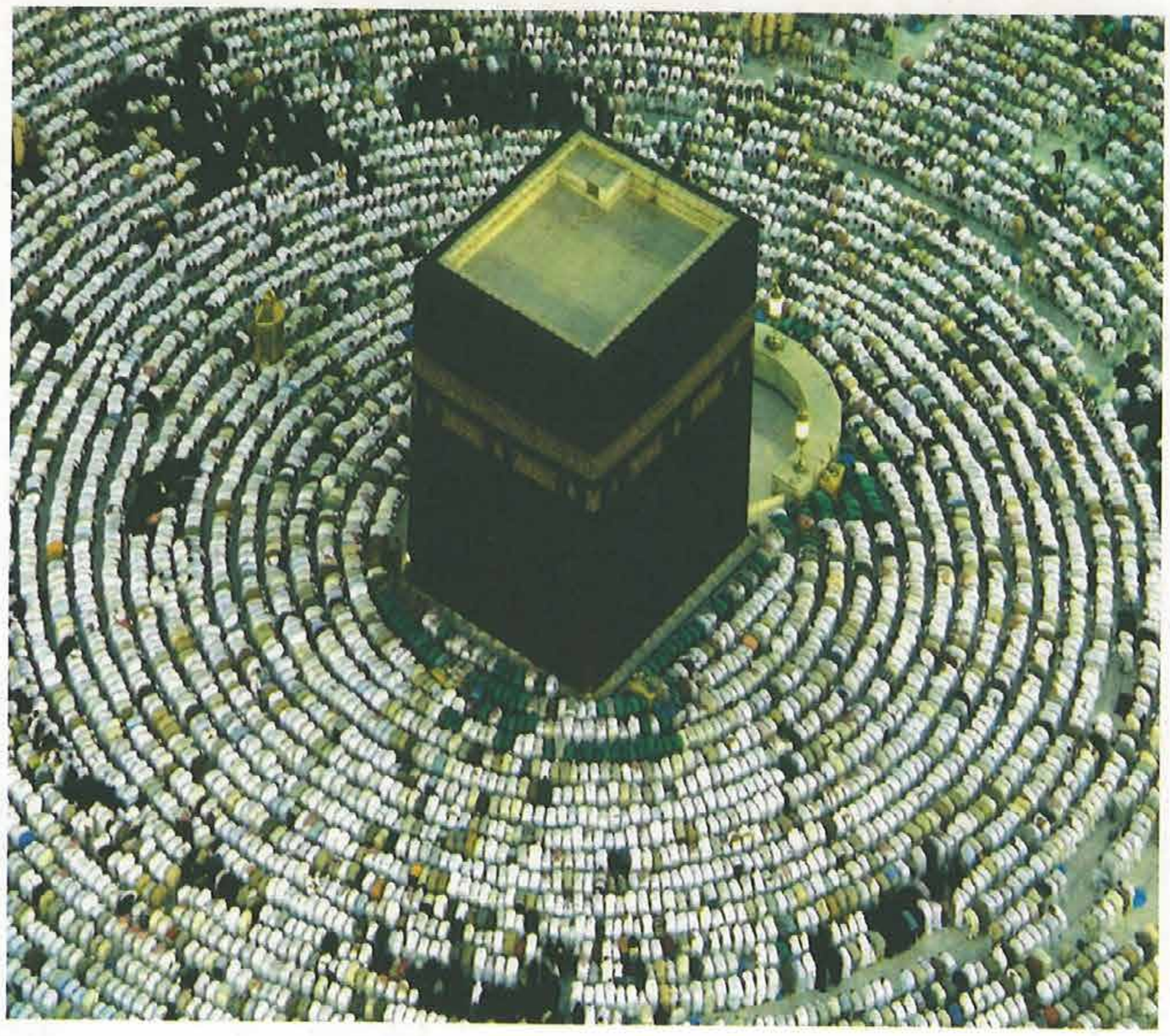

नबी-ए-अकरम स.अः कोई बस्ती ऐसी नहीं है कि उसमें तीन लोग हों और नमाज़े जमाअत न पढ़े तो उसमें शैतान की सुकूनत हो जाती है। तुम पर लाज़िम है कि नमाज़ें जमाअत पढ़ो क्योंकि नमाज़ गुनाहों को खा जाती है।

हर वाजिब नमाज़ में इक़्तेदा जायज़ है चाहे नमाज़े योमिया हो या जुमा या आयत वग़ैराह ।

मुसतहब नमाज़ की जमाअत नही है चाहे नज़्र के सबब से वाजिब ही क्यों न हो गयी हो नमाज़े इस्तिसक़ा और ईदैन के अलावा।

नमाज़े जुमा और ईदैन जो कि हुज़ूरे इमामे मासूम में वाजिब होती है बग़ैर जमाअत के सही नही है। दूसरी वाजिब नमाज़े बग़ैर जमाअत के भी हो सकती हैं।

नमाज़े ज़माअत में इमाम और मामूम की नमाज़ का एक होना जमाअत के सही होने के लिए शर्त नही है। बल्कि नमाज़ की क़िस्म का एक होना काफ़ी है।

अगर किसी ने फ़ुरादा नमाज पढ़ ली हैं तो उसके लियें मुसतहब है के अगर जमाअत कायम हो जाये तो उस नमाज़ को जमाअत से दोबारा पढ़े।

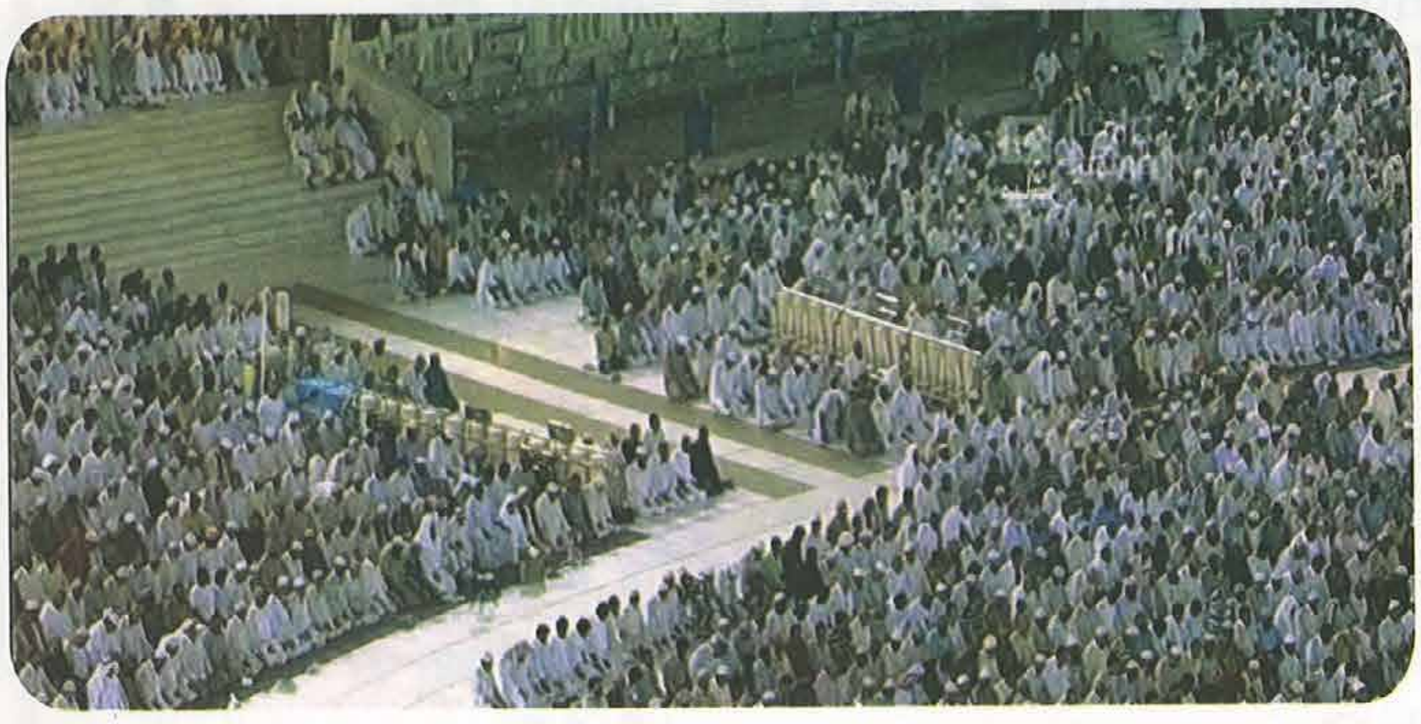

जैसे इमामे जमाअत की नमाज़े इशा है तो मामूम नमाज़े मग़रिब पढ़ सकता है या इमाम अदा पढ़ रहा है तो मामूम कज़ा नमाज़ पढ़ सकता है।

अगर इमाम और मामूम की नमाज़ की क़िस्म अलग हो तो जमाअत नही हो सकती मुख़्तालिफ़ हो जैसें इमाम नमाज़े आयात पढ़ रहा है तो मामूम नमाज़े योमिया नहीं पढ़ सकता है।

इमाम की इक़्तेदा

इक़्तेदा की "kjkbr और कैफ़ियत

मामूम जिस इमामे जमाअत की इक़्तेदा कर रहा है। उसको मुअय्यन करे इसमें इरादा-ए-क़लबी भी काफ़ी है।

इमाम मुनफ़रिद हो ऐसे शख़्स की इक़्तेदा नही की जा सकती जो किसी दूसरे की इक़्तेदा कर रहा है।

जमाअत की नियत इबतेदाए नमाज़ से हो अगर कोई फुरादा नमाज़ पढ़ रहा हो और जमाअत क़ायम हो जाये तो दौराने नमाज़ जमाअत की नियत नही कर सकता।

इमामे जमाअत की किसी भी रकअत में इक़्तेदा की जा सकती है। अगर इमामे जमाअत क़ियाम क़िराअत तसबीहाते अरबा या रूकू में हो तो जमाअत में शरीक हुआ जा सकता है और रूकू के बाद शरीक नही हो सकता। बाद वाली रकअत के क़ियाम में शरीक हो सकता है।



वाजिब है के मामूम तमाम अफ़आले नमाज़ में इमाम की इक़्तेदा करे और किसी चीज़ में इमाम से आगे ना बढ़े।

मामूम के लिये इमामे जमाअत के जुम्लो की इकतेदा करना वाजिब नही अलावा तकबीरतुल अहराम के

इमामे जमाअत की ज़िम्मेदारी सिर्फ हमद व सूरे की है बाकी तमाम अज़कार मामूम खुद पढ़े।

इमाम जमाअत की इकतेदा की बिना पर यह रूकू या सजदा इज़ाफी शुमार नही होगा जबकि नमाजे फुरादा में दोबारा रूकू या सजदे में जाना इजाफी शुमार होगा।

अगर मामूम इमाम के रूकू और सजदे से पहले भूले से सर उठा ले और इमाम रूकू में हो तो उसको चाहिए के रूकू में पलट जाए लेकिन अगर इमाम सर उठा ले तो कोई हरजनही है।

जमाअत में शामिल होना

जमाअत मे शुमूलियत

इमामे जमाअत	चार रकअती नमाज़ में मामूम का "kामिल होना
पहली रकअत के कियाम में या रूकू में	दोनो जगह जमाअत में "kरीक हो सकता है
इमाम दूसरी रकअत के क़ियाम या रूकू में हो।	मामूम दोनो जगह जमाअत में "ारीक हो सकता है मगर तशह्हुद नही पढेगा बल्कि हाथों को ज़मीन पर टेक कर इस तरह बैठेगा गोया उठना चाहता है फिर इमामे जमाअत के साथ खड़े होकर हमद व सूरा पढ़ेगा और सजदो के बाद जमाअत खड़ी हो जायेगी मामूम तशह्हुद पढ़ेगा और खड़े होकर तसबीहाते अरबा पढ़े फिर जब इमाम तशहहुद के लिए बैठे तो मामूम चौथी रकअत के लिए खड़ा हो जाए।
इमाम तीसरी रकअत के क़याम या रूकू में हो	मामूम अगर क़ियाम में शरीक हुआ है तो हमद व सूरा पढ़ना लाज़मी हैं और चौथी रकअत के तशह्हुद तक साथ रहें और सलाम पढ़े बग़ैर खड़ा हो जाये और नमाज़ को पूरा करें।
इमाम चौथी रकअत के क़ियाम या रूकू में हो	अगर मामूम क़ियाम में शरीक हो तो लाज़मी है कि हमद व सूरा पढे वरना रूकू में शरीक हो और जब इमाम तशह्हुद सलाम पढ़े तो हाथ टेक कर ऐसे बैठे के गोया उठना चाहता है।

अगर मामूम यह समझे के इमाम की तीसरी चौथी रकअत के क़ियाम में हमद व सूरा नही पढ़ पायेगा तो सिर्फ हमद पढ़े वरना रूकू का इन्तेज़ार करे और रूकू में शरीक हो जाये।

नमाज़ में सिर्फ रूकू या क़ियाम में शरीक हो सकते है । हां अगर इमाम आख़िरी रकअत का तशह्हुद पढ़ रहा है तो नियत करके तकबीर कहकर तशह्हुद में बैठ जाये जब इमाम सलाम पढ़े तो तकबीरातुल अहराम कहे बिना खडे होकर अपनी पहली रकअत की शुरूआत करे।

शराइते इमामे जमाअत

1. बालिग़ हो
2. आक़िल हो
3. हलाल ज़ादा हो
4. शिया इसना अशरी हो
5. बादिया नशीन अरब ना हो
6. मर्द व औरत का इमाम मर्द हो
7. आदिल हो
8. क़िराअत सही हो
9. खड़े हुए लोगो का इमाम भी खड़े होकर नमाज़ पढ़े।
10. मामूम की नज़रो में इमाम की नमाज़ सही हो।
11. मामूमीन के खड़े होने की जगह से एक बालिशत से ज़्यादा ऊंचा खड़ा न हो।
12. इमाम मामूम से आगे हो।

नमाज़े जमाअत गैर शिया इमाम के पीछे हो सकती है मगर मामूम हमद व सूरा पढ़े।

तयम्मुम से नमाज़ पढने वाले की इमामत वज़ू वाले के लिए और हाथ कटे हुए की इमामत सालिम के लिए सही है।

अगर ज़मीन की बुलन्दी वाज़ेह ना हो जैसे ढलान वाली जगह तो इमाम जहां चाहे खड़े होकर नमाज़ पढ़ा सकता है।

अगर मामूम एक शख़्स हो तो वह इमाम के दाहिनी जानिब इस तरह से खड़ा हो के उसके सजदे की जगह इमाम के घुटनों के बराबर हो लेकिन अगर औरतो की इमाम औरत हो तो वह मामूम औरत के बराबर खड़ी होगी यह अफ़ज़ल है।

1. इमाम सफ़ के सामने बीचो बीच खड़ा हो।
2. सफ़े अव्वल में अहले इल्म व अहले फ़ज़्लो अक़्ल हो।
3. सफ़े मुनज़्ज़म हो और फ़ासला ना हो।
4. सफ़े क़रीब-क़रीब हों और एक इन्सान के क़द से ज़्यादा फ़ासला ना हो।
5. इमाम क़िरअत कर रहा हो तो मामूमीन अल्लाह की तसबीह करते रहे।
6. इमाम बूढ़ों और कमज़ोरों की ख़ातिर नमाज़ को मुख़्तसर करे।
7. इमाम सलाम के बाद जब तक मामूमीन नमाज़ तमाम ना कर ले ना उठे।
8. इमाम अवाज़े क़िरअत व ज़िक्र को मामूमीन तक पहुंचाये मगर आवाज़ हद
9. जब क़द का मतिस्सलाह कहा जाये तो मामूमीन खड़े हो जायें।
10. अगर यह एहसास हो के कोई जमाअत में शरीक होना चाहता है तो रूकू का तुल दिया जायें।



मामूम के लिए सफ में जगह होते हुए पिछली सफ में अकेला खडा होना मकरूह है।

जब क़द क़ामतिस्सलात कह दिया जाये तो नमाज़े नाफ़िला पढ़ना मकरूह है और अगर वह नमाज़ नाफ़िला में हो और यह ख़ौफ हो कि नमाज़ छूट जाएगी तो उसको चाहिए के नाफ़िला को खत्म करे और शरीके जमाअत हो।

अगर वाजिब नमाज़ पढ़ रहा है और जमाअत खड़ी हो जाये तो फ़ौरन नाफ़ेला की नियत करके नमाज़ तमाम कर दे और जमाअत में शरीक हो बशर्ते कि दूसरी रकअत में हो अगर तीसरी रकअत हो तो नाफ़ेला की नियत नही कर सकता।

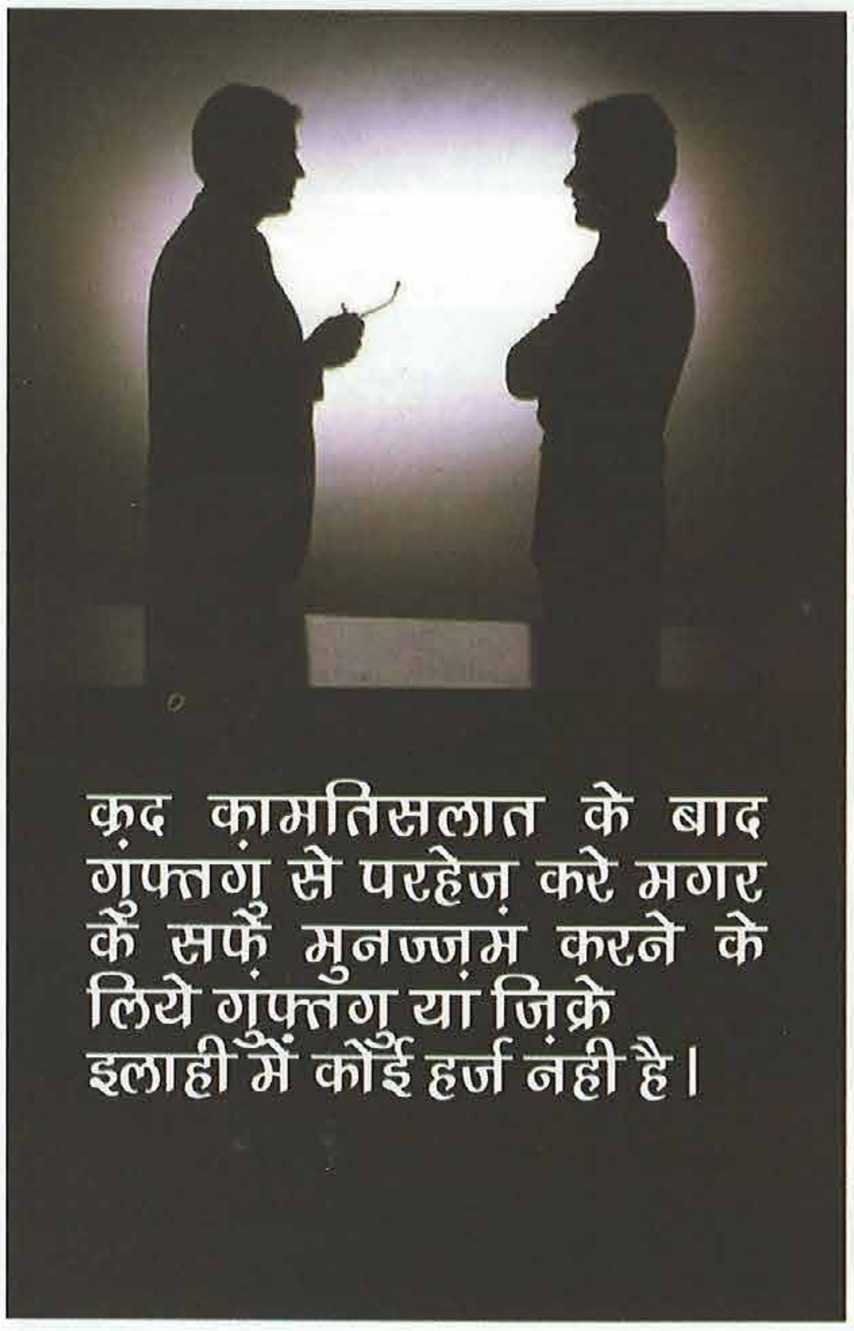

क़द क़ामतिसलात के बाद गुफ्तगु से परहेज़ करे मगर के सफ़े मुनज्ज़म करने के लिये गुफ्तगु या ज़िक्रे इलाही में कोई हर्ज नही है।

किस लिएः लोग यह जानते है के दाहिनी जानिब से सफ़े अव्वल में दूसरी तीसरी सफ़ में ज़्यादा सवाब है फिर भी सफ़े अव्वल में आने से क्यों परहेज़ करते है।

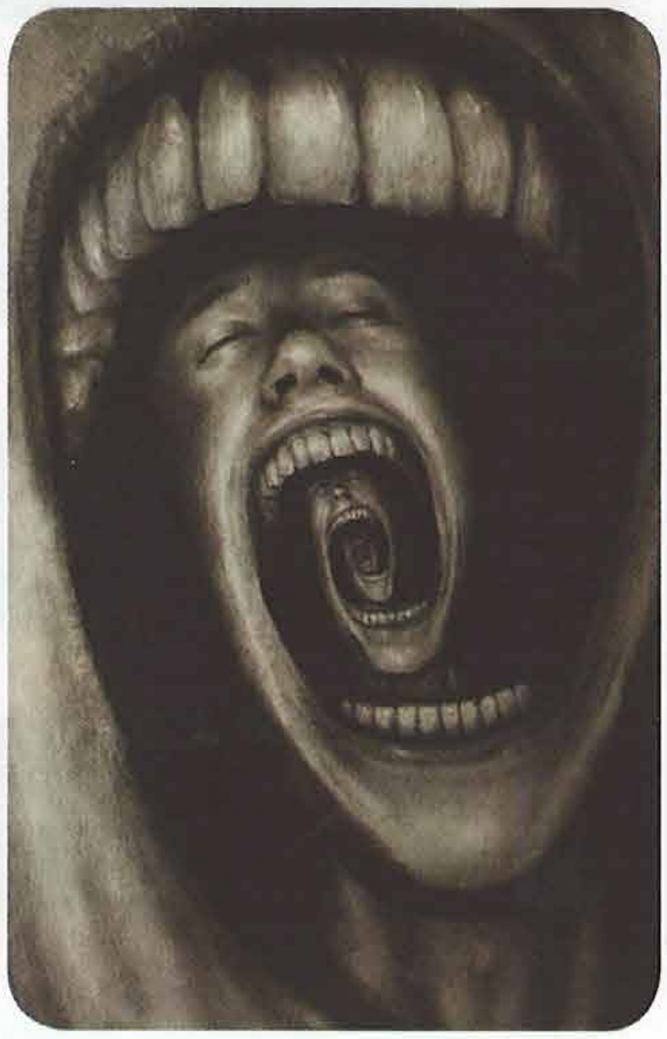

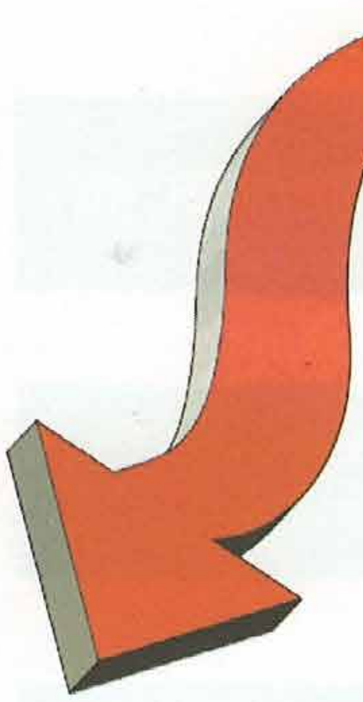

सफ़ो का आड़ा, टेढ़ा, तिरछा होना या एक सफ़ का हद से ज़्यादा लम्बा होना मकरूह है।

मामूम की आवाज़ को इतना बुलन्द करना मकरूह है के इमाम तक पहुंच जाये या दीगर मोमेनीन के लिए परेशानी का सबब बने।

सूरा-ए-तौबाः बेशक मस्जिदो को तो वही आबाद कर सकता है जो खुदा और आखेरत पर ईमान रखता है और नमाज़ पढ़ता है और ज़कात देता है।

मस्जिद में रूहानियतः

जब मोमिन मस्जिद में जाता है तो उसे सूकुने कल्ब हासिल होता है। मस्जिद उसके रब का मेहमानखाना है। अंबिया और औलिया का घर है मोमिनो की मुलाकात की जगह है। मोमिन मस्जिद में नमाज़ तिलावत और दुआ में नफ़्स की पाकीज़गी के साथ होता है। अम्र बिलमारूफ और नही अनिल मुनकर करता है। मस्जिद में मोमिन का दिल उसके रब से वाबस्ता होता है। अबद और माबूद में बेहतरीन राबिता होता है। मोमिन बग़ैर किसी झिझक के अपने माबूद से अपनी हाज़तो को तलब करता है और अताए इलाही को बयान करता है और रूह की बिमारियों और अनानियत गुरूर, तकब्बुर, ग़ीबत का इलाज चाहता है।

हुसूले मारेफतः

मस्जिद में तालीम से दूरी मुमकिन नही है। पैगम्बरे अकरम स.अ.ने मस्जिद को मरकज़े इल्म बनाया और अपनी रिसालत को पहुंचाया ।पाक है वह ज़ात जिसने रसूल को मबऊस किया जो लोगो के सामने अपने रब की आयते पढता है और उनके नफ़्स का तज़किया करता है और उनको इल्म व हिक़मत की तालीम देता है। नबी-ए-अकरम ने फ़रमाया कोई मस्जिद में ना जाये मगर तालीम देने के इरादे से जो मस्जिद में तालीम देता है उसको हज व उमरे का सवाब हासिल होगा। पैगम्बरे अकरम से किसी ने मालूम किया कि कौन सा इल्म अफ़ज़ल है?इस सवाल को तीन बार दोहराया तो आपने फ़रमाया कि जो लोग मस्जिद में बैठकर कुरआन का दर्स हासिल करते हैं। वह अल्लाह के मेहमान होते है और जब तक वह वहाँ रहते है मलाइका उन पर अपने परो का साया करते है।

इजतेमाई जलसा:

नबी के ज़माने में मस्जिद बनाने का एक मकसद यह था कि लोग जमा हो और खुतबों व अहादीस के ज़रिये इजतेमाई मसाइल को बयान किया जाये। लोग मुशकिलात को लेकर नबी-ए-अकरम के पास आते थे। नबी-ए-अकरम उनका हल तलाश करते थे और सही व गलत का फ़ैंसला करते थे। औरतें भी आकर अपने मसाइल हल कराती थी और मस्जिद में बाज़ मोमेनिन की ज़रूरतो को भी पूरा करते थे।

एलान-ए-आम की जगह:

मस्जिद पैगाम पहुचानें का बेहतरीन ज़रिया थीं। क्योंकि उस ज़माने में वसाइल कम थे मगर हमारे ज़माने में वसाइल महदूद नही है लिहाजा़ आज के ज़माने में मस्जिद को इजतेमाई पैग़ाम रसानी की ज़रूरत नही है। आज फ़िक्री,रूही, इजतेमाई और सियासी पैग़ामा रसानी के ज़राये हर घर में मौजूद है।

मस्जिद में फैसले:

ज़मान-ए-नबी में मस्जिद को दारूल कज़ा का दर्जा हासिल था वहां पर मोमनीन के फ़ैसले किये जाते थे मगर वह मुनासेबात जो क़मरी महीनो से मुत्तालिक है। खुसूसन रमज़ानुल मुबारक और ईद के अमाल मस्जिद में जमा होकर किये जाते थे वहां पर अहले तक़्वा और अहले हक़ जमा होते थे। हमारे ज़माने में यह चीज़ें हुकूमत के हाथ में है और इसके लिए हुकूमतों ने अलग जगह बना ली है।

हज़रत नबी अकरम स.अ.: मेरी उम्मत के लिए बेहतरीन अतिया यह है के वह मस्जिद में जाये।

हज़रत नबी-ए-अकरम स.अः मस्जिद मुत्तक़ीन का घर है और जिसका घर मस्जिद हो अल्लाह उसके सुकून और पुले सिरात के परवाने का ज़ामिन है।

हज़रत नबी-ए-अकरम स. अः ने जिब्राईल से पूछा के अल्लाह के नज़दीक बेहतरीन वबदतरीन कौन सी जगह है तो जवाब दिया बेहतरीन जगह मस्जिद और बदतरीन जगह बाज़ार है।

हज़रत नबी-ए-अकरम स.अः इबादत के इन्तेज़ार में मस्जिद में बैठना इबादत है। जब तक कोई बात न करे। किसी ने पूछा बात करना क्या है ? तो आपने कहा वह ग़ीबत है।

हज़रत नबी-ए-अकरम स.अः तोरात में लिखा है कि ज़मीन पर मस्जिद मेरा घर है। खुशख़बरी है उसके लिए जो अल्लाह के घर को साफ़ रखे और मेरे घर में मेरी ज़ियारत करे। आगाह हो जाओ कि जो तारीकी में मस्जिद की तरफ़ आते है रोज़े क़ियामत उनके आगे आगे नूर होगा।



ज़नाबे फ़ातेमा ज़हरा स.अ. : जब अल्लाह के रसूल मस्जिद में दाख़िल होते थे तो यह कहते थे कि बिस्मिल्लाहे अल्लाह हुमा सल्लेआला मौहम्मदिंव वा आले मौहम्मद वग़फिरली जूनूबी वा अफ़ताहली अबवाबा रहमतेका और जब ख़ारिज होते थे तो कहते थे बिस्मिल्लाहे अल्लाह हुमा सल्लेआला मौहम्मदिंव वा आले मौहम्मद वग़फिरली जूनूबी वा अफताहली अबवाबा फ़ज़लेका।

हज़रत अली अ.स.: मस्जिद का हक़ यह है कि जब दाखिल हो तो दो रकत नमाज़ पढ़ो और दो रकतो का हक़ यह है के उनमें सूरा-ए-हम्द पढ़ो और कुरान का हक़ यह है के उस पर अमल किया जाये।

मस्जिद अल्लाह से मनसूब है और उसका घर है ज़रूरी है कि उसके आदाब की रिआयत की जाये और उसकी शान के मुताबिक एहतेराम किया जाये। क्योंकि उसके लिए इमामो की हदीसे मौजूद है।

ज़ीनत

हज़रत इमामे सादिक़ अ.सः-इमामे सज्जाद अ.सः बेहतरीन जुब्बा और आमामा पहने थे, सामने से गुलाम ने सवाल किया कि मौला इस सर्दी की रात में इस लिबास में कहॉ ?आपने फ़रमाया कि अपने जद की मस्जिद में हुरूलएन की ख़ास्तग़ारी के लिये जा रहा हूं।

निजा़फ़त

मौहम्मद बिन मुस्लिम ने इमाम बाक़िर अ.सः- से लहसुन खाने के बारे में पूछा तो आपने फ़रमाया कि रसूल अल्लाह ने उसकी बू की वजह से मना किया है और आपने फ़रमाया कि लहसुन खाकर मस्जिद में न जाओ।

दुआ और ज़िक्र

हज़रते इमामे बाक़िर अ.सः जब मस्जिद में जाकर बैठने का इरादा हो तो तहारत से जाओ रूबाक़िबला होकर अल्लाह से दुआ करो हाजत तलब करो और हम्दो सना के बाद दूरूद पढ़ो।

तहय्य-ए-मस्जिद

जनाबे अबूज़रे गिफ़ारीः-में रसूल अल्लाह के पास गया वह उस वक़्त मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे। आपने फ़रमाया ऐ अबूजर मस्जिद के लिए तहय्य-ए-मस्जिद है मैने कहा तहय्य-ए-मस्जिद क्या है? आपने फ़रमाया दो रकत नमाज़ है। मैने पूछा कि यह कौन सी नमाज़ है तो आपने कहा ये बेहतरीन मौजू है कम और ज़्यादा हासिल करने में इख़्तियार है।

दुरूस्त का ख़्याल

हज़रत अली अ.सः- आख़िरी ज़माने में लोग मस्जिद में बैठकर दुनिया और हुब्बे दुनिया की बातें करेगें लिहाज़ा तुम उनके साथ मत बैठना अल्लाह को उनकी ज़रूरत नही है।

मस्जिद की सफ़ाई का ख़याल रखें इसके बारे में बहुत सी हदीसे वारिद हुई है।



कज़ा नमाज़

नमाज़े कज़ा

नमाज़े कज़ा, वह है जो वक़्त गुज़रने के बाद पढ़ी जाये।

कज़ाये नफ़्सी

मनदरजा ज़ैल हालात में कज़ा की अदायगी वाजिब है।

1. **नमाज़ पढ़नी भूल जाये जहलन या सहवन**
   - मुस्लिम,मरतद,बालिग़,आक़िल, हैज़ व निफ़ास से पाक होने की सूरत में अदा करना वाजिब है।
2. **वक़्त पर अदा करने से आजिज़ हो।**
   - सोता रह जाये या बेहोशी व ग़शी की वजह से नमाज़ कज़ा हो जाये। लेकिन बेहोशी वग़ैराह में पूरे वक़्त बेहोशी का आलम रहे तो कज़ा नही है।
3. **नमाज़ बातिल हो गयी हो।**
   - वक़्त गुज़र जाने के बाद याद आये कि नमाज़ बातिल हो गयी थीं

क्या आप जानते है?

कज़ा नमाज़ में तरतीब वाजिब नही है। अगर किसी की पूरे दिन की नमाज़ कज़ा है तो मग़रिब व इशा की ज़ोहर अस्र से पहले पढ़ ले या ज़ोहर अस्र सुबह से पहले पढ़ ले

नमाज़े कज़ा को उसके वक़्त में रात की दिन में दिन की कज़ा रात में सफ़र की कज़ा वतन में वतन की कज़ा सफ़र में अदा करना जायज़।

अगर ज़ोहर व अस्र या मग़रिब व इशा कज़ा हो गयी तो ज़ोहर से पहले अस्र मग़रिब से पहले इशा की नमाज़ अदा करना सही नही है।

कज़ा को फ़ौरन अदा करना वाजिब नही है मगर यह है के सुस्ती या भूलने का सबब बन जाये तो फ़ौरन अदा करना वाजिब है।

कज़ाये मय्यित

कज़ाये मय्यित

हर शख्स पर वाजिब है के अपनी कज़ा नमाज़ो को अदा करे और अगर कुदरत न रखता हो तो उसके वारिस बादे वफ़ात उसकी नमाज़े अदा कराये।

1 बाप की कज़ा बड़े बेटे पर वाजिब है चाहे खुद अदा करे या उजरत पर अदा करवाये।

2 अगर मय्यित ने वसियत की है तो वसी को उसका नाफ़िज़ करना ज़रूरी है और माले मय्यित से उसकी नमाज़ो को उजरत पर अदा करवाये या मुफ़्त में अदा कर दें।

अगर बाप ने किसी उज्र की बिना पर लम्बे वक़्त तक नमाज़े कज़ा की हो लेकिन लम्बी बीमारी की वजह से अदा न कर सका हो तो बड़े बेटे पर वाजिब नही है।

माँ की कज़ा बड़े बेटे पर वाजिब नही है अगर चे परवरिश की वजह से अदा करना मुस्तहब है



मय्यित के लिये नमाज़े हजारा

अजीर में यह चीज़ें मोतबर है।
1. अक़्ल व ईमान , बुलूग़
2. अहकामे नमाज़ जानता हो।
3. माज़ूर ना हो जैसे खड़े हाने से माज़ूर हो।

हज़रते इमामे सादिक़ अ.सः तुम मर्दो को किसने मना किया है कि अपने वालेदेन को उनकी हयात और मौत के बाद बरी उज़्ज़िम्माहा जाओ उनकी नमाज़े पढ़ों,रोजे रखे। हज करो, जो भी उनके लिए करेगा उनका सवाब वालेदेन का होगा उतना ही अदा करने वाले का होगा।

अगर मय्यित ने वसीयत नही की तब बड़े बेटे पर अदा करना वाजिब है।

अगर मय्यित की नमाज़ कज़ा होने का शक हो तो कज़ा वाजिब नही है।

नमाज़े कज़ा होने का यक़ीन हो मगर तदाद में शक हो तो कम पर बिना रखे।

कज़ा होने का यक़ीन हो मगर यह शक है कि वालिद ने अदा की है या नही तो उसकी कज़ा वाजिब है।

इन हालात में बड़े बेटे पर नमाज़े कज़ाये वालेदेन साकित है।

बाप अपने 1/3 माल से कज़ा नमाज़ों की अदायगी की वसीयत कर दे।

अगर बड़ा बेटा अपने माल से किसी को कज़ा अदा करने के लिए नायब बना दे।

बड़ा बेटा अपने बाप की कज़ा अदा करने से पहले मर जाये और इस बेटे के माल को उसके बाप की कज़ा के लिए निकालना वाजिब नही है और यह वुजूब उसके बाद जो बड़ा बेटा है उसकी तरफ भी मुन्तकिल नही होता।

चश्म पोशी

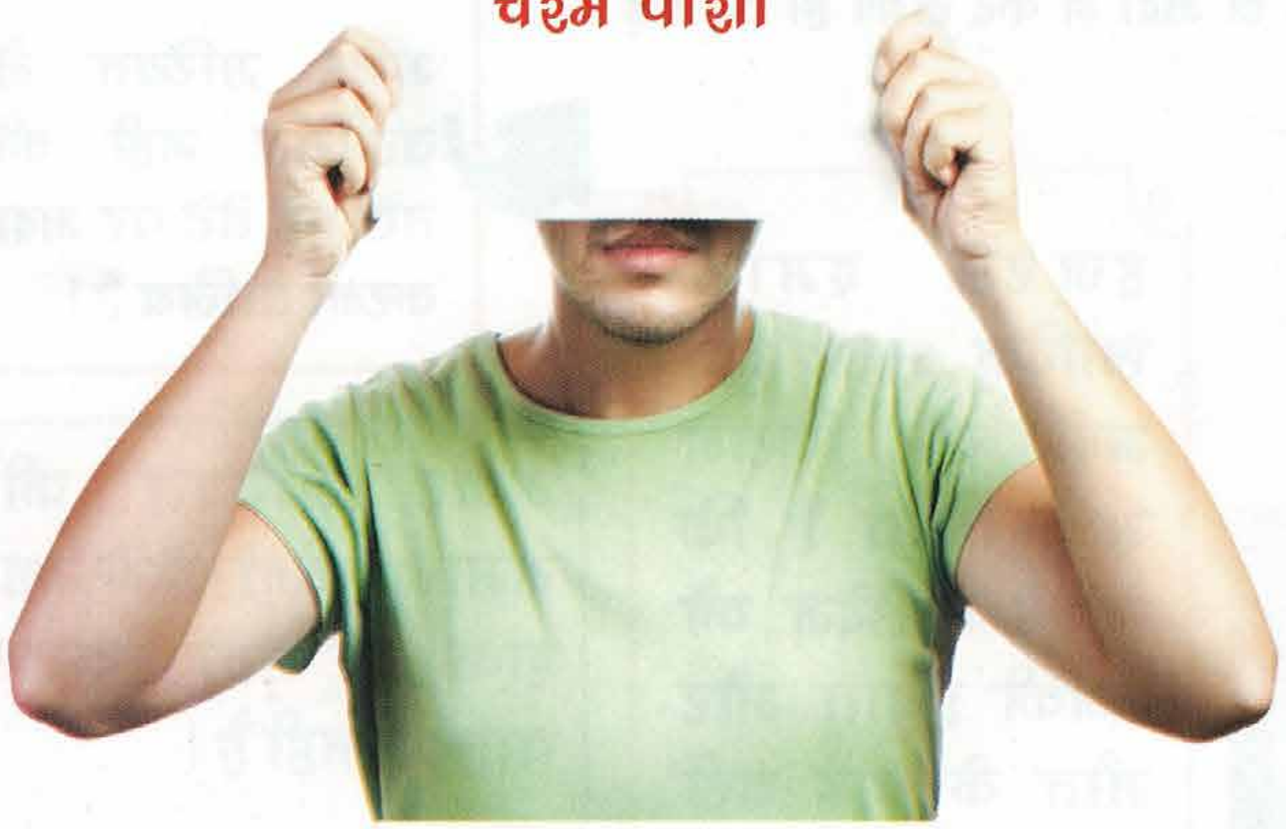

अगर बड़ा बेटा बाप की कज़ा अदा कराने से इंकार करे तो हाकिमे शरा की इजा़जत से जो मिरास में उसका हिस्सा है उसको कजा़ की अदायगी के लिए निकाला जायेगा।

अम्र बिन यज़ीदः मैनें इमामे सादिक़ अ.स. से कहा के क्या मय्यित की तरफ़ से नमाज़ पढ़ी जायेगी? आपने फ़रमाया हां यहां तक कि अगर कोई परेशानी होगी तो खुदा उसको दूर करेगा

अब्दुल्लाह बिन जुन्दबः मैनें इमामे काज़िम अ.स. से ख़त लिखकर पूछा के एक आदमी अपने आमाल ,नेकी ,नमाज़, और खैर तीनो को अन्जाम देता है तो क्या वह तीनो अमाल उसी के लिए है या 2/3 उसके वालेदेन के लिए अंजाम दे सकता है या उनमें से एक मर गया तो उसके लिए अन्जाम दे सकता है ? आपने जवाब लिखा के मय्यित के लिए तीनो अमाल जायज़ है लेकिन ज़िन्दा के लिए सिर्फ़ और नेकी सिलाए रहम कर सकता है।

इसमें कोई शक नही की दीने इस्लाम में नमाज़ के मौज़ू पर बहुत सी किताबें लिखी गई हैं। चाहे वो अहकामें शरिया से मुताल्लिक़ हों चाहे वुज़ू और तयम्मुम वा ताहरतो इस्तिक़बाले क़िबला पर या उन आदाब पर जिनसे नमाज़ को ज़ीनत दी जाती है। लेकिन ये किताब उन तमाम किताबों से जुदा है। इसका तरीक़ा-ए-बयान अल्फ़ाज़ और अंदाज़ सब कुछ अलग है। इसलिए इस किताब को तफ़सीर व प्रोग्रामिंग के साथ तैयार किया गया है ताकि छोटों और बड़ों को इसका फ़ायदा हो। खुसूसन इस किताब में वुज़ू गुस्ल, तयम्मुम और नमाज़ के अहकाम को बयान किया गया है। इस किताब से हमारा मक़सद उन तमाम अहकाम को बयान करना नही है जो मराज-ए-कराम की तौज़ीहुल मसाइल में मौजूद हैं। बल्कि उन मुख़्तसर और अहम मसाइल को बयान करना है जिन पर अक्सर उलमा मुत्तफ़िक़ हैं और उन मसाइल से परहेज़ किया गया है जिनमें उलमा में इख़्तेलाफ़ पाया जाता है। लेकिन सिर्फ फ़िक़्ही अहकाम पर ही इक्तेफ़ा नही किया गया है बल्कि इबादत के फ़लसफ़े और आदाब को भी इशारों में बयान किया गया है। इनसे मुताल्लिक़ अहादीस और रिवायात को भी बयान किया गया है।

Design by : ZAINABYA GROUP

Printed at : **IMPRESSIONS** #9837777450

